मातृभूमि

मातृभूमि

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5361-810-0
दाम : 300 रूपया

पहिल संस्करण : 2019

लेखक एवम् प्रकाशक : रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
Phone: 01202343563 M-9968502767

मातृभूमि

A Maithili Novel
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण

समस्त मैथिलीभाषीकेँ सप्रेम समर्पित!

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

आभार

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि उपन्यासक पाण्डुलीपिकेँ रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ उपन्यासमे गुणात्मक सुधार भेल। हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ)क अमूल्य सुझाव समय-समय पर भेटैत रहल अछि । संगहि हमर भातिज श्री राज किशोर मिश्र(आइ.इ.एस), चीफ जेनेरल मैनेजर(सीजेएम),बीएसएनएल हमर पुस्तकसभकेँ मनोयोग पूर्वक पढ़ि बहुत रास रचनात्मक सुझाव दैत रहलाह । हमर अनन्य मित्र श्री ओम प्रकाश सपरा,श्री मदन मोहन सिन्हा एवम् श्री संजीव सिन्हा हमरा लिखबाक हेतु निरंतर उत्साहित करैत रहलाह । एहि हेतु ओ सभ प्रशंसाक पात्र छथि। हिनकासभकेँ हार्दिक धन्यवाद।

आशा अछि जे पाठक लोकनिकेँ ई पुस्तक पसिंद पड़तनि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

04/06/2019

मातृभूमि

मिथिलाक प्रसिद्ध गाम लखनपुर । ओहिगामक प्रमुख विशेषतामे सँ एकटा छल गामक बीचोबीच खुनल गेल दैता पोखरि। ओ पोखरि कहिआ खुनल गेल से केओ नहि देखलक । ओहि पोखरिक महार अखनहु ओहिना साबुत छल जेना कहिओ रहल होएतैक ।

गामक पश्चिममे आमक गाछी अछि जे कम सँ कम दसबीघामे पसरल होएत ।ओहिमे कतेक तरहक आम छल से कहब मोसकिल। रामभोग,कृष्णभोग,जर्दालु,बम्बइ,मालदह,सिपिआ तँ भरल छल। सभसँ ई विशेषता रहैक जे गछपक्कू आम जकरे भेटि जाइक सएह ओकर मालिक ।ओहुना केओ रोक-टोक करएबला नहि रहैक ।

गामक पूब दिस छल चओर ।दूपहरिआमे रौदक धाहीसँ चन-चन करैत चओरक वायुमण्डल जेना यात्रीसभकेँ दण्डित करबाक हेतु ठाढ़ रहैत छल ।कैकटा जन-बनिहार हकासल-पिआसल जखन हर जोति कए वापस अबैत छल तँ चओरकेँ टपैत हनुमान चलीसा पढ़ैत रहैत छल ।कहल जाइक जे कए गोटेकेँ भूत गछाड़ि चुकल छल ।कैकगोटे चओर टपैत-टपैत बेहोस भए जाइत छल ।कारण जे किछु रहल होइक मुदा नाम लगैत छल चओरमे साबिक जमाना सँ रहैत जिनकेँ ।कहाँ दनि ओही गामक छल ओ जिन ।लखनपुरक लोकसभ कएबेर ओहि जिनक निराकरण करबाक प्रयास केलक,ओझा-गुनीकेँ बजओलक मुदा कोनो फएदा नहि भेलैक ।कखनो काल कए कनबाक अबाज सेहो लोक

सुनए । भगवान जानथि सत्य की छल? मुदा एहि बातक चर्चा गाममे बहुत पुरान समयसँ होइत रहैत छल ।

गामक दक्षिण दिस बागमतीक धार छल । एक समय छलैक जे बागमती लखनपुरक बीचोबीच बहैत छलीह । अस्तु,धारक दुनू कात लोकसभ बसल छल । धारक उत्तर बसल टोल उतरबारि टोल आ धारक दक्षिण दिस बसल टोलकेँ दछिनबारि टोल कहल जाइत छल । एकहि गामक लोक एक-दोसरसँ भेंट करबाक हेतु नाओक मदति लैत छलाह । धारक कटाओसँ गामक खेत कखन धार बनि जाएत तकर कोनो ठेकान नहि । बागमतीक इच्छा जखन जेहन होइत गेलनि, गामक भूगोल तहिना बदलैत रहल।

पहिने नाओसँ बागमतीकेँ टपू,फेर कतेक कोसधरि पैरे चलू आ तखन उजरी बस पकड़ि सकैत छी तँ पकडू। जँ ओ बस छुटि गेल तँ पैरे-पैर दस कोस जाउ नहि तँ वापस गाम घुरि जाउ आ फेर दोसर दिन तहिना प्रयास करू । उजरी बसक कोनो समय नहि रहैक। एकर वाहन चालकक मरजी पर छलैक ओकर चलब । कैकबेर ओकर निन्न नहि टुटल वा मोन खराब भए गेल तँ ओ बस कखन खुजत आ लखनपुरक लगीचक बसस्टाप कखन पहुँचत से केओ नहि कहि सकैत छल ।

पचास साल पहिलुका आ आजुक लखनपुरमे बहुत अंतर भए गेल अछि । गामसँ वागमती कनी फटकी सहटि गेल छथि । गामसँ दरभंगा जएबाक हेतु पहिने बहुत मोसकिल होइत छल । मुदा आब परिस्थिति बदलि गेल । वागमतीपर पुल बनि गेलाक बाद लखनपुरधरि बस सरदर आबि जाइत अछि। बसक संख्यामे सेहो

बृद्धि भेलैक । कहक मतलब जे लखनपुरसँ सहर आएब-जाएब आब खेल-धूप भए गेल ।

गामक उत्तर दिस छल पाठशाला । ई पाठशाला इलाकाभरिक विद्यार्थीसभमे प्रसिद्ध छल । ओहिमे इलाकाक विद्यार्थीसभ निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करैत छलाह। कोनो चीजक चिंता विद्यार्थीकेँ नहि रहनि। सभटा व्यवस्था पाठशाला दिससँ होइत छल । कालक्रमे एकर स्थिति गड़बड़ा गेलैक । जयन्तक पिताक देहान्तक बाद बहुत दिनधरि केओ एकर सुधि लेबए नहि आएल । पाठशाला ढहि-ढनमना गेल ।

ओना तँ सभगामक किछु-ने-किछु विशेषता होइते अछि, मुदा लखनपुरक नाम चमकाबएमे ओहिगामक विद्याप्रेमी जयन्तक बहुत योगदान छलनि । करवनो केओ हुनका बैसल नहि देखितनि। किछु पढ़ि रहल छी वा लिखि रहल छी । नहि किछु तँ हाथमे रुद्राक्ष लेने किछु जपे कए रहल छी। पचासक लग-पास बएस हेतनि। लोकसभ कहैत अछि जे हुनकासन विद्वान ओहि परोपट्टामे नहि अछि । जयन्त शास्त्री आ लखनपुर आब एक भए गेल अछि। लग-पासक ककरो जँ लखनपुर गामक नाम लेब तँ धर दए कहि देत-

"ओ! जयन्त शास्त्रीक गाम । हुनका के नहि जनैत अछि? ओ तँ मनुक्खक देहमे भगवानक अवतार छथि। ओ तँ अपन कुलक उद्धार कए देलाह ।"

केओ कतहु जाइत हो,कतहुसँ अबैत हो । मुदा जँ लखनपुर लगसँ गेल तँ जयन्तसँ भेंट अवश्य करत । सभ इएह कहैत जे धन भाग्य लखनपुरकेँ जे जयन्तसन व्यक्ति ओतए जन्म

लेलथि । केओ कहैत-“ओ तँ अवतारी पुरुख छथि । हुनकर की गप्प करैत छी?”

कहबी छैक जे जखन केओ प्रसिद्ध भए जाइत अछि तँ ओकर जयगान केनिहारक कमी नहि रहैत अछि । के-के ने ओकरा अपन भए जाइत छैक । मुदा ओहिठाम धरि पहुँचबाक यात्रा केना की छलैक से जानबाक प्रयासो लोक नहि करैत अछि । साइते ककरो बूझल हेतैक जे जयन्त नेनामे केना लोहछि कए एकदिन धारमे कुदि गेल रहथि । आ तकर बाद की-केना भेल? केना हुनकर जान बाँचल आ केना ओ एतेक महान विद्वान बनि फेर गाम वापस आबि समस्त सुविधा संपन्न अत्याधुनिक विश्वविद्यालयक स्थापना कए सकलाह?ई खिस्सा बहुत मार्मिक अछि । अहाँ कही तँ तकर चर्च कएल जाए । असलमे जयन्त अपना-आपमे एकटा इतिहास थिकाह। कहि नहि जीवनक कतेक दुखद प्रसंगकेँ भगवान शिव जकाँ घोटि नीलकंठ भए गेल छथि । तखन ने आइ-काल्हि समुद्रक गंभीरता लेने लखनपुर गामकेँ ज्योतिर्मय केने छथि।

२

नेनामे जयन्त आ शीला संगे-संगे एकहि किलासमे पढ़थि। शीलाक पिता बैद मधुकान्त आ जयन्तक पिता हरेकृष्णमे बहुत घनिष्टता रहनि । जयन्तक एक डेग सदिखन बैदजीक आङनेमे रहैत छल। जयन्तकेँ माए नहि रहथिन आ पिता निरंतर पाठशाला चलबएमे लागल रहथि । हुनका समय नहि रहनि जे ओ जयन्तक हाल-चाल लैत रहथि । एहि तरहें जयन्त शीलाक

परिवारक अंग जकाँ भए गेल रहथि । मुदा समय पलटी लैत रहैत छैक । ई ओकर स्वभाव छैक । से भेलैक।

एकदिन पाठशालामे विद्यार्थी लोकनिकेँ पढ़बैत काल हरेकृष्णकेँ छातीमे जोरसँ दर्द उठलनि । जाबे केओ किछु बुझितए ओ ओतहि धराम दए खसलाह आ सभदिनक हेतु एहि दुनिआसँ बिदा भए गेलाह। गाममे सभ हाकरोस करए लागल । सभसँ मोसकिल तँ पाठशालाके विद्यार्थी लोकनिकेँ भेलनि । हुनकर सभक शिक्षा अपूर्ण रहि गेलनि । क्रमशः ओ सभ आन-आन ठाम चलि गेलाह। पाठशाला ठप्प भए गेल । जयन्तक हालचाल लेनिहार केओ नहि रहि गेल । बैदजी ओहिठाम जएबामे ओकरा कोनादनि लागए लगलैक । जाबे पिता रहथिन आ पाठशाला चलैत रहलैक ताबे हुनका किछु खराब नहि लगलनि । मुदा आब कतहु जाएब कोनादनि लागनि । कौलिक मर्यादाक रक्षा करब मोसकिल भए गेलनि।

भादवक महिना छलैक । बागमतीमे पानि उमड़ि रहल छल। जयन्त ओकर कातमे उदास ठाढ़ रहथि । कहि नहि हुनका मोनमे की फुरेलनि? ओ एहन बिकराल समयमे धारमे कुदबाक उपक्रम केलनि । संयोगसँ नागबाबा ओहिठाम तर्पण कए रहल छलाह । ओ जयन्तक ई अवस्था देखि चिचिआ उठलाह-

"बालक रुकू । जीवन अमूल्य थिक । एकर रक्षा करू ।"

" हुनकर अबाज सुनि जयन्त ठमकि गेलाह । नागबाबा हुनका भरिपाँज धेलनि ।

"अहाँ एना किएक कए रहल छी?"

" हमरा के अछि? ककरा बले जीब? जीबिए कए करब की?"

"अहाँ तँ बहुत संस्कारी बुझाइत छी, फेर एहन बातसभ अहाँक मोनमे किएक आबि रहल अछि? एहि संसारकेँ चलओनिहार परमपिता परमेश्वर छथि । हुनकापर विश्वास राखू । अखन अहाँक बएसे की भेल अछि?"

"हम आब एहि गाममे नहि रहब ।"

"से किएक? अहाँकेँ की कष्ट भेल?"

"हमर पिताक देहांत किछु दिन पूर्व भए गेलनि । आब एहिठाम हम ककराबले रहू?"

" अहाँ हमरा संगे जानकीधाम चलू । हम अहाँक शिक्षाक व्यवस्था करब । तकरबाद अहाँक जे इच्छा होएत से करब ।"

नागबाबाक बात मानिकए जयन्त हुनका संगे जानकीधाम बिदा भए गेलाह ।

कैक पुस्त पहिने लखनपुरसँ बहुतरास मैथिलसभ जानकीधाम आ लग-पासक गामसभमे बसि गेल रहथि। ओ सभ निकललाह तँ जीविकोपार्जन हेतु, मुदा जतए जे गेलाह ओहीठाम बसि गेलाह । तथापि गाम-घरसँ हुनका लोकनिक संपर्क बनले रहल । बिआह अखनहुँ ओसभ अपने समाजमे करैथ छथि । एहने छल कालीकान्तक परिवार । जीविकोपार्जन हेतु ओ सभ सपरिवार गामसँ निकललाह । भाग्य संग देलकनि । थोड़बे दिनमे हुनकर स्थिति बदलि गेल । कालक्रममे ओसभ जानकीधाममे बहुत समृद्ध भए गेलाह । कालीकान्त आ हुनकर परिवारक बासा सौंदर्य,सुविधा आ वैभवमे ओ एकटा राजमहले छल । ओकरा त्रिकुट भवनक नामसँ जानल जाइत छल । जेहने बनाबट,तेहने सजाबट । अपना ओहिठामक लोक केओ हुनका लगसँ खाली नहि जाइत छल । जे संभव होनि से अवश्य करथि । परोपकारी

स्वभावक कारण प्रवासी लोकनिमे हुनकर बहुत प्रतिष्ठा छल। कोनो अवसर होइत,कालीकान्त जरूर बजाओल जाथि। हुनकर पत्नीक नाम गौरी छलनि । ओ लखनपुरसँ सटले महिपुर गामक छलीह ।

ओमहर बैदजीक ओहिठाम जयन्तक बाट तकैत-तकैत सभ परेसान भए गेलथि । भोरसँ दुपहरिआ भए गेल । जयन्त नहि अएलाह तँ शीलाकेँ बहुत चिंता भेलनि ।

"जयन्त बागमतीमे कुदि गेल ।"- शीला अपन पिताकेँ कहलखिन।

से कोना बुझैत छही?"-बैदजी पुछलखिन।

"ओ बेर-बेर सएह कहैत रहैत छल।'

"की?"

"जे हम धारमे कुदि जाएब । आब नहि जीब । हमरा के देखत?"

“तँ तूँ हमरा पहिने किएक नहि कहलैँ?"

बैदजी किछुगोटेकेँ संग कए बागमतीक घाट पहुँचलाह । रस्तामे केओ -केओ कहलकनि -

"भोरे जयन्त ओमहरे जाइत छलाह । "

"ओ बहुत उदास लागि रहल छलाह।"

"हुनका फेर घुरैत नहि देखलिअनि ।”

तरह-तरहक बात लोकसभ कए रहल छल । सभकेँ बात सुनि बैदजीक सक गहींर भए गेलनि ।

गामक किछु लोकसभ संयोगसँ ताबे ओतए आबि गेल रहथि । ओसभ अपनाभरि बहुत प्रयास केलनि। मुदा जयन्तक कतहु पता नहि चललनि । ओहीमे सँ केओ मलाहसभकेँ बजओने

अएलाह । ओ सभ महाजाल फेकलथि आ घण्टों प्रयास करैत रहलाह । मुदा किछु पता नहि चललनि । एकबेर तँ बड़काटा माछ जालमे फँसि गेल । मलाहसभकेँ भेलनि जे जयन्ते छथि । बहुत सावधानीसँ जालकेँ बाहर खिचलनि । मदा जखन जाल बाहर आएल तँ बेस पैघ माछ छल । सौंसे गाम हाकरोस करैत रहि गेल। मुदा जयन्तक किछु पता नहि चलल । शीला कनैत-कनैत बेहाल छलि । मुदा केओ की करैत? लोकसभकेँ ई नहि बुझेलैक जे आखिर जयन्त एहन बिकराल समयमे वागमतीमे किएक कुदि गेलाह?

गौंवासभ जयन्तक बँचबाक कोनो आशा नहि देखि निराश रहथि । नहि बुझानि जे आब की करथि? कोनो रस्ता नहि देखि ओ सभ गाममे नवाह शुरु कए देलाह । लोकसभ कीर्तन करएमे व्यस्त भए गेल । समय आगू बढ़ल । एक दिन ,दू दिन,तीन दिन भेल । कतहुँ सँ किछु समाचार नहि आएल । एहि प्रकारें नवाहक आठम दिन भए गेल । काल्हि भेने नवाह समाप्त भए जाएत ।

प्रात भेने विसर्जनक बिधि चलि रहल छल । ताबतेमे हकासल-पिआसल एकटा ग्रामीण ओहिठाम पहुँचलाह। ओ जानकीधामसँ लौटि रहल छलाह।

"जयन्त भेटि गेलाह।"

सभ अकचका गेल ।

"फेरसँ कहिऔक की बात छैक?"

'जयन्त भेटि गेलाह ।"

“कतए भेटलखिन, केना भेटलखिन से किछु कहिए नहि रहल छी, खाली भेटि गेलाह, भेटि गेलाह बकने जा रहल छी ।"-एकटा गौंवा तमसाक बजलाह ।

"एना नहि तमसाइ । हुनका अपन बात कहए देल जाए । अपने कहताह जे केना की भेलैक ।"-दोसर गौंवा बजलाह ।

"अहाँ हुनका कतए देखलिअनि?"

"जानकीधाममे नागबाबाक संगे जाइत देखलिअनि ।"

"ओहिठाम ओ कोना पहुँचलाह?"

"संयोगसँ नागबाबा बागमतीमे तर्पण करैत काल हुनका देखलखिन । "

"तखन?"

"तखन की? हुनका नागबाबा अपना संगे लेने चलि गेलखिन ।"

" एकर माने जयन्त जीवित छथि?"

"ओ पूर्ण स्वस्थ छथि ।"

"तँ हुनका गाम किएक नहि लेने अएलहुँ?"

"ओ गाम अएबाक हेतु किन्नहु तैयार नहि भेलथि ।"

ई बात सुनि गौंवासभ बहुत उदास भए गेलाह । जतबे सुख हुनकर बँचि गेलासँ भेलनि ताहिसँ बेसी दुख एहि बातसँ भेलनि जे ओ गाम नहि अएलाह?"

ई संसार चमत्कारसँ भरल अछि । कहबी छैक जे 'राखनहारा साइयाँ,मारि सकहि नहि कोई ' सएह बात एहिठाम भेल छल । जयन्त बँचि जेताह आ हुनका जीबित हेबाक समाचार भेटत से गाममे ककरो आशा नहि रहैक । नवाह जरूर लोक ठनने छल मुदा तकर परिणतिमे एहन सुखद समाचारक आशा नहि रहैक। कम सँ कम ओ जीवित तँ छथि । आइ ने काल्हि गामक सुधि हेबे करतनि । गाम लौटबे करताह । गौंवासभ बाजए ।

नागबाबा जयन्तकेँ लेने जानकीधाम अपन आश्रम पहुँचि गेलाह । हुनकर आश्रमक प्राकृतिक शोभा अवर्णनीय छल । तरह-तरहल फल-फूलसँ सुसज्जित बाग चारूकात अनुपम शोभा केने छल । ओहीठाम एकदिस जड़ी-बूटीक किआरी छल । औषधीय गुणसँ परिपूर्ण ओहि जड़ी-बूटीक चर्च इलाकाभरिमे होइत छल । केओ-केओ तँ ईहो कहैत छल जे लक्ष्मणकेँ मेघनाथक शक्तिबाणसँ बचओनिहार लक्ष्मण बूटी सेहो ओहिठाम छल । तेँ ने कतए-कतएसँ लोक नागबाबाक शरणमे अबैत छल ।

आश्रममे हुनकर उचित सेवा भेल जाहिसँ ओ शीघ्रे ठीक भए गेलाह। गप्प-सप्पक क्रममे नागबाबा जयन्तकेँ पुछलखिन-

"अहाँ एना धारमे किएक कुदैत छलहुँ?"

"पिताक देहावसानक बाद हमरा अनकापर आश्रित होएब नीक नहि लागए। सोचलहुँ जे एहि जीवनसँ मरण नीक ।"

" अहाँ नान्हिटा बालक छी । अहाँक रक्षा करब समाजक कर्तव्य थिक । अहाँसन प्रतिभासंपन्न लोकक जीवन एना व्यर्थ नहि जएबाक चाही । तेँ नियति अहाँकेँ बँचा लेलथि । आब की विचार अछि?"

"जे अपने आज्ञा दी । अपने हमर जीवन रक्षा केलहुँ अछि तेँ अहाँक हमर जीवनपर पूर्ण अधिकार अछि ।"

"एहनो कतहु भेलैक अछि? केओ ककरो जीवन देनिहार नहि भए सकैत अछि । ई तँ विधिक विधान छल जे अहाँक निमित्ते हमरा ठाढ़ कएल गेल । हमरा हिसाबसँ अहाँकेँ अपन प्रतिभाक अनुकूल शिक्षा ग्रहण करबाक चाही । तकरबादक रस्ता स्वयं प्रशस्त भए जाएत ।“

"जे आज्ञा ।"

प्रात भेने नागबाबा जयन्तकेँ लेने शारदाकुंज पहुँचलाह।

३

जानकीधाममे कालीकान्तक पूर्वज लोकनि शारदाकुँजक स्थापना केलनि । एहिठाम समस्त शास्त्रक शिक्षा निःशुल्क देबाक प्रबंध हुनका लोकनि द्वारा कएल गेल । कालान्तरमे एहि आश्रमक यश चारूकात पसरि गेल । दूर-दूरसँ विद्यार्थीसभ ओहिठाम शिक्षा लैत छलाह । कालीकान्तक सक्रिय योगदानसँ शारदाकुँजक कीर्तिमे बहुत बृद्धि भेल । शारदाकुंजमे मिथिलाक अनेको विद्वान लोकनि शिक्षक छलाह । हुनका लोकनिक सुख-सुविधाक समस्त व्यवस्था कालीकान्ते करैत छलाह ।

जयन्तक प्रतिभाकेँ देखैत नागबाबा हुनका लेने सोझे शारदाकुंज पहुँचलाह। नागबाबाक संगे जयन्तकेँ आश्रममे पैर रखितहि आचार्यजी सभकाज छोड़ि हुनका लोकनिक स्वागतमे लागि गेलाह। आश्रमवासी विद्यार्थी लोकनि हुनकर स्तुति करए लगलाह। नागबाबा आचार्यजी एवम् आश्रमक विद्यार्थीसभक व्यवहारसँ आह्लादित रहथि । जयन्तक परिचय करबैत नागबाबा कहैत छथि-

“ई बालक लखनपुर गामक छथि । हिनका हम शिक्षा ग्रहण करबाक उद्देश्यसँ एतए लए अनलहुँ । आशा अछि अपने हिनका अपन छत्रछायामे राखि उचित मार्गदर्शन करबनि ।"

"हिनकर कोनो परिचयक काज नहि बुझाइत अछि । प्रतिभा हिनकर ललाटसँ स्वतः स्फुटित भए रहल अछि । हिनका

विद्यादानमे सहयोगी होएब हमर परम सौभाग्य होएत ।" - आचार्यजी बजलाह ।

" आचार्यवर! अपनेसँ हमरा एहने व्यवहारक उम्मीद छल। हम आब निश्चिंत भेलहुँ । हम आश्वस्त छी जे जयन्त सही जगह पहुँचि गेलाह । आब हमरा जएबाक आज्ञा देल जाए ।"

"अपनेकेँ के आज्ञा दए सकैत अछि? ईहो आश्रम अहींक थिक । एहिठाम किछु दिन रहि विद्यार्थीसभक मार्गदर्शन कएल जाए "

"से तँ सत्ये । अखन हमरा किछु जरूरी काजसँ जएबाक अछि। आब जखन जयन्त एतए छथि तँ आएब-जाएब तँ लगले रहत । "

जयन्तकेँ आश्रममे राखि सभ तरहें संतुष्ट भए नागबाबा ओहिठाम सँ बिदा भेलाह । आचार्यजी विद्यार्थीसभक संगे नागबाबाकेँ बहुत फटकी धरि अरिआति देलथि । हाथमे कमंडल लेने, जटाधारी ,मृगचर्म पहिरने आ गलामे महादेव जकाँ नाग लटकओने ओ अपन आश्रम दिस बिदा भेलाह ।

४

जहिना सोना आगिमे तपओलासँ आओर चमकए लगैत अछि तहिना सुसंगति पाबि शारदाकुंजमे जयन्तक प्रतिभा चरमोत्कर्षपर पहुँचि गेल ।

आश्रमवासी विद्यार्थी लोकनि आचार्यजीक संग वसंतपंचमीक अवसरपर सरस्वती आराधनामे तल्लीन छलाह।

जानकीधामक समस्त विद्वान आ लग-पासक प्रतिष्ठित लोकसभ एहि कार्यक्रममे आमंत्रित छलाह । कालीकान्त स्वयं सभ काज छोड़ि ओहि कार्यक्रममे भाग लए रहल छलाह । कार्यक्रमक प्रारंभ सरस्वती वंदनासँ भेल ।

" वर दे! वीणा वादिनी वर दे................”

" विद्यार्थी लोकनि एहि गीतक सस्वर पाठ कए रहल छलाह । स्वरक मधुरता आ विद्यार्थी लोकनिक समर्पणभावसँ के नहि प्रभावित छल? अनकर तँ गप्पे छोड़ू । कालीकान्त स्वयं प्रार्थना समाप्त होइतहि आसन छोड़ि विद्यार्थीसभ लग पहुँचि कहैत छथि-

" ई बालक के छथि? हिनकर स्वरमे तँ जेना सरस्वतीक साक्षात बास अछि । हम हिनकर दर्शन कए धन्य छी । धन्य छथि हिनकर आचार्य आ एहि आश्रमक समस्त विद्यार्थी लोकनि ।"

अपन शिष्यलोकनिक एहि तरहें प्रशंसा सुनि आचार्यजी गद-गद भए गेलाह ।

" ई सभ अपनके छत्र-छायामे भए रहल अछि । बिना अपनेक अनुकंपाकेँ एहिठाम किछु संभव नहि छल ।"

" ई अपनेक महानता अछि आचार्यवर! से कहि कालीकान्त अपन गरदनिमेसँ हीराक हार निकालि जयन्तकेँ पहिरेबाक प्रयास केलनि ।

"क्षमा कएल जाए । ई आभूषण अपनेकेँ शोभा दैत अछि । हमरा एकर कोन प्रयोजन?"-से कहि जयन्त हीराक हार कालीकान्तकेँ वापस कए देलाह ।

"हिनका क्षमाकएल जाए । ई बालक कौलिक संस्कारसँ बान्हल छथि । ई ककरो सँ किछु नहि लेबाक संकल्प केने छथि ।'

कालीकान्त छगुन्तामे पड़ि गेलाह ।

"कोनो बात नहि । हिनकर भावनाक हम सम्मान करैत छी । जखन कखनो हमरासँ किछु सहायताक प्रयोजन होइ तँ अवश्य सूचित करब । "-से कहि कालीकान्त प्रस्थान कए गेलाह ।

५

जयन्तक प्रतिभाक चर्चा त्रिकुट भवनमे होइते रहैत छल। कालीकान्त स्वयं हुनकासँ बहुत प्रभावित रहथि। शास्त्रक ज्ञानक संगे हुनका संगीतमे सेहो महारत छल । हुनकर स्वरसँ तँ लगैत छल जेना भगवती स्वयं प्रकट भए रहल छथि । सरस्वती पूजा दिन कालीकान्तक पाँजरमे बैसल हुनकर कन्या चंद्रिका तँ हुनकर गीत सुनि मंत्रमुग्ध भए गेल छलीह। तकरबाद संगीत सिखबाक बहाने चंद्रिका नित्य जयन्त लग पहुँचि जाइत छलीह । कालीकान्तकेँ सेहो एहिमे कोनो आपत्ति नहि रहनि अपितु हुनका सहमतिएसँ ओ शारदाकुंज आबि जयन्तसँ संगीत विद्या सिखैत छलीह । ई क्रम बहुत दिन धरि चलैत रहल । नित्यप्रतिक संपर्कसँ जयन्तक प्रति चंद्रिकाक आकर्षण बढ़ैत गेलनि । आचार्यजीकेँ तँ एहि बातक जानकारी रहनि । मुदा हुनका जयन्तपर पूर्ण विश्वास रहनि। ओ जनैत छलाह जे जयन्त सिद्धांतक पक्का छथि आ मर्यादाक प्रतिकूल किछु नहि करताह । कालांतरमे जयन्तकेँ चंद्रिका त्रिकुट भवन सेहो बजाबए लगलीह । जयन्तकेँ ई पसिन्न नहि पड़नि, मुदा हठात मनो नहि कए पाबथि।

भादवक मास छल । नदीमे बाढ़ि आबि गेल छल । लग-पास जेम्हरे देखू पानिए-पानि देखाइत छल । एहनो समयमे जयन्त

ओतए नित्य साँझमे पहुँचि जाइत छलाह । एकसरमे मनन-चिंतन करैत छलाह । ओहू दिन जयन्त चंद्रिकाकेँ संगीत शिक्षा दए धारक कात बिदा रहथि। चंद्रिकाकेँ त्रिकुट भवन लए जएबाक हेतु कार तैयार छल । मुदा ओ जयन्तक संगे जएबाक हेतु अड़ि गेलीह।

"समय साल ठीक नहि छैक । नदीमे बाढ़ि से आएल अछि। एहन परिस्थितिमे अहाँक एमहर-ओमहर गेनाइ ठीक नहि होएत ।"-जयन्त कहलखिन ।

"मुदा हमरा तँ अहाँसँ फराक हेबाक मोने नहि करैत अछि।"

"ई कोनो नीक लक्षण नहि अछि । कहीं अहाँ परेसानीमे ने पड़ि जाइ । जँ अहाँक पिताक कान धरि ई बातसभ गेलनि तँ गेल घर छी । अहाँक तँ किछु नहि बिगड़त । मुदा हमर तँ सत्यानाशे भए जाएत?"

"अहाँ सदरिकाल एहने गप्प किएक करैत रहैत छी? हुनका सभबात बूझल छनि । हुनका ईहो बूझल छनि जे हम अहाँसँ प्रेम करैत छी ।"

"ई तँ बड़ अनर्थ भेल । अहाँकेँ एहि बात सभक प्रचार नहि करक छल । एहिसँ अहाँकेँ सामाजिक अप्रतिष्ठा भए सकैत अछि।"

" हमसभ किछु गलत करितहुँ तखन ने? अहाँक उज्ज्वल चरित्रपर जानकीधामक कण-कणकेँ विश्वास छैक ।"

"मुदा तकर माने की? लोकलाजो कोनो चीज होइत अछि। फेर हम अहाँकेँ कतेक दिनधरि संग दए सकैत छी?

"एना नहि बाजू जयन्त । अहाँकेँ साइत नहि पता अछि जे अहाँ कतेक संपन्न छी । हमर पिता तँ एक इसारापर अहाँकेँ हेतु

सभकिछु करबाक हेतु प्रस्तुत छथि, ओ निरंतर अहाँक बारेमे पुछैत रहैत छथि। आग्रह करैत रहैत छथि जे अहाँक सुख-सुविधाक ध्यान राखल जाए ।"

"मुदा अहाँकेँ ई नहि बिसरबाक चाही जे हम एहिठाम विद्याध्ययन हेतु आएल छी । हमर शोधप्रवंधक काज अंतिम चरणमे अछि आ एहन स्थितिमे हमरा अपन ध्यानकेँ केन्द्रित राखब बहुत जरूरी अछि ।"

"अहाँ हमरा ठकबाक प्रयास नहि करू। हम नीकसँ जनैत छी जे केओ अहाँक ध्यानकेँ बिचलित नहि कए सकैत अछि । अहाँ स्वयं सेहो नहि ।"

"एतेक प्रशंसा सुनि कए हम तँ आओर चिंतामे पड़ि गेल छी ।"

दुनूगोटे गप्प मे तल्लीन छलाह । ओमहर सूर्यास्त करवन भेल सेहो हुनकासभकेँ पता नहि चललनि । एही बीचमे चंद्रिकाक पैर ससरि कए साँपक बिहरि पर पड़ि गेलनि। ओ चिचिआ उठलीह-

"लगैत अछि किछु काटि लेलक । "

दहिना पैरक औंठा लगसँ खून बलबला कए निकलि रहल छल । जाबे-जाबे जयन्त किछु बुझितथि ताबे चंद्रिका ठामहि खसि पड़लीह । जयन्त चिचिआ उठलाह -

"दौड़ै जाउ । जुलुम भए गेल । चंद्रिकाकेँ साँप काटि लेलकनि ।

लग-पासमे कतहु केओ नहि छल । वर्षासे भए रहल छल। रहि-रहि कए मेघ आपसमे टकराइत भयानक गर्जना करैत छल ।

बिजलौंकाक प्रकाशमे फटकीमे नागबाबा देखेलखिन । हुनका देखितहि जयन्त जोर-जोरसँ चिकरए लगलाह-

" जुलुम भए गेल । चंद्रिकाकेँ साँप काटि लेलकनि । ।'

जयन्तक चिकरब सुनि नागबाबा सावधान भेलाह ।

"ई तँ जयन्तक अबाज बुझा रहल अछि । मुदा एहन बिकराल समयमे ओ एतए की कए रहल छथि?"-से सभ सोचैत नागबाबा ओतए पहुँचलाह । ताबे कालीकान्तक दूटा आदमी सेहो चंद्रिकाकेँ तकैत ओहिठाम पहुँचल । नागबाबा चंद्रिका केँ देखितहि बजैत छथि-

"एकर बाँचब मोसकिल अछि । लगैत अछि नाग डसि लेलकनि अछि ।"

"किछु तँ करिऔक नागबाबा ।"

"हिनका नाग पर्वत स्थित हमर कुटीमे लेने चलू। ओतहि किछु भए सकैत अछि ।"

नागबाबाक बात सुनि जयन्त माथ पकड़ि कए बैसि गेलाह।

"बेसी सोच-बिचार करबाक समय नहि अछि । चंद्रिका लग बहुत कम समय छनि । विलंब केलासँ हिनका बँचब मोसकिल भए जाएत । तेँ हुनका शीघ्रे नाग पर्वत पर लए चलू । हमहूँ ओतहि चलैत छी ।"-नागबाबा बजलाह ।

६

नाग पर्वतपर चंद्रिका जाइत-जाइत अधमरु भए गेल रहथि। हुनकर साँस जोर-जोरसँ चलि रहल छलनि । मुँहसँ लार-

पोटा खसि रहल छलनि । सभके भेलैक जे आब ई नहि बँचतीह। ताबे नागबाबा सेहो ओतए पहुँचि गेलाह।

"हम कतए आबि गेलहुँ?"-आँखि खोलितहि चंद्रिका बजलीह । हुनकर चारूकात लोकक करमान लागि गेल छल । सौंसे जानकीधामसँ लोगसभ जुटि गेल रहए । सभक मोनमे एतबे जिज्ञासा रहैक-"चंद्रिकाक की हाल छनि? कालीकान्त अपन पत्नी गौरीक संगे महादेव! महादेव! करैत रहथि ।

मुदा संयोग कहू जे नागबाबा सही समयपर भेटि गेलखिन। ओ तुरंत जड़ी-बूटी देलखिन । किछु झाड़फूक सेहो केलखिन । नागबाबाक उपचार सही रहल । चंद्रिकाकेँ होस आबि गेलनि । कनीके कालक बाद चंद्रिका आँखि खोललीह ।

चंद्रिकाकेँ होसमे देखि कालीकान्त आ गौरीक प्रसन्नताक अंत नहि छल । ओ चंद्रिकाकेँ वापस अपन घर लए जएबाक हेतु आगू बढ़लाह ।

"ठहरू । हिनकर संकट अखन खतम नहि भेल अछि । -नागबाबा बजलाह ।

से सुनि कालीकान्त ओ गौरी दुनू गोटे ठमकि गेलाह ,फेर साहस कए पुछैत छथि-

"आब की समस्या आबि गेल?"

"आबि नहि गेल, अएले अछि । चंद्रिकाक देह दिस किएक नहि देखैत छिअनि?"-नागबाबा बजलाह।

" ई की भए गेल? केहन उज्जर धप-धप एकर वर्ण छल । एकर देह तँ कारी सिआह भए गेल अछि ।" -कालीकान्त बजैत छथि । गौरीकेँ तँ बकारे नहि फुटनि ।

"बेसक हिनकर प्राण बँचि गेलनि, मुदा जहर बहुत भयानक छल । तकरे प्रभावसँ हिनकर शरीरक रंग कारी भए गेल अछि ।"

"ई ठीक भए सकैत अछि कि नहि? -कालीकान्त बजैत छथि ।

" हमसभ तँ प्रयासे करब आगू महादेवपर निर्भर करैत अछि ।"

"अपने सही निदान बताउ । हमसभ एहि हेतु अपनेक बहुत आभारी रहब । चंद्रिकाक जहिना जान बँचि गेल तहिना हिनकर रूपक रक्षा कएल जाए ।"

“जहर सौंसे देह पसरि गेल छल । जँ कनिको देरी होइत तँ हिनकर प्राण नहि बँचैत ।"

"किछु उपाय करिऔक जाहिसँ चंद्रिका अपन मौलिक स्वरुपकेँ प्राप्त करथि ।"

"हम अवश्य प्रयास करब ।”

" हिनकर देहक रंग ठीक हेबाक आधा-आधी संभावना अछि । "

जाहिसँ चंद्रिकाक स्वास्थ ठीक भए जानि से कएल जाए"-कालीकान्त बजलाह ।

“चंद्रिकाक इलाजमे किछु समय लागत । बढ़िआँ होएत जे ओ हमर आश्रमेमे दू-तीन दिन रहि जाथि।”

"कोनो हरजा नहि । अहाँ तँ हुनकर पितातुल्य छिअनि । हुनकर कल्याणक चिंता हमरासँ बेसी अपने कए सकैत छी ।"-कालीकान्त बजलाह ।

चंद्रिकाक स्थिति देखि जयन्त बहुत दुखी रहथि । हुनका चिंतित देखि आचार्यजी कहलखिन-

"जयन्त अहाँ बहुत चिंतित लागि रहल छी ।"

ओ की बजितथि? चंद्रिकाक प्रति हुनकर मोह कष्टक कारण छल । आचार्यजी तँ ज्ञानी छलाह । हुनकर मोनक बात बुझलखिन ।

" अहाँ विद्वान छी । भावी प्रबल होइत अछि । एकरा के टारि सकैत अछि । इलाज चलिए रहल छनि। समयक संगे सभकिछु अपने ठीक भए जेतैक । अस्तु, हमरा लोकनिकेँ सही समयक प्रतीक्षा करबाक चाही । "-आचार्य बजलाह ।

आचार्यक बात मानि जयन्त हुनका संगे शारदाकुंज लौटि गेलाह । संगे-संगे आश्रमक समस्त विद्यार्थी सेहो लौटि गेलाह। नागबाबाक परामर्श मानि कालीकान्त सेहो गौरीक संगे त्रिकुट भवन लौटि गेलाह । ओ सभ चंद्रिकाकेँ इलाजकेँ प्रधानता देलथि। असलमे हुनकर रंग ततेक कारी भए गेल छल जे ककरो चिंता भए जेतैक,फेर ओ सभ तँ ओकर माता-पिता रहथिन । फेर नागबाबापर हुनका सभकेँ पूर्ण विश्वास छलनि । नागबाबाकेँ इलाकामे के नहि जनैत छल? अपना क्षेत्रमे ओ बहुत यशस्वी छलाह ।

चंद्रिकाक संगे भेल एहि दुर्घटनाक बाद जयन्त बहुत परेसान रहैत छलाह । हुनका मोनमे कतहु-ने-कतहु रहनि जे हुनके चलते चंद्रिकाक ई हाल भेलनि । ने ओ हिनका लग अबितथि,ने हुनका साँप कटितनि । दिन-राति ओही विषयसभपर सोचैत रहैत छलाह ।

"अहाँ बहुत परेसान लागि रहल छी ।"-आचार्यजी कहलखिन ।

"हमरा तँ किछु फुराइते नहि अछि । लाख प्रयास करैत छी मोन रहि-रहि कए ओतहि पहुँचि जाइत अछि ।"

"ई नीक लक्षण नहि अछि, जयन्त! अहाँकेँ विद्याध्ययनपर ध्यान देबाक चाही । शेष वस्तु गौण थिक।"

जयन्त किछु नहि बाजि सकलाह । जखन दू-तीन दिन एहिना छटपट करैत बितल तँ जयन्तकेँ नहि रहल गेलनि । ओ चुपचाप नाग पर्वतपर पहुँचि गेलाह । संयोगसँ थोड़बे कालक बाद कालीकान्त गौरीक संगे सेहो ओतए अएलथि । ओहिठाम जयन्त परेसान एमहर-ओमहर टहलि रहल छलाह ।

“अहाँ बहुत परेसान बुझा रहल छी?"-कालीकान्त पुछैत छथि।

ओ किछु नहि बाजि सकलाह । चंद्रिकाक स्वास्थक चिंतासँ जयन्तक स्थिति खराब भेल जा रहल छल। गौरीक दुखक तँ अंते नहि छल । कालीकान्त तैओ धैर्य राखबे उचित बुझलनि । हुनका नागबाबापर विश्वास बनल रहनि। ओ मोने-मोन हनुमानजीकेँ गोहराबए लगलाह । नागबाबाक प्रयाससँ चंद्रिका पूर्ण ठीक भए गेल रहथि । हुनका पूर्व अवस्थामे देखि कालीकान्त बहुत प्रसन्न भेलथि। मुदा गौरी अखनो जेना मानसिक अवसादमे होथि ।

"आब कथीक चिंतामे पड़ल छी ?"-कालीकान्त बजलाह।

"चिंताक तँ बाते अछि । आखिर चंद्रिकाकेँ ई समस्यासभ किएक भेलनि? कहीं ई सभ किछु षड़यंत्र तँ नहि अछि?"

"अहाँक माथा तँ सदिखन उलटे सोचैत रहैत अछि । एकटा दुर्घटना छलैक जकर अंत भए गेल । आब एहिपर बेसी माथापच्चीक कोनो औचित्य नहि अछि ।"

कालीकान्त कहैत छथि-

" हमरा लोकनि अहाँक बहुत ऋणी छी । कहि नहि एहि महान उपकारक बदला हमसभ कोना सधा सकब? "

" एहिमे उपकारक कोन बात भेलैक । हम तँ नित्य एहन काज करिते रहैत छी । ई तँ संयोग भेल जे हमरा अपने लोकनिक सेवाक अवसर सेहो भेटल । चंद्रिका पूर्ण स्वस्थ भए गेलीह । हिनका लए कए आब कोनो चिंताक बात नहि अछि ।"-नागबाबा बजलाह । कालीकान्त आ गौरी नागबाबाकेँ बहुत धन्यवाद देलनि। चंद्रिका आब पहिनेसँ बेसी सुंदर लगैत छलीह । नागबाबाकेँ प्रणाम कए ओ अपन माता-पिताक संगे त्रिकुट भवन लौटि गेलीह। जयन्त असगरे शारदाकुंज वापस चलि गेलथि।

७

नागबाबा स्वभावसँ परोपकारी व्यक्ति रहथि । हुनका जड़ी-बूटीक नीक ज्ञान छलनि । इलाकाभरिक लोक संकटक समयमे हुनकर शरणमे पहुँचैत छल । ओ अपन जड़ी-बूटीक ज्ञानसँ कतेको लोकक जान बचओने छलाह । बदलामे नागबाबा किछु नहि लैत छलाह । हुनका कोनो चीजक लोभ नहि रहनि ने कथुक आवश्यकता छलनि । हुनकर एहि परोपकारी वृत्तिसँ दुष्ट लोकसभ अकारण परेसान रहैत छल। किछुगोटे दिन-राति एही प्रयासमे रहैत

छल जे कहुना हुनकर बदनामी होअए। मुदा जखन सालोंक चेष्टासँ से नहि भेलैक ,उलटे हुनकर प्रतिष्ठा बढ़िते गेल,तखन ओ सभ दोसर रस्ता धेलक।

संयोग एहन भेलैक जे ओकरासभकेँ ई अवसर जल्दीए भेटि गेलैक । चंद्रिकाकेँ लए कालीकान्त त्रिकुट भवनक चौकठिपर पहुँचले छलाह । गौरीक छोट बहिन ई समाचार सुनि हुनकासभकेँ स्वागत करबाक हेतु मुख्यद्वारि दिस दौड़लीह ।

एतबे कालमे की भेलै कि नहि हुनका माथामे चक्कर देबए लगलनि । जाबे केओ किछु बुझैत ओ ओहिठाम धराम दए खसलीह । कालीकान्त धरफरा कए उतरलाह । ताबे तँ खेल खतम छल। हुनकर शरीर निष्प्राण भए गेल छल । चारूकात हाहाकार मचि गेल ।

गौरी बहुत दुखी भए गेलीह । ओ कनैत-कनैत बेहाल रहथि । गौरीक स्थिति खराब होइत देखि कालीकान्त स्वयं नागबाबा लग गेलाह,हुनकर बहुत प्रार्थना केलनि मुदा ओ किछु नहि कए सकलाह ।

"हम कोनो भगवान थोड़े छी । हिनकर समय आबि गेल हेतनि तँ हम की कए लेबैक?" कालीकान्त दुखी मोनसँ वापस भए गेलाह । गौरी कनैत-कनैत बेहाल रहथि । मुदा आब की होएत? जे हेबाक छल से भए गेल ।

कहबी छैक जे समय बहुत समस्याक इलाज कए दैत अछि। सएह भेलैक । कालीकान्त क्रमशः शांत भेलाह । हुनका राज-काज सेहो चलेबाक रहनि । अस्तु,ओहिसभमे लागि गेलाह। मुदा हुनकामे ओ पहिलुका तेज नहि रहल । सदिखन दुविधाग्रस्त रहए लगलाह। तकर फएदा किछु दुष्ट लोक उठबए लागल । ओ

सभ कालीकान्तक कान नागबाबाक खिलाफमे भरैत रहैत छल । कालीकान्त तँ परेसान छलाहे । ओ सभ हुनका ई बात मोनमे भरि देलक जे नागबाबाक गलतीसँ गौरीक बहिनक जान गेलनि । ओ चाहितथि तँ हुनका बँचा सकैत छलाह । असलमे दुष्टसभ बहुतदिनसँ लागल छल जे कालीकान्तक ओहिठाम जोगार बनाओल जाए । ई एकटा बढ़िआँ मौका हाथ लागि गेलैक । कालीकान्तकेँ कष्ट तँ रहबे करनि । क्रमशः दुष्टसभक बात हुनका मोनमे बैसि गेलनि। आचार्यजीकेँ जखन ई सभ बात पता लगलनि तँ अपनाभरि हुनका बुझेबाक प्रयास केलथि । मुदा कालीकान्तपर किछु प्रभाव नहि भेल । आचार्यजी की करितथि? चुप्प रहि गेलाह।

"संभवतः समयक संगे कालीकान्तकेँ अपने सभकिछु बुझेतनि । ताबे हमरा लोकनिकेँ शांत रहबाक चाही।"- आचार्यजी मोने-मोन सोचलथि ।

एकदिन सायंकाल आचार्यजी अपन शिष्यसभक संगे चर्चा करैत छलाह । चर्चाक मूल विषय कालीकान्तक परेसानी छल। संयोगसँ कालीकान्त सेहो किछु कालक बाद ओतहि पहुँचि गेलाह । ओ अपन जन्मकुण्डली संगे अनने रहथि । जन्मकुण्डलीक गणनामे जयन्तकेँ महारथ रहनि । आचार्यजी हुनका हाथ मे जन्मकुण्डली दैत कहैत छथि-

"जयन्त एहि विषयमे अहाँसँ योग्य एतए केओ नहि अछि। अहाँ कालीकान्तक कुण्डलीकेँ ध्यानसँ देखि हिनका उचित परामर्श कए दिएनि जाहिसँ हिनका शांति होनि आ ई अपन राज-काज आगू चला सकथि।"

आचार्यजीक आज्ञा पाबि जयन्त हुनकर कुण्डलीकेँ बहुत ध्यानसँ देखलाह । कुण्डलीक गणना करैत-करैत ओ एकहि बेर प्रसन्नतासँ चिकरि उठलाह-

"एहिमे तँ बहुत नीक जोग अछि।"

"की बात छैक से स्पष्ट कहिऔक।-आचार्यजी बजलाह । कालीकान्त स्वयं बहुत उत्सुक भए गेलथि । हुनका जयन्तक योग्यतापर बहुत विश्वास रहनि। कालीकान्तक जिज्ञासा बढ़ैत देखि जयन्त कहैत छथि-

" चंद्रिका परीक्षामे बहुत नीक स्थान प्राप्त करतीह ।"

कालीकान्त बहुत प्रसन्न भेलाह । मोन होनि जे जयन्तकेँ किछु दक्षिणा दिअनि । मुदा हुनका जयन्तक स्वभाव तँ बूझले रहनि । तथापि ओ आचार्यजीसँ कहैत छथि-

"आचार्यवर! हम जयन्तक पाण्डित्यसँ अभिभूत छी । हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे हिनकर भविष्यवाणी सफल होएत । अस्तु, हमरा हार्दिक इच्छा अछि जे जयन्तकेँ उचित बिदाइ करिअनि ।"

“अपने किएक अगुताइ छी । उचित समय आबए दिऔक। जयन्त अखन तँ एहीठाम छथि ।"-

आचार्यक बात सुनि कालीकान्त गुम्म पड़ि गेलाह ।

"जे अहाँक इच्छा ।”

कालीकान्त त्रिकुट भवन आबि ई सुखद समाचार गौरीकेँ देलखिन । गौरी समाचार सुनिते कनीकाल हेतु सभटा दुख बिसरि गेलीह ।

किछु दिनक बाद चंद्रिकाक परीक्षाफल निकलल । ओ प्रथम श्रणीमे उत्कृष्टताकसंग सफल भेलीह । कालीकान्तक मोन

आनंदसँ आप्लावित छल । ओ दौड़ल आचार्यजीक शारदाकुंज पहुँचि गेलाह । कालीकान्त पैरे -पैरे भागि रहल छलाह। हुनकर सिपहसलारसभ पाछू-पाछू दौड़ रहल छल । नगरवासी एहि दृश्यकेँ देखि छगुंतामे रहथि जे आखिर बात की अछि ? कालीकान्त एना किएक भागि रहल छथि?

" जरूर किछु खास बात भेल अछि ।"-केओ बाजल।

"तथापि एना पैरे-पैरे किएक दौड़ि रहल छथि।"-दोसर बाजल ।

" किछु बात हेतैक । हमरा-अहाँकेँ एहि चक्करमे नहि परबाक चाही । राज-काज छैक, चलैत रहैत छैक ।"-तेसरगोटे बजलाह ।

कालीकान्तकेँ किछु होस नहि रहनि जे ओ किछु सुनताह वा ककरो किछु जबाब देताह । ओ ठोकले शारदाकुंज पहुँचि गेलाह । विद्यार्थी लोकनि सरस्वती वंदना कए रहल छलाह । सभसँ हटि कए जयन्त अपन शोधग्रंथकेँ पढ़ैत रहथि । हुनका ईहो सोह नहि रहलनि जे सरस्वती वंदना भए रहल अछि । विद्यार्थीलोकनि कैकबेर अबाज देने रहथिन । मुदा ओ अध्ययनमे तल्लीन रहबाक कारण किछु नहि सुनि सकलथि । आचार्यजी फटकिएसँ कालीकान्तकेँ शारदाकुंज दिस अबैत देखलखिन । ओ इसारासँ हुनकर अभिनंदन सेहो केलथि । मुदा प्रार्थना चलि रहल छल,तेँ हटि नहि सकलाह । कनीकालमे प्रार्थना जखन समाप्त भेल तँ कालीकान्त दण्डवत भए गेलाह।

"आचार्यवर! हम अपने लोकनिक बहुत ऋणी छी ।"

" किछु विशेष बात भेलैक की?"

" जयन्तक भविष्यवाणी सही भेल । चंद्रिका प्रथमश्रेणीमे उत्कृष्टताक संग परीक्षामे सफल भेलीह ।"

कालीकान्तक समाचार सुनि आचार्यवर बहुत प्रसन्न भेलाह ।

"जयन्त कतए छथि? "-कालीकान्त बजलाह ।

आइ भोरेसँ ओ कतहु कातमे बैसल अध्ययन कए रहल छथि । आइ प्रार्थनामे सहो नहि आबि सकलाह ।"

“से की?"

"संभवतः हुनकर शोधग्रंथ अंतिम चरणमे पहुँचि गेल अछि। ओ दिन-राति एहीमे लागल रहैत छथि । भोजनो करबाक सुधि नहि रहैत छनि ।"

कालीकान्त ,आचार्यजीक संगे सहटि कए जयन्त लग पहुँचलाह । कालीकान्त हुनकर ध्यान आकर्षित करबाक बहुत प्रयत्न केलाह ,परंतु सफल नहि भेलाह ।

"आब की होएत आचार्यवर? ई तँ सुनिए नहि रहल छथि।"

"हिनका एहिना छोड़ि देल जाए । काज समाप्त भेलापर अपने ध्यान टुटतनि । "

"ठीके कहैत छी । एहि परिस्थितिमे हुनक ध्यानभंग करब उचित नहि होएत । लगैत अछि ओ गंभीर चिंतनमे छथि ।"-से कहि कालीकान्त आचार्यजीसँ आज्ञा लए त्रिकुट भवन लौटि गेलाह।

सायंकाल जयन्त आचार्यजी लग पहुँचलाह । हुनकर शोधग्रंथ पूर्ण भए गेल छल । मात्र ओकर उपसंहार लिखबाक रहि

गेल छलनि । आब हुनका अपन मातृभूमि बेरि-बेरि मोन पड़ि रहल छलनि । नेनाक एक-एकटा दृश्य हुनकर आंखिमे घुमि रहल छल ।

"ई की? अहाँक आँखिमे नोर देखि रहल छी"-आचार्यजी बजैत छथि ।

जयन्त किछु नहि बाजि सकलाह । आओर जोर-जोरसँ कानए लगलाह ।

"अहाँ एतेक भावुक किएक भए रहल छी?"

" हमरा अपन मातृभूमि बजा रहल अछि । मुदा हमर रोम-रोम तँ अपनेक ऋणी अछि आचार्यवर! हम अपनेक ऋण कोना चुका सकैत छी ? हमरा लगमे तँ किछु नहि अछि । गुरुदक्षिणा देने बिना हम कोना चलि जाउ?"

"अहाँ व्यर्थ चिंतामे लागल छी । अपन अद्वितीय प्रतिभासँ एहि आश्रमक प्रतिष्ठा अहाँ सदति बढ़बैत रहलहुँ अछि । एहिसँ बढ़ि कए दक्षिणा आओर की भए सकैत अछि? अपितु कालीकान्त स्वयं अहाँसँ भेंट कए कृतज्ञता व्यक्त करए आएल छलाह?"

"से की?"

" अहाँक भविष्यवाणीक अनुसार चंद्रिका प्रथमश्रेणीमे उत्कृष्टताक संग परीक्षामे सफल भेलीह । एहि खुसीमे ओ भोरे स्वयं दौड़ल आश्रमपर आएल रहथि । अहूँ लग गेलाह । परंतु...... ।"

"परंतु की?"

"अहाँ अध्ययनमे तल्लीन रहबाक कारण हुनकासँ गप्प नहि कए सकलहुँ ।"

"ई तँ ठीक नहि भेल । "

"कोनो बात नहि । ओ अपनेक स्थिति बुझलथि । चिंताक कोनो बात नहि अछि ।

आचार्य शोधग्रंथ उल्टा-पुल्टा कए देखलथि। हुनकर प्रसन्नताक अंते नहि छल ।

"बेजोड़ ग्रंथ बुझा रहल अछि । हमरा लोकिनिकेँ अहाँपर गर्व अछि ।"

जयन्त आचार्यजीकेँ दण्डवत भए प्रणाम करैत छथि ।

८

जयन्त जानकीधामसँ कतेको विषयमे पारंगत भए गाम वापस आबि कौलिक मर्यादाक पालन करैत जीवन निर्वाह करए चाहैत छलाह । ओ पाठशाला हुनकर वंशक कैक पुस्तसँ चलि रहल छल । तकरे आगू बढ़ेबाक हेतु ओ कालीकान्तक आग्रहकेँ अस्वीकार कए देने छलाह । ओ पाठशालकेँ विकसित कए आधुनिक सुविधा संपन्न विश्वविद्यालय स्थापना करए चाहैत छलाह जतए आधुनिक विज्ञानसँ लए कए भारतक प्राचीन संस्कृतिक ज्ञान जिज्ञासु लोकनिकेँ उपलब्ध हेतनि ।

जयन्तक शारदाकुंजमे शिक्षा-दीक्षा पूर्ण भए गेलनि अछि आ आब ओ अपन मातृभूमि वापस हेताह से समाचार कालीकान्तक कान धरि सेहो पहुँचल । कालीकान्त जयन्तक विद्वताक चर्च बहुत सुनने रहथि आ हुनकर इच्छा रहनि जे ओ हुनकर राज-पाट सम्हारथि ।

जखन दूतसभसँ किछु नहि भेल तँ एकदिन कालीकान्त स्वयं चुपचाप जयन्तसँ भेंट करए बिदा भेलाह । नदीसँ सटले आश्रममे अपन आचार्यसंग शास्त्र चर्चामे जयन्त लीन छलाह ।

आश्रमक विद्यार्थी दत्तचित्त भए हुनका लोकनिक पारस्परिक संवाद सुनि रहल छलाह । कतहु कोनो प्रकारक गतिविधि नहि छल । ओहि निःश्ब्द वातावरणमे कालीकान्तक पदचापसँ एकाएक सभक ध्यान ओमहर चलि गेल। आचार्यजी उठि कए ठाढ़ भए गेलाह ।

" अपने किएक कष्ट केलहुँ । समाद दितहुँ । हम स्वयं अपनेक दरबारमे आबि जइतहुँ ।"

"आचार्यजीकेँ सादर प्रणाम । असलमे हम जाहि काजे अएलहुँ से समादे नहि भए सकैत छल, ताहि हेतु हमर आएब अनिवार्य छल।"

"से की? एहन कोन बात भेलैक जे अहाँक स्वयं एतए आएब जरूरी भेल? की हमरा लोकनिसँ कोनो अधर्म भए गेल ?की हमर आश्रमक विद्यार्थीसँ किछु त्रुटि भए गेलनि अछि ?"

"ई सभ किछु नहि भेल अछि।"

"तखन अपने कष्ट किएक केलहुँ? ई आश्रम तँ अपनेक कृपासँ चलि रहल अछि । अपनेक पूर्वजलोकनि अत्यंत उदारताक परिचय दैत एकर स्थापना केलाह आ कतेको मेधावी विद्यार्थीकेँ आश्रय दए विद्यालाभ करओलनि । एहि आश्रमक परंपरा बनओने रखबामे अपनेक महान योगदान अछि । तेँ अपने निःसंकोच कहू जे हमसभ कोन तरहें अपनेक आज्ञाक पालन कए सकैत छी ।"

"आज्ञाक तँ कोनो प्रश्ने नहि अछि आचार्यजी!"

आचार्यजी बकर-बकर कालीकान्तक मुँह तकैत रहि गेलाह । किछु बुझएमे नहि आबनि जे आखिर बात की अछि? किछु अंदाज नहि लागि रहल छलनि। कालीकान्त आश्रमक चारूकात निहारि रहल छलाह । आश्रमक समस्त विद्यार्थीसभ

तेजोमय रहथि । ललाटपर तृपुंड लगओने ,कुशक आसनपर विद्यमान समस्त विद्यार्थीपर हुनकर ध्यान गेल । ओ जे चाहैत रहथि, जिनका तकैत ओ चुपचाप पैरे एतए धरि चलि आएल रहथि से नहि भेटलखिन । “ओ कतए छथि?”- कालीकान्त मोने-मोन सोचैत रहथि ।

"आश्रमक कोनपर नदीसँ सटले एकटा तेजस्वी युवक निरंतर वेदमंत्रक सस्वर पाठ कए रहल छलाह । हुनका कालीकान्तक आगमन आ तदुपरंत आचार्यसंग भए रहल वार्तालापसँ किछु मतलब नहि बुझा रहल छल । ओ तेजस्वी बालक के छथि? कहीँ ओएह तँ नहि छथि?"-कालीकान्त मोने-मोन सोचलथि। मुदा समाधान नहि होइत देखि ओ आचार्यसँ स्पष्ट कहलखिन -

"आचार्यजी! अपने हमर वंश परंपरासँ पूर्ण परिचित छी । फेर हमरा लोकनिक शुभचिंतक छी । जँ अपनेसँ नहि कहब तँ कहबैक ककरा? आ बिना अहाँक कृपाकेँ एहि समस्याक समाधान नहि भए सकैत अछि ।"

"अपने आज्ञा तँ देल जाए । हमसभ एकर सहर्ष पालन करब । ई तँ हमरा लोकनिक अहोभाग्य होएत।"

"आचार्यजी! अपने तँ महाज्ञानी छी । अपनेकेँ की नहि बूझल अछि । तथापि अपनेक आज्ञानुसार हम अपन मंतव्य स्पष्ट करैत छी ।"

एतबा बाजि ओ आचार्य संगे कात भए गेलाह आ एकांत पाबि हुनका कहलखिन-

" आचार्यजी! हमर राजपाट बहुत पसरि गेल अछि । असगर हमरासँ सम्हरि नहि रहल अछि । हमर एकमात्र संतान

चंद्रिका सेहो आब छेटगर भेलथि। जयन्त चंद्रिकाक हेतु उपयुक्त बर बुझाइत छथि । जँ ओ तैयार भए जाथि तँ हमर चिंता कम होअए । दुनूगोटे मिलि कए हमर राजपाट सम्हारि लेताह तँ हमर समय नीकसँ कटि जाएत ।"

"हम एहि समस्यासँ वाकिफ छी । अहाँक लोकसभ हमरासँ एहि विषयपर कैकबेर चर्चो केलथि । मुदा जयन्त सर्वथा उपयुक्त होइतहुँ अखन बिआह करबाक हेतु उत्सुक नहि छथि। हुनका माथमे अपन गाममे पाठशाला स्थापित करबाक धुन सबार छनि । कहैत छथि जाबे से नहि होएत हुनक जिनाइ सर्वथा व्यर्थ होएत । तेँ ई काज ठामहि रहि गेल।"

ई सभ गप्प करैत-करैत आचार्यजी कालीकान्तक संगे जयन्तक लगीच आबि गेल रहथि । कालीकान्त सेहो हुनका संगे-संगे जयन्तक पाछूमे ठाढ़ भए गेलथि । यद्यपि कालीकान्त आचार्यजीक संगे जयन्तसँ सटले ठाढ़ रहथि । मुदा ओ आँखि मुनने तेना ने ध्यानमग्न रहथि जे आचार्योकेँ हुनका टोकबाक साहस नहि भेलनि । कालीकान्त एहि बातकेँ बुझलनि आ आचार्य संगे ठामहि वापस भए गेलाह । त्रिकुट भवन वापस जाइत काल हुनका बेरि-बेरि ओहि तेजस्वी युवकक ध्यान अबैत रहलनि।

९

जयन्त द्वारा कालीकान्तक भेल उपेक्षासँ आश्रमबासी चिंतित रहथि । बेसक ओ सभ निर्लोभ छलाह । मुदा रहथि तँ कालीकान्तक आश्रिते। आश्रमक खरचा हुनके ओहिठामसँ अबैत छल । ततबे नहि ओहिठाम काज केनिहार सेवकसभ हुनके द्वारा राखल गेल रहथि । एहन स्थितिमे कालीकान्तककेँ अप्रसन्न करब उचित नहि छल ।

कालीकान्तकेँ एहि बातक गुमान रहनि जे हुनकर बात ओहिठाम केओ नहि काटत। हुनका पूरा विश्वास रहनि जे घुरतीमे जयन्त हुनका संगे रहबे करथिन । तेँ ने शारदाकुंज हेतु बिदा हेबासँ पहिने ओ जयन्तक स्वागतक हेतु सभटा ओरिआन कए लेने रहथि ।

आश्रमसँ वापस जाइत काल रस्ता भरि आचार्यजी कालीकान्तकेँ मनबैत रहलथि ।

" क्षमा कएल जाए । जयन्त बहुत अज्ञानी अछि । ओ अपनेक महत्व की जाने गेलथि । हमसभ अपनेकेँ यथासाध्य सेवा करक हेतु सदरिकाल प्रस्तुत छी । तेँ अपने हमरा लोकनिपर अपन कृपा बनओने रहू । "

कतबो आचार्यजी फदका पढ़लथि कालीकान्त किछु बजबे नहि करथि । ओ रस्ता भरि गुमसुम रहि गेलथि । किछु जबाब नहि देलखीन । एहि बातसँ आचार्यजीक चिंता आओर बढ़ि गेल । मुदा समाधान किछु नहि फुरा रहल छलनि । तखन तँ विद्वान छलाह । ईश्वरमे विश्वास छलनि । मोने-मोन हनुमानजी कैँ गोहरबैत रहलाह । आखिर ओ रस्ता बीति गेल । कालीकान्तक

सबारी त्रिकुट भवन लग आबि कए ठाढ़ भेल । कालीकान्तसंगे आचार्यजी त्रिकुट भवन दिस बिदा भए गेलाह ।

" ओहि समयमे जयन्त तँ साधनामे लीन रहथि । हमसभ ओहिठाम रही से ओ बुझिओ नहि सकलाह । तखन हुनकर कोन दोष?"- कालीकान्तक गप्प सुनि आचार्य आश्वस्त भेलाह ।

कालीकान्तक त्रिकुट भवनक शोभा देखैत बनैत छल । त्रिकुट भवनक द्वार लग एक सँ एक सुन्दरि युवतीसभ हाथमे जलसँ भरल कलश लेने ठाढ़ि छलीह । भवनक द्वारसँ अन्दर धरि नाना प्रकारक चित्रकारी कएल गेल छल ।

" ई चित्रसभ तँ मिथिलाक लगैत अछि?"

"सही बुझलहुँ ।"

"मुदा..."

"ओ किछु बजितथि ताहिसँ पहिने कालीकान्त बात लोकि लेलखिन-

"आचार्यवर! हमर परिवार मिथिलाक माटि-पानि सँ सभदिन जुड़ल रहल अछि । शारदाकुंजमे कार्यरत मिथिलाक आचार्य लोकनिक विद्वताक बलेँ ई आश्रम समस्त विश्वमे यश प्राप्त करैत रहल ।"

कालीकान्तसँ मिथिला आ ओहिठामक आचार्य लोकनिक गुणगान सुनि आचार्य बहुत प्रसन्न भेलाह । असलमे ओहो तँ मिथिलेक छलाह ।

दुनूगोटे संगहि त्रिकुट भवनमे प्रवेश केलनि । गौरी स्वयं आचार्यक स्वागत केलथि । त्रिकुट भवनक वैभव गौरीक देहपर सद्यः प्रकट भए रहल छल । जाबे गौरी आचार्यकेँ प्रणाम कए बैसबाक हेतु उद्यत भए रहल छलीह ,कालीकान्त लगेमे राखल

संदूक केँ खोलि ओहिमेसँ एकटा पुस्तक निकालि आचार्यक हाथमे राखि देलखिन ।
"आचार्य अपने एकरा शारदाकुंज लेने जाउ आ निचैनसँ पढ़ब । एहिमे मिथिलाक विद्वान लोकनिक बारेमे एवम् हुनका सभक हमर परिवारसँ संपर्कक बहुत रास जानकारी भेटत । जयन्तक कुलक विद्वान लोकनिक जानकारी सेहो भेटत संगहि ईहो बुझबामे आओत जे हुनकासभकेँ हमर परिवारपर कतेक उपकार छनि ।"
आचार्य ओहि पुस्तककेँ सम्हारि कए राखि शारदाकुंज वापस जएबाक हेतु कालीकान्तसँ आज्ञा माङलथि ।
"अपनेक आज्ञा होइ तँ हम शारदाकुंज वापस जाइ । विद्यार्थी लोकनिक अध्यापनक समय छैक तेँ ओतए हमर उपस्थिति अनिवार्य थिक।"
"किछु भोजन तँ कए लेल जाए । ओना केना वापस जाएब ।"
"हम तँ नवरात्राक व्रत कए रहल छी । तेँ क्षमा कएल जाए ।"
"से नहि कहू । हम तँ मात्र अपन कर्तव्यक पालन कए रहल छी ।"
आचार्य बिदा भेलथि । कालीकान्त आ गौरी बहुत दूर धरि हुनका अरिआति देलखिन ।

आचार्यकेँ शारदाकुंज लौटबामे किछु विलंब भए गेल रहनि । सायंकालक आरतीक समय भए गेल छल । समस्त विद्यार्थी लोकनि उत्सुकतासँ आचार्यक प्रतीक्षा कए रहल छलाह । आचार्य अबिते एमहर-ओमहर देखलनि । मुदा जयन्त कतहु नहि रहथि । आचार्य पुछलखिन-
"जयन्त नहि देखाइत छथि?"
" ओ तँ अहाँक गेलाक बादे कतहु चलि गेलाह ।"
" किछु कहलथि नहि?"

"किछु नहि आचार्य! मुदा जाइतकाल ओ बहुत चिंतित लागि रहल छलाह ।" -आश्रमवासी विद्यार्थी लोकनि एकस्वरसँ बजलाह । शायंकालीन आरतीक समय भए गेल छल । आचार्य सहित शिष्यलोकनि आरतीमे लागि गेलाह ।

१०

आरती समाप्त होइतहि आचार्य आश्रममे जयन्तक कोठरी दिस गेलाह । जयन्तक किछु अता-पता नहि छल । आश्रमक सभ समान यथाबते छल । मुदा जयन्तक स्वलिखित शोधग्रंथ नहि छल। आचार्यजीकेँ आब विश्वास भए गेलनि जे जयन्त शारदाकुंज छोड़ि गेलाह।

"मुदा ओ जाइत काल भेंट तँ कए सकैत छलाह, बिना किछु कहने चलि गेलाह ।"मोने -मोन से सोचि ओ बहुत दुखी छलाह । एतबहिमे एकटा शिष्य दौड़ल आएल-

"आचार्यवर!"

"की बात छैक, बहुत अपसियाँत लागि रहल छह?"

"बहुत गड़बड़ भए गेल.... ।"

" साफ-साफ किएक नहि बजैत छह?"

"हमसभ अखने नदीमे स्नान करए गेल रही । ओहिठाम तीन-चारिटा लठैतकेँ जयन्तकेँ गोलिओने देखलिऐक। हमसभ हुनका बचेबाक प्रायासो केलहुँ । मुदा ओ सभ बलिष्ठ आ अस्त्र-शस्त्रसँ लैस छल । हमसभ जान बचा कए भागि गेलहुँ ।"

ई बात सुनि आचार्य बहुत चिंतामे पड़ि गेलाह । कनीकाल सोच-विचार केलथि । फेर कहैत छथि-
"लगैत अछि लठैतसभ जयन्तक अपहरण कए लेलक । हुनकर प्राण संकटमे अछि । कालीकान्तकेँ तुरंत सूचित करबाक चाही । ओएह किछु कए सकैत अछि ।"
आचार्यक आज्ञानुसार हुनकर तीनू शिष्य कालीकान्तक ओहिठाम पहुँचि गेलाह । ताबे कालीकान्त महादेवक दर्शनक हेतु मंदिर चलि गेल रहथि । शिष्यलोकनिकेँ उत्तेजित देखि गौरी पुछलखिन-
"अहाँसभ बहुत परेसान लागि रहल छी । किछु विशेष बात छैक की?"
"हमसभ आचार्यजीक आदेशानुसार कालीकान्तसँ भेंट कए हुनका आचार्यक समाद देबए चाहैत छी ।"
"मुदा कालीकान्त तँ पूजा करबाक हेतु मंदिर गेल छथि आ हुनका वापस अएबामे किछु समय लागत ।"
"ताबे तँ अनर्थ भए जाएत ।"
"से की?"

शिष्यलोकनि सभटा बात हुनका कहलखिन । गौरी तुरंत कालीकान्तसँ भेंट करबाक हेतु मंदिर दिस बिदा भेलीह। संयोग छल जे कालीकान्त पूजा कए वापस आबि रहल छलाह । दुनूगोटेक भेंट त्रिकुट भवनक मुख्यद्वारे लग भेलनि । आचार्यजीक शिष्यसभ सेहो हुनक संगे रहथि । गौरी सभटा बात कालीकान्तकेँ कहलखिन। कालीकान्त ई बात सुनितहि तामससँ आगि भए गेलाह।
"सएह कहू। लठैतसभक ई साहस? ओकर सभक अंत आब लगीच लगैत अछि ।"

कालीकान्त तुरंत सदल-बल बिदा भेलाह । हुनका अबैत देखि लठैतसभ इएह- ले,ओएह- ले जान लए भागल । जयन्तकेँ ठामहि कुहरैत छोड़ि देलक। जाइत-जाइत हुनकर बामा पैरमे जोरसँ धक्का मारलक जाहिसँ ओ चित्ते भरे खसलाह । ताबे कालीकान्त आ हुनकर सिपहसलारसभ आबि गेल छलाह। ओ सभ जयन्तकेँ उठेबाक प्रयास केलक । मुदा ओ तँ दर्दसँ परेसान छलाह, पैर उठने ने उठि रहल छल । बैद बजाओल गेलाह। जयन्तक स्थिति देखि बैदजी बजलाह-

"लगैत अछि हिनकर पैरक हड्डी टुटि गेलनि अछि । हिनका हमर आरोग्यशालामे लए चलू । ओतहि हिनकर शल्यचिकित्सा करए पड़तनि तखने ई ठीक भए सकताह ।"

बैदजीक बात के काटैत? एमहर जयन्त दर्दसँ बफारि तोड़ि रहल छलाह । कहुना कए उठा-पुठा कए हुनका बैदजीक आरोग्यशाला आनल गेल । ओहिठाम दस दिन धरि हुनकर इलाज चलल । जयन्त ठीक तँ भए गेलाह । मुदा हुनकर बामा पैर अखनहु नङराइते छलनि । बैदजीक कहब जे क्रमशः ठीक भए जेतनि,मुदा किछु समय लगतनि । कालीकान्त, आचार्य आ शारदाकुंज समस्त शिष्यगण एहीसँ प्रसन्न रहथि जे चलू हिनकर जान तँ बाँचल ।

"सही कहलहुँ श्री मान! जँ अपने समयपर ठाढ़ नहि होइतहुँ तँ कहि नहि लठैतसँ हिनकर की हाल करैत?"

"मुदा लठैतसभ एना केलक किएक?"-कालीकान्त पुछलखिन । ताबे जयन्त उठि कए बैसि गेल रहथि । हुनका तुरंत अपन शोधग्रंथ ध्यान आएल । ओ एमहर-ओमहर देखैत छथि । किछु ताकि रहल छथि । फेर चिंतित स्वरमे बजैत छथि -

"हमर शोधग्रंथ कतहु नहि देखा रहल अछि?"-से सुनितहि आचार्य सन्न रहि गेलाह । कतेको सालसँ जयन्त आचार्यक संगे एहि काजमे लागल छलाह । हुनका लोकनिक शोध अंतिम चरणमे छल । ई बात केना-ने-केना लठैत सभकेँ पता लागि गेलैक । तकरे समाधान करबाक हेतु ओ सभ जयन्तक अपहरण करए आएल छल । जयन्त तँ बँचि गेलाह । मुदा हुनकर शोधग्रंथ लए जएबामे ओ सभ सफल रहल ।
"अनर्थ भए गेल ।"-आचार्य बजैत छथि ।
आब ई स्पष्ट भए गेल छल जे लठैत लोकनिक उद्देश्य जयन्तक अपहरण करब नहि अपितु हुनकर शोधग्रंथकेँ छिनब छल ।
"मुदा लठैत लोकनिकेँ एहि शोधग्रंथसँ की मतलब?"-आचार्य बजैत छथि ।
"ई बात अपने सही कहि रहल छी । मुदा ईहो तँ भए सकैत अछि जे केओ अपने लोक हुनकासभकेँ एहिकाज करबाक हेतु पीठ ठोकने होथि ।"-कालीकान्त बजलाह ।
"ई बात तँ भए सकैत अछि । कारण जयन्तसँ ईर्ष्या केनिहारक कमी नहि अछि ।"
"से बात बुझितहुँ अपने हमरा नहि कहलहुँ? आखिर एहन महत्वपूर्ण शोधपत्रक रक्षाक दायित्व तँ हमरोसभक अछि कि नहि?"
"ई गलती तँ भेल । हम नहि सोचि सकलहुँ जे केओ एतेक नीचाँ जा सकैत छथि ।"
"ई कलियुग छैक आचार्यवर! एहि बातकेँ नहि बिसरल जाए ।"
हिनकालोकनिमे गप्प-सप्प चलिए रहल छल कि पुलिस एकटा लठैतकेँ कतहु सँ पकड़ने चलि आएल ।

"इएह ओ व्यक्ति थिक ।"-पुलिस बाजल ।
"मुदा शोधग्रंथ कतए अछि?"-कालीकान्त पुछैत छथि।
ओहि लठैतकेँ किछु बाजले नहि होइक । इसारासँ किछु कहैत छल जे बुझले नहि जाइक ।
"ई तँ बौक अछि । "-आचार्य बजैत छथि । "
"कोनो बात नहि । ई जेना-जेना इसारा करैत अछि, तेम्हरे चलू । साइत पता लागि जाए ।"-कालीकान्त बजलाह। सभगोटे ओहि लठैतक पाछू-पाछू बिदा भेलाह । ओ इसारा करैत गेल । जाइत-जाइत सभगोटे त्रिकुट भवनक उतरबरिआ कातबला गेटपर पहुँचि गेलाह ।
"ई की देखि रहल छी? -कालीकान्त बजलाह । "हमहूँ किछु नहि सोचि पाबि रहल छी । ई तँ हमरासभकेँ त्रिकुट भवनक लगीचमे लए अनलक । आब की होएत ? कहि नहि के सभ एहि कुकाण्डमे सामिल छथि ?"
ताबतेमे ज्योतिषीजी बहराइत छलाह । लठैत हुनका भरिपाँज पकड़लक ।
"ई की कए रहल छैं?"-ज्योतिषीजी बजलाह । मुदा लठैत हुनका छोड़बे नहि करए । बात साफ भए गेल । थोड़बे कालमे शोधग्रंथ कालीकान्तक हाथमे आबि गेल । कालीकान्त हुनका तुरंत पुलिसकेँ सुनझा देलथि ।
"हद भए गेल । एहन षढ़यंत्र हम सोचिओ नहि सकैत छलहुँ ।"-कालीकान्त बजलाह ।
“शोधग्रंथ भेटि गेल सएह कोन कम?"-आचार्य बजलाह ।

११

एमहर शोधग्रंथ भेटि जएबाक उत्सव मनाओल जा रहल छल तँ ओमहर षड़यंत्रकारीसभ सेहो बैसल नहि छल। त्रिकुट भवनक अन्दरक बात छलैक । एहिपार नहि तँ ओहिपार। ओकरोसभकेँ बूझले रहैक जे कालीकान्त आब नहि छोड़ताह, दण्ड तँ भेटबे करत । तँ ओ सभ अंतिम प्रयास कए लेबे उचित बुझलक। कहि नहि ज्योतिषीजीक पाछूके सभ सहयोगी छल ?

किछु गोटे जयन्त केँ एकांत पाबि गछारि लेलक । हुनका धारक कातमे एकांतमे लए गेल। हाथ-पैर बान्हि देलकनि आ तकर बाद हुनका दुनू आँखिमे किछु ढ़ारि देलकनि । जयन्त चिचआइत रहलाह परंतु जे हेबाक छल से भेल । हुनकर दुनू आँखि बंद भए गेल । हुनका किछु नहि देखाइत छलनि । लठैतसभ हुनका ओहिना बान्हल-छानल छोड़ि कए भागि गेल ।

आचार्यजीक संगे कालीकान्त शोधग्रंथ भेटि जएबाक प्रसन्नतामे आश्रममे जयन्त सँ भेंट करबाक हेतु पहुँचलाह। मुदा ई की? ओ तँ कतहु नहि छलखिन । चारूकात विद्यार्थीसभ हुनका ताकि आएल । मुदा हुनकर कोनो पता नहि चलल । आचार्यजी बहुत चिंतित भए गेलथि ।

" लगैत अछि फेर किछु अनर्थ भेल ।"

"जयन्त छथि कतए?"

"ओएह तँ नहि बुझा रहल अछि । विद्यार्थी सभ चारूकात छानि लेलनि । कतहु कोनो पता नहि चलि सकल। आबकी कएल जाए?"

"हमरा तँ एहिमे ओकरेसभक हाथ लगैत अछि ।"

"कहि नहि सकैत छी । एना हेबाक तँ नहि चाही ।"
"ई कलियुग थिक । किछु भए सकैत अछि ।"
ओ दुनू गोटे गप्प कैए रहल छलाह कि दूटा विद्यार्थी दौड़ल अएलाह-
"की बात छैक? एना अपसियाँत किएक छह?"-आचार्यजी पुछलखिन ।
जुलुम भए गेल ।"
"परिछा कए बाजह ने जे की भेलैक?"
"जयन्तकेँ लठैतसभ हाथ-पैर बान्हि कए धारक कातमे फेकि देलक अछि ।"
" तूँसभ की करैत छलह? हुनका लेने किएक नहि अएलह?"
"हमसभ प्रयास केलिऐक । मुदा लठैत सभ हमरासभकेँ पाछू पड़ि गेल । हमसभ जान बचा कए भगलहुँ ।"

ओहि समयमे कालीकान्त स्वयं आश्रमेमे रहथि । तुरंत सदल-बल ओहि विद्यार्थीसभक संगे धारक कात दिस बिदा भेलाह। धारक कात पहुँचितहि हुनकासभक नजरि भूलंठित भेल जयन्त पर पड़ल। जयन्त बेहोस पड़ल छलाह ।
"कहि नहि जीबितो छथि कि नहि?"-आचार्यजी बजलाह ।
किछुगोटे हुनकर छातीपर हाथ देलक आ चिकरि उटल-"अखन बाँचल छथि । साँस चलि रहल छनि ।" किछुगोटे हुनका उनटओलक । दुनू आँखि बंद छल ।
"लगैत अछि हुनकर आँखिक ज्योति चलि गेलनि।"-एकटा विद्यार्थी बजलाह ।
"हमरो सएह बुझा रहल अछि ।-दोसर विद्यार्थी बजलाह ।

"एहन जुलुम नहि देखलहुँ । कहू ई ककर की बिगाड़लथि जे एहन दुष्टता केलक ।”
सभगोटे हुनका उठा-पुठा कए बैदक ओहिठाम लए गेलथि। हुनकर अथक प्रयाससँ जयन्तक जान तँ बँचि गेल । मुदा आँखि ओहिना छलनि।

कालीकान्तकेँ बहुत अफसोच होनि जे ओ जयन्तकेँ गाम जएबासँ किएक रोकलखिन । पहिनहि चलि गेल रहितथि तँ साइत एहि दुर्घटनासँ बँचि जइतथि। बैद बहुत प्रयास केलाह जे हुनकर आँखिक ज्योति लौटि जानि । मुदा सफल नहि भेलाह । जयन्त कालीकान्तक आज्ञा लए गाम बिदा भेलाह । हुनका संगे आचार्यजी स्वयं रहथि । संगहि कालीकान्तक दिससँ प्रयाप्त सुरक्षाक व्यवस्था कएल गेल । हुनका जएबाक काल कालीकान्त टैर गाड़ी भरि कए बस्तुजातसभ देबए चाहलाह । मुदा जयन्त अड़ि गेलाह-
" क्षमा कएल जाए । हमर कौलिक परंपराक प्रति ई घोर अन्याय होएत । "
"अहाँसन विद्वानक रक्षाक दायित्व हमरा लोकनिक अछि । हमसभ तँ मात्र अपन धर्मक निर्वाह कए रहल छी। अपनेकेँ एकरा स्वीकार करबाक चाही । फेर ई बस्तुजात सभ तँ पाठशाला पर रहत । ओतहि खर्च होएत । एहिमे तँ किछु गलत नहि अछि ।"
“क्षमा कएल जाए । हम अपन वंशमे कलंक नहि लगाएब । ओहि पाठशाला निर्वाह हमर पुरखा लोकनि अपने केलथि । कहिओ ककरो सँ किछु सहायताक प्रयोजन नहि भेल । फेर हमरे ई कलंक किएक लगा रहल छी?"
"हिनकर बात मानि लेल जाए ।"-आचार्यजी बजलाह ।

कालीकान्तकेँ जेना-तेना मना कए आचार्यजी किछु विद्यार्थिक संगे जयन्तक संगे हुनकर गाम बिदा भेलाह ।

१२

"आचार्य! लगैत अछि हमसभ लखनपुरक सीमामे प्रवेश कए रहल छी ।"

"से अहाँ केना बूझि रहल छी?"

"कहू, ईहो कोनो कहबाक गप्प भेलैक? जाहि माटि-पानिमे जन्म लेलहुँ,जतए नेनामे दोस्तसभक संगे खेलेलहुँ,जकर पोखरिमे जूड़शीतल दिन कए माटि-पानि-कादोसँ जुड़ाइत रहलहुँ ताहि गामकेँ कोना नहि चिन्हबैक ? वायुमण्डलमे आमक मज्जरक सुगंध पसरि रहल अछि । निश्चय हमसभ गोपी आमक गाछक लगीचमे ठाढ़ छी।"

"अहूँक जबाब नहि अछि । अपन जन्मभूमिक माटि-पानिसँ अहाँक सिनेह प्रशंसनीय अछि ।"

जयन्तकेँ मोन पड़ैत छलनि नेनाक समय। कतेक निश्छल होइत अछि नेनाक मोन । केना कतेको दिन शीला हुनका अपना संगे अपन घर लेने जाइत छलनि । कतेको कालधरि ओ सभ गोटरस खेलाइत रहैत छलाह । कैक दिन जखन पाठशालामे भोजनक कोनो ओरिआओन नहि होइक तँ ओ अपन पिताक मारफत सभकिछु पठओने बिना नहि मानैत छलि । कतेको बेर ओकरा मना कएल गेलैक जे ई पाठशालाक नियमक विरुद्ध थिक। मुदा ओकरा लेल धनिसन । समयक संगे हुनका लोकनिक आपसी

सिनेह गहींर होइत गेल । आइ कतेको बरखक बाद जखन ओ अपन गामक सीमानपर पहुँचलाह अछि तँ सभसँ पहिने हुनका शीला मोन पड़ि रहल छनि ।

"आचार्य! जँ अपने अन्यथा नहि ली तँ एकटा गप्प कही।"

"अवश्य कहू । मोनक बात हमरा नहि कहब तँ कहबै ककरा । एही लेल तँ हम अहाँक संगे एतए धरि अएलहुँ।"

"एहि कलमसँ सटले शीलाक घर छैक । की ओकरासँ भेंट भए सकैत अछि?"

"के शीला?"

"हमर नेनाक संगी । हमसभ संगे-संग भठ्ठा धेने रही ।

"हम प्रयास करैत छी । ताबे एहि गाछक छाहरिमे विश्राम कएल जाए ।"

गोपी आमक गाछक छाहरिमे जयन्त आ हुनकर संगे आएल शिष्यलोकनि सुस्ताइत छलाह । आचार्य एकटा शिष्यक संगे शीलाक पता लगेबाक हेतु आगू बढ़लाह ।

शीलाक पिता इलाकाक मानल बैद छलाह । हुनकर घरोक स्थिति सुभ्यस्त छल । बैदजीक एकमात्र संतान शीला छलखिन । मातृहीन संतानक माता-पिता दुनूक काज ओएह कए रहल छलाह। ओ क्रमश: बढ़ैत गेलीह । आब हुनकर बिआह करबाक बएस भए गेल छलनि। बैदजी बहुत मनओलखिन । मुदा शीला नहि मानथि । बैदजीकेँ किछु समाधान नहि भेटलनि तँ ओहो चुप भए गेलाह । कइए की सकैत छलाह? एकमात्र संतानक मोहक आगू लोक-लाज पाछू छुटि गेल । “जकरा जे कहबाक छैक से कहओ,हम अपन संतानक जान तँ नहि लए सकैत छी?"-ओ मोने-मोन सोचथि। हुनका ई बात बूझल रहनि जे शीलाक जयन्तक

संग दोस्ती छैक । मुदा से एतेक अंतरंग अछि तकर अंदाज हुनका कोना होइतनि ? “ई बात सभ तँ झाँपले-तोपले रहए सएह नीक ।”- से ओ सोचथि । तेँ एकर चर्चो कतहु नहि करथि । हुनका मोनमे होनि जे समयक संगे शीला स्वयं एकरा बिसरि जेतीह आ तखन हुनकर बिआह सुयोग्य बरक संगे कएल जाएत । मुदा से समय कहिओ नहि आएल । शीला गुम्मे रहि गेलीह ।

आइ एतेक दिनक बाद गामक सीमानपर अबितहि जयन्तकेँ सभसँ पहिने ओकरे ध्यान अएलनि । आचार्यजी हुनकर बात मानि गाममे शीलाक पुछारी करबाक हेतु आगू भेले रहथि कि एकटा वृद्धकेँ देखि पुछैत छथि-

"की अपने शीलाकेँ जनैत छिअनि?"

"अपने के छी आ शीलासँ अपनेकेँ की प्रयोजन अछि?"

"मान्यवर! हम छी जानकीधामक शारदाकुंजक आचार्य । अपन प्रिय शिष्य जयन्तक शिक्षा संपन्न भए गेलाक बाद हुनका संगे हुनका अरिअबैत एहिठाम धरि आबि गेलहुँ ।"

"ई तँ बहुत नीक बात भेल । आचार्यक अपन शिष्यक प्रति एहन सिनेह तकनेसँ भेटत ।"

"बात से नहि अछि । असलमे हुनका संगे एकटा दुर्घटना भए गेलनि जाहि कारणसँ हमरा हुनका संगे एहि गाम धरि आबए पड़ल ।"

" हमरा बहुत चिंता भए रहल अछि । सभटा बात फरिछा कए कहू । "

आचार्यजी हुनका सभटा बात कहलखिन । ईहो कहलखिन जे गामक सीमानमे अबितहि जयन्त सभसँ पहिने

शीलाक चर्च केलनि अछि आ ओ हुनकासँ भेंट करबाक हेतु बहुत व्यग्र छथि । से बात सुनि ओ बजैत छथि-

"हम छी शीलाक पिता मधुकान्त । हम बैदक काज करैत छी । गामेमे एहि कलमसँ सटले हमर औषधालय अछि ।"

"तखन तँ हम बहुत सही जगहपर पहुँचि गेल छी ।"

"मुदा शीलासँ भेंट तँ अखन संभव नहि अछि।"

"से की?"

“ई एकटा दुखद वृतांत अछि । कखनहुँ चैनसँ बतिआएब । पहिने अपने जयन्तकेँ आश्वस्त करू । अपनोसभ बहुत थाकि गेल छी। थोड़ेकाल विश्राम कए लिअ । फेर गप्प-सप्प हेतैक ।"

"जयन्त हमर प्रतीक्षा कए रहल हेताह।"

"कोनो बात नहि, हमहूँ ओतहि चलैत छी । सभगोटे संगे आइ हमरे ओहिठाम चलू ।"

आचार्य बैद मधुकान्तक संगे गोपी आमक गाछतर सुस्ताइत जयन्त लग पहुँचलाह ।

"हम छी बैद मधुकान्त।"

"ओ! प्रणाम करैत छी । शीलाक समाचार कहू । ओ नीके छथि ने?"

बैद मधुकान्त गुम्म पड़ि गेलाह । हुनकर गुम्मीसँ जयन्त बहुत चिंतित बुझाइत छलाह ।

"अहाँसभ हमरे ओहिठाम चलू । फेर आओर गप्प-सप्प हेतैक।"

"जाबे हम शीलाक समाचार नहि सुनि लेब ताबे कतहु नहि जाएब।"-जयन्त बजलाह ।

आचार्यजीकेँ ई बहुत आश्चर्य होनि जे गाम अएलाक बाद ओ अपन माता-पिता वा कोनो श्रेष्ठ लोकनिक चर्चा नहि कए

शीलाक पाछू पड़ि गेल छथि । जखन हुनका नहि रहल गेलनि तँ पुछिए लेलखिन-

"हमरा हिसाबे सभसँ पहिने अपन घर चलू । ओतए अपनेक परिवारक लोक प्रतीक्षा कए रहल हेताह ।"

"ततेक भाग्यवान हम नहि छी आचार्यवर! हमर माता-पिता बहुत पहिने हमरा छोड़ि गेलाह । सुनैत छी जे मृत्युसँ किछुदिन पूर्व हमर पिता बाजल रहथि -

"ई बालक परम यशस्वी ओ प्रकाण्ड विद्वान हेताह ।" से कहि ओ एहि नश्वर शरीरकेँ त्याग कए देलथि। हुनकर आकस्मिक मृत्युसँ हमर माए बहुत दुखी भेलीह । ओ अन्न-जल त्यागि देलीह आ कतबो केओ मनओलक नहि मानलीह । तीनमास धरि बिना अन्न-जलकेँ रहलीह । ई बात इलाकामे पसरि गेल । लोकक करमान लागि गेल । सभ एतबे कहए-

"एहि समयमे एहन लोक भेटब मोसकिल ।"

कतबो केओ आग्रह केलक ओ टस सँ मस नहि भेलीह आ कार्तिक शुक्ल त्रयोदशीक प्राण त्यागि देलीह। एहि तरहें थोड़बे दिनक भीतर हम अपन माता-पिताक छत्र-छायासँ दूर भए गेल रही । "

" ई तँ बड़ अनर्थ भेल ।"-आचार्यजी बजलाह ।

जयन्तक आँखि नोरसँ भरि गेल । ओ किछु बजबाक स्थितिमे नहि रहथि ।

"जखन ई हाल छल तँ गाम की करए अएलहुँ? ओतहि भने आश्रमेमे छलहुँ । कालीकान्त से ओतेक आग्रह केलाह। ओतहि रहि अपन अध्ययन-अध्यापनक काजमे लागल रहितहुँ।"-आचार्यजी पुछलखिन ।

हुनकर बात सुनि कए जयन्तक छाती फाटि गेलनि । ओ ठोह पाड़ि कए कानए लगलाह । आचार्यजी बहुत असमंजसमे पड़ि गेलाह । अफसोच होमए लगलनि जे बेकारे ओहि बातसभक चर्चा केलहुँ । "जयन्त स्वयं विद्वान छथि। अपन नीक-बेजाएक बारेमे सोचि सकैत छथि । मुदा आब की कएल जाए?"-ओ सोचथि ।

बैद मधुकान्त एतेक कालधरि चुपचाप सभटा देखैत-सुनैत रहथि। हुनका आओर नहि रहल भेलनि ।

"अहाँ हमरे ओहिठाम चलू । ओतहि अहाँक सेवा होएत।"

"हम कतहु नहि जाएब । हमरा सोझे पाठशालापर लए चलू । ओतहि हमरा शांति भेटत ।"

"ठीक छैक । हमसभ ओतहि चली।"-आचार्यजी बजलाह ।

जयन्त पाठशाला लग पहुँचितहि माटिपर दण्डवत भए प्रणाम करए लगलाह । अपन पूर्वजक एहि कृतिक जीर्णोद्धार करबाक हेतु ओ कहिआसँ सोचि रहल छलाह । जानकीधाममे शारदाकुंजमे विद्या ग्रहण करैत दिन-राति ओ एतबे चिंतामे लागल रहैत छलाह । जयन्तक कतेको पुस्त एहीठाम विद्यादान करैत जीवन बितओने रहथि। संयोग एहन भेल जे जयन्तक पिताक देहांतक बाद पाठशालाक गतिविधिमे विराम लागि गेल । जयन्त ओहि समय नेने रहथि । तेँ किछु नहि कए सकलाह । पाठशाला किछु शिष्यसभ यथासाध्य प्रयास केबो केलनि । मुदा ओ चलल नहि। अंततोगत्वा, पाठशाला बंद भए गेल । विद्यार्थी लोकनि यत्र-तत्र चलि गेलाह । आइ सालों बाद ओहिठाम जयन्त अपन आचार्यक संग आएल छथि, सेहो केहन स्थितिमे । आँखि साफे मुनल छनि । चारूकात अन्हारे-अन्हार पसरल बुझाइत छनि । मुदा

ताहिसँ की? हुनकर अंतर्मनक ज्योति बहुत प्रखर अछि । हुनका एहिठाम आबि बहुत गौरवक बोध भए रहल छलनि ।

"आचार्यजी क्षमा करब । हम तँ अपनेकेँ बहुत कष्ट दए देलहुँ । अपनेक स्वागत की करब उल्टे अहीं हमर सेवा करएमे लागल छी ।"

"एहि हेतु अहाँ चिंता नहि करू । बैदजी कहैत छथि जे अहाँक आँखिक ज्योति वापस भए सकैत अछि। हमरा विचारसँ सभसँ पहिने तकर प्रयास कएल जाए । शेष काज होइत रहत ।”

जयन्त किछु नहि बाजि सकलाह ।

"सही कहि रहल छथि आचार्यजी । हम मास दिनक भीतरे अहाँक नेत्रमे ज्योति आनि कए रहब ।”-बैद मधुकान्त बजलाह ।

जयन्त चुप रहि मौन स्वीकृति देलखिन । दोसरदिन भोरेसँ बैदजी हुनकर इलाज प्रारंभ केलनि ।

१३

बैद मधुकान्तक उपचार कारगर सिद्ध भेल । मास दिन बीतैत-बीतैत हुनकर दुनू आँखिक ज्योति वापस भए गेल । जयन्तक प्रसन्नताक अंत नहि छल । आब हुनका विश्वास भेलनि जे ओ अपन पूर्वजक ऋण चुका सकताह । कठोर परिश्रमसँ अर्जित विद्याक उपयोग समाज कल्याण हेतु कए सकताह । मासदिनसँ ओ कतहु गेल नहि रहथि ने हुनकासँ ककरो भेंट करबाक अनुमति रहैक। बैदक कहब रहनि जे इलाजक समयमे हुनका मानसिक

तनावसँ बचाएब बहुत जरूरी अछि । तेँ बहुत संयमपूर्वक हुनका रहए पड़लनि ।

मासदिनसँ आचार्यजी सेहो एतहि रहथि । जयन्तकेँ ओहिना छोड़ि कए चलि जाएब हुनका उचित नहि बुझानि । मुदा ओतहु आश्रमक काजसभ हुनके पर चलैत छल । समादपर समाद अबैत रहल । संगे जे हुनका संगे आएल छात्रलोकनि सेहो वापस जएबाक हेतु व्याकुल रहथि । अंततोगत्वा,ओ लखनपुरसँ बिदा हेबाक इच्छा प्रकट केलनि ।

" कालीकान्त सेहो कए बेर समाद दए चुकल छथि । आश्रमक स्थिति से गड़बड़ा रहल अछि । तेँ आब हमरा जएबाक अनुमति दिअ।"-आचार्यजी जयन्तसँ कहलखिन । जयन्त की बजितथि? ओ तँ आचार्यजीक उपकारसँ दबल छलाह । तैओ कहलखिन-

"आचार्यवर! अपनेक चलि गेलाक बाद तँ हम सरिपहुँ अनाथ भए जाएब । माता-पिताक देहावसानक बाद अपनहि हमरा शरण देलहुँ, एहि योग्य बनओलहुँ जे हम आइ छी । मुदा अपनेक ऋण तँ ठामहि अछि, ओकर एकहु अंश हम नहि चुका सकलहुँ आ अहाँ आब वापसो जा रहल छी ।"

"जयन्त ई संसार छैक । एहिठाम आवागमन लागल रहैत अछि । केओ सभदिन ककरो संगे नहि रहि सकैत अछि । हमरा लोकनिकेँ ईश्वरक एहि नियमकेँ स्वीकार करबाक चाही । हमरा विश्वास अछि जे अहाँ अपन कौलिक मर्यादाक अनुकूल एहि पाठशालाकेँ फेरसँ सशक्त करबामे पूर्ण सफल होएब । हमरा लेल एहिसँ पैघ प्रसन्नताक गप्प आओर की भए सकैत अछि?"

"हमरा तँ अपनेक बिना एको डेग ससरब मोसकिल बुझा रहल अछि । आचार्यवर! हम जे किछु छी आ जे किछु एखन धरि कए सकलहुँ से अहींक कृपा थिक । आब तँ किछु फुरा नहि रहल अछि जे केमहर जाइ। यद्यपि अपनेक आशीर्वाद आ बैदजीक अथक प्रयाससँ हमर नेत्रक ज्योति वापस भए गेल अछि । मुदा ...."

"मुदा की? अहाँ तँ परमविद्वान आ ज्ञानी छी । स्वयं अपन मार्ग प्रशस्त कए सकैत छी आ करबे करब। फेर हम कतहु अन्यत्र थोड़े जा रहल छी । शारदाकुंज तँ अपनेकेँ सतत स्वागत करबाक हेतु तत्परे रहत ।"

"बहुत मोसकिलसँ शोधग्रंथ बँचि सकल । एहिठाम एकर रक्षा के करत? कहीं ओ दुष्टसभ एतहु पछोड़ केलक तखन ?"

"बेसी चिंता नहि करू । समय अपन समाधान स्वयं करैत अछि ।"

एतेक गप्प केलाक बादो जयन्तक चित्तमे चिंता रहबे करनि । हुनका चिंतित आ उदास देखि आचार्यजी पुछलखिन-

"अहाँक चिंताक कारण किछु आओर बुझा रहल अछि जे अहाँ प्रकट नहि कए रहल छी ।"

"संकोचवश नहि कहि पाबि रहल छी आचार्यवर!"

"हमरा-अहाँक संवंधमे संकोच कहिआ पैसि गेल? अपन मोनक गप्प कहब नहि तँ हमसभ बुझबैक कोना?समाधान होएत केना?"

"हम शीला लए कए बहुत दुखी छी । ओ हमर बालसखा थिकीह । गाम अएला मासदिनसँ बेसी भए गेल । मुदा आइधरि ई नहि बुझि सकलहुँ जे ओ की हालमे छथि, छथिहो कि नहि छथि?"

"हम बैद मधुकान्तसँ एहि विषयपर कैकबेर चर्चा करबाक प्रयास केलहुँ परंतु आ बात कैं कतहु दोसर दिस घुमा दैत छलाह । कहि नहि ओ एना किएक करैत छलथि?”

“हमरा शीलाक प्रति अहाँक जिज्ञासा बूझल अछि। तेँ हम बहुत चेष्टा केलहुँ जे सही सूचना अहाँकेँ दी । मुदा से संभव नहि भेल । गामोक लोकसभ एहि प्रश्नपर मौन भए जाइ छथि । कहि नहि एहन कोन बात छैक जे ओ सभ हमरा कहबासँ बँचि रहल छथि । मुदा अहाँ धैर्य राखू। आब तँ गामेमे रहब । सभबात अपने पता लागि जाएत ।"

"पता लागए जोकर हेतैक तखन ने? नाना प्रकारक अनिष्टक आशंका भए रहल अछि । अन्यथा बैदजी एना चुप्प किएक रहितथि?"

"बात जे होइक । मुदा अहाँसन विद्वान ओ विवेकी पुरुषकेँ उद्वेलित भेनाइ उचित नहि अछि । ई जीवन ईश्वरक वरदान अछि। से बूझि जे परिस्थिति अछि ओहीमे अपन आओर समाजक उद्धार करबे उचित अछि।"

आचार्यक बात सुनि जयन्त किछु आश्वस्त भेलाह।

शोधग्रंथक सुरक्षा लए कए आचार्य सेहो चिंतित रहथि । मुदा ओहिठाम रहिओ कए ओ की कए लितथि? जानकीधाममे तँ सभगोटे रहबे करथि तथापि की भेल?

तरह-तरहसँ जयन्तकेँ बुझा-सुझा कए आचार्यजी अपन शिष्यसभक संगे जानकीधाम हेतु प्रस्थान केलाह। गामक के कहए इलाकाक लोक आबि कए हुनकासभकेँ गामक सीमानसँ बहुत दूर धरि अरिआति देलक। केओ वापस हेबाक हेतु तैयारे नहि होइत

छल । जयन्तक तँ बाते छोड़ू । ओ तँ नेना जकाँ कानि रहल छलाह। हुनकर आँखिसँ निरंतर नोर झहर-झहर खसि रहल छल।

धारक पार होइतहि आचार्यजी शिष्य संगे आगू बढ़ि गेलाह। गामक लोकसभ सेहो लौटि गेलाह । जयन्त अखनहु धारक कातेमे बैसल रहथि ।

१४

जहिना-जहिना जयन्तक आँखिक ज्योति वापस आबि रहल छल,तहिना-तहिना हुनका पाठशालाक काज आगू करबाक चिंता जोर पकड़ने जा रहल छल । कहबी छैक जे मनुक्ख सोचैत अछि किछु आ विधाता करैत छथि किछु । से नहि होइतैक तँ भगवान राम सन महान व्यक्तिकेँ दुर्गति किएक होइतनि? कालि भेने हुनका राजगद्दी हेबाक छल ,ओ चक्रवर्ती राजा होइतथि । मुदा भावी प्रबल । कहाँसँ कैकेयीकेँ कुबुद्धि सबार भेलनि आ सभटा खिस्से पलटि गेल । राजगद्दीके बदला हुनका चौदह बरखक वनबास जाए पड़ल।

आचार्यजीकेँ चलि गेलाक बाद ओहुना जयन्तक मोन उदास छलनिहे । सोचलाह जे पाठशालाक काजमे लागि जाएब तँ मोन हल्लुक भए जाएत । अस्तु,एहि बातकेँ कार्यान्वयन करबाक हेतु औ सौंसे गामक लोकसभकेँ बैसार केलाह । बैसारमे ओ किछु कहितथि ताहिसँ पहिने हुनकर पितिऔत सुधाकर चिचिआ उठलाह-

"कतए कहाँसँ एतेक दिनपर गाम घुरलाह । आब तरह-तरहक फदकासभ पढ़ि रहल छथि। अहाँसभ हिनकर बात पर नहि जाउ ।"

सुधाकर बेस मोट-सोट कदकाठीक व्यक्ति छलाह । जँ एकबेर ककरो एक चमेटा मारि देथि तँ उठि कए पानि पीबाक होस नहि रहतनि । हुनका संगे चारिटा लठैत सदिखन रहैत छल । लग-पासमे जकरा ककरो कोनो फसाद करबाक होइक तँ सुधाकर लग पहुँचैत छल । हुनकर लठैत सदिखन तैयारे रहैत छल । सुधाकरके एना बमकैत देखि गौंवा सर्द भए गेलाह । सभ एक-दोसरक मुँह ताकि रहल छलाह । केओ किछु नहि बाजए । हारि कए बैद मधुकान्त बजलाह-

"तूँ की कहए चाहैत छह?"

"अहाँ अनेरे टपर -टपर नहि करू । अहाँ अपन घर सम्हारि लिअ सएह समाजक बड़का उपकार होएत।" सुधाकर जे से बजैत रहलाह आ केओ हुनका किछु नहि कहि सकल । बैदजी किछु बजबाक साहस केलाह तँ हुनके पाछू पड़ि गेल ।

"बिना बात बुझने तोरा एना बाजब उचित नहि अछि । जयन्त विद्वान छथि आ पाठशालाक माध्यमसँ समाज सेवा करए चाहैत छथि । एहिमे तमसेबाक कोन बात भेलैक?"

"जतबे बुद्धि अछि, ततबे बाजू । ई बैदगिरी नहि थिकैक जे कोनो लेप लगा देबैक आ घाव ठीक भए जेतैक । आखिर पाठशाला बनतैक कतए? पहिने से तँ फड़िछाए?"-सुधाकर मोछपर ताव दैत बजलाह ।

एतेक बजितहि सुधाकर इसारा केलथि । औ बाबू! चारू लठैत बैद मधुकान्तकेँ घेर लेलकनि । ओहिमे सँ एकटा हुनकर गट्टा

पकड़लक ,दोसर डाँड़क धोती धेलक ,तेसर फाँढ़ बन्हैत चेतौनी देबए लागल-

"चुप रहबह की......"

"ई सभ करबाक कोनो काज नहि छैक । बैदजी बुधिआर लोक छथि । तूँ सभ कात भए जाह ।"-सुधाकरक बात सुनि लठैतसभ बैदजीकेँ छोड़ि देलक । मुदा माहौल ततेक गरमा गेल छल जे जयन्त स्वयं ओहि बैसारसँ उठि गेलाह । सभा बिना कोनो विमर्शकेँ स्थगित भए गेल ।

१५

साँझमे सुधाकर चारू लठैतक संगे पाठशाला लग पहुँचलाह । पाठशाला तँ ओ नामेक छल । फूसक बनल ओकर चार खसबा हेतु उद्यत छल । कतेको सालसँ ओकर देख-रेख नहि होइत छल । पुस्तकालयक स्थानपर तरकारी रोपल छल । सजमनि,कदीमा,रामझिमनी ,टमाटर,कोबी सभ तरहक तरकारीक समावेस केने छलाह । सुधाकरक सालभरि तरकारी ओहिठामसँ उपजि जाइत छलनि । कागजी नेबोक गाछ ततेक झमटगर छल जे सौंसे साल नेबो अपनो खाइत छलाह आ हाटपर बेचितो छलाह । कोनपर टाभनेबोक गाछमे बड़का-बड़का टाभनेबो फड़ल छल । असलमे जहिआसँ जयन्त गाम अएलाह आ ओहि पाठशाला लग रहए लगलाह तहिएसँ सुधाकर परेसान छलाह । हुनका मोनमे तरह-तरहक बातसभ घुमए लगलनि ।

"केहन बढ़िआँ जानकीधाममे पढ़ैत-लिखैत छलहुँ । एहिठाम की राखल छैक जे अनेरे अपसियाँत भेल छी ।"-सुधाकर बजैत छथि ।

जयन्तसँ जेठ छलखिन सुधाकर । दुनूक पिता सहोदरे भाए रहथि । जयन्तकेँ गामसँ चलि गेलाक बाद पाठशालाक जमीनपर सोलहो आना हक सुधाकरक कायम भए गेल रहनि । एहिमे आब जयन्त एतेक दिनक बाद आबि कए बाधा करथि से हुनका कोना नीक लगितनि?

सुधाकरक व्यवहारसँ जयन्तकेँ ततेक कष्ट भेलनि जे ओ गुम्म पड़ि गेलाह । तरवनसँ पेटकुनिआ देने पड़ल रहथि । बिना किछु खेने-पीने सौंसे दिन बीति गेल । तकर कोनो चिंता सुधाकरकेँ नहि भेलनि । ओ तँ पाठशालाक जगह पर अपन कब्जा कायम रखबाक हेतु व्यग्र रहथि । सुधाकरक बाजब सुनि जयन्त छगुंतामे रहथि । बकर-बकर हुनका देखैत रहि गेलाह । ताबतेमे पानि होमए लगलैक । पाठशालाक घर तँ बुझू खसले छल । कोनपर नान्हिटा चार बाँचल छल जाहिमे कैकटा सोंगर लागल छल जाहिसँ ओ कहुना कए लटकल छल। तकरे तरमे जयन्त आइ एकमाससँ पड़ल छलाह । एकहु बेर सुधाकर हाल-चाल लेबए नहि अएलाह। ई सुनिओ कए जे हुनका आँखिमे समस्या छनि ओ हटल-हटल रहलाह । मुदा जखन पाठशाला हेतु बैसार भेल तँ ओ समस्त पुरषार्थसँ प्रकटे नहि भेलाह,अपन लठैतक सहयोगसँ बैसारमे हड़बिड़रो मचा देलाह ।

जयन्त सपनोमे नहि सोचि सकल रहथि जे हुनकर पैतृक स्थानमे बनल पाठशाला पुनर्निर्माण करबाक हुनक प्रयासमे सभसँ पैघ बाधक हुनके पितिऔत सुधाकर भए जेताह । मुदा स्वार्थमे लोक आन्हर भए जाइत अछि । फेर जखन अनकर संपत्ति भोगबाक आदति पड़ि जाउक तँ ओहिपरसँ बेदखल होएब बहुत कष्टकारी भए जाइत अछि । जयन्तक पिताक हिस्सामे

पाठशालाक अतिरिक्त पाठशालासँ सटले मात्र पाँच कठ्ठा जमीन रहनि । ओहीसँ ओ सालभरि गुजर करैत छलाह । कहिओ ककरोसँ किछु याचना करब हुनक स्वभावमे नहि छल । सुधाकर पाठशाला आ लगीचक जमीन कतेको सालसँ कब्जा कए लेने रहथि । पाठशालाक जगहपर एकदिस माल-जाल बान्हल करथि । खाली जगहमे तिमन-तरकारी उपजाबथि । मुदा सुधाकरकेँ आब बड़का चिंता भए गेल रहनि । "कहुना कए जयन्तक झञ्झटि खतम होअए तँ चैन होइ ।"-सुधाकर सोचल करथि ।

सुधाकरके लठैतक संगे आएल देखि जयन्तकेँ किछु नहि फुराइनि । ओ अबाक भेल चार दिस देखैत रहि गेलाह ।

“आइ नौ-छऔ कइए लेब । एही पार की ओही पार । विद्वान छथि तँ अपना घरमे । हमरा ताहिसँ की मतलब? पढ़ि - लिखि कए नव-नव झञ्झटि बेसाहि रहल छथि । ई कोन नीक बात भेलैक?"-सुधाकर मोने-मोन सोचथि । जखन जयन्त किछु नहि बजलाह तँ सुधाकर तमसाइत बड़बड़ाइत चलि गेलाह-

"कान खोलि कए सुनि लएह । ई संपत्ति हमर अछि । बाबा मरैत काल साफ कए गेल रहथि जे ई सभटा चीज-वस्तु सुधाकरकेँ हेतनि । स्टाम्पपेपरपर सभटा लिखि गेल छथि । ताहिपर जे तूँ अनुचित प्रयास करबह से नहि चलतह।"- से कहि सुधाकर लठैतसभक संगे बाहर भए गेलाह ।

जयन्त टुकुर-टुकुर देखैत रहलाह । सुधाकर अपन लठैत सभक संगे आगू बढ़ि गेलाह ।

"अहाँ कही तँ एकरा एकहि बेरमे धारक पार फेकि आबी ।"-एकटा लठैत बाजल ।

"एकर सही इलाज तँ हमरा लग अछि ।-दोसर लठैत बाजल।

"हमरा तँ होइए जे भोर होइत-होइत ओ अपने साफ भए जाएत । ककरो किछु करबाक काज नहि पड़त ।" -तेसर लठैत बाजल ।

"से की?"

" देखैत नहि छहक । ई चार कखनो खसि सकैत छैक । जयन्तकेँ लेने-देने साफ ।" -चारिम लठैत बाजल ।

"तूँ सभ सभदिन मूर्खे रहि गेलह । हमरा जयन्तसँ की मतलब अछि । जीबए-मरए, जतए जाए । हमर चीज-बस्तुपर सँ हटि जाए । बेसी लफरासँ कोन मतलब?"-सुधाकर बजलाह ।

एहिना गप्प-सप्प करैत ओसभ चलि गेलाह । जाइत-जाइत अपन-अपन लाठी जोर-जोरसँ पटकैत जयन्त दिस आँखि तरेरैत पाठशालाक चारक एकटा सोंगर हटा देलक ।

कहुना कए लटकल ओ चार आओर एकहाथ आगू ससरि गेल । बीचक फाँकसँ पानि झहर-झहर खसए लागल । जयन्त अखनो ओही चार तर बैसल रहथि । दोसर कोनो उपाय नहि छल। चारसँ खसैत वर्षाक पानिसँ सौंसे देह भिजि रहल छल ।

१६

सुधाकर चारू लठैतक संगे अपन दरबाजापर पहुँचलाह । हुनकर वयोवृद्ध पिता भाङ घोटि रहल छलाह। तकरबाद पोखरि दिस जाथि । ओ अनकर हाथक घोंटल भाङ कहिओ नहि पीबैत छलाह ,संतोखे नहि होइत छलनि । भाङ पीलाक बादे ओ पोखरि

दिस जाथि आ ओमहरेसँ महादेव स्थान चलि जाथि । सायंकालक चारि-पाँचटा बूढ़सभ ओतए नियमित एकत्र होइत छलाह । गप्प-सप्प होइत । महादेवक आरती होइत । तखनसभगोटे मिलि कए नचारी गबितथि । तकरबाद अपन-अपन घर वापस चलि अबितथि।

सुधाकर दरबाजापर अबितहि हुनकापर चिचिआएल-

"कहैत रही जे पाठशालाक जगहपर घर बना लिअ । मुदा अहाँ ध्यान नहि देलहुँ । आब ओ लफङ्गा कहाँसँ घुमैत-फिरैत आबि गेल अछि । ओहिठाम फेरसँ पाठशाला बनाओत । हम ई बात कदापि नहि होमए देबैक, चाहे जान रहए की जाए ।"

"मुदा ओ जगह तँ पाठशालेक थिकैक । तोरा ओहिमे भाङठ नहि करक चाही ।"

"अहाँक तँ बुद्धिए भ्रष्ट भए गेल अछि । जखन अहाँ अपने एना बजबैक तँ अनकासँ की उम्मीद कए सकैत छी? सौंसे गाम हमरा संगे ठाढ़ अछि । हुनका एकटा गबाह नहि भेटतनि ।"

"ई गामक विषय नहि थिक । जयन्त महाविद्वान छथि आ हुनकर आदर हेबाक चाही । फेर ओ कोनो व्यक्तिगत काज हेतु ओहि जमीनक उपयोग नहि करए चाहैत छथि ।

"हम किछु सुनबाक हेतु तैयार नहि छी । अहाँ सभदिन हमरा सभकेँ बिलटा कए रखलहुँ । ई पूर्वजक देल घराड़ीक जमीन अछि । हम किन्नहु एकरा ककरो नहि देबैक ।"

"हौ तूँ एतेक तमसाइत किएक छह? हमरा जयन्तसँ गप्प करए दएह । कोनो समाधान हेबे करतैक ।"

"से जकरासँ गप्प करबाक होअए से करैत रहू । मुदा समाधान एतबे भए सकैत अछि जे ओ जमीन हमर अछि आ हमरे

रहत । यदि अहाँ किछु उलट-पलट करब तँ बेटासँ हाथ धो लेब, किछु उम्मीद नहि राखब । बात जानी साफ।"

सुधाकरकेँ एना बजैत सुनि देवीकान्त ठामहि अड़रा कए खसलाह । चारू लठैत दौड़ल। गाममे चारूकात हल्ला भए गेल । लोकसभ किदनि-किदनि बाजए लागल । महादेव मंदिरपर नचारीक समय भए गेल छल । देवीकान्त नहि अएलाह?" -हुनकर संगीसभ सोचैत रहथि, ताबे केओ बाजल-

"ओ तँ दरबाजापर बेहोस पड़ल छथि ।"

"की भेलैक?"

" सुनबामे आएल जे सुधाकर बहुत फज्जति केलकनि ।"

बूढ़ासभ नचारी बीचेमे छोड़ि देवीकान्तक हाल-चाल लेबए बिदा भेलाह । गाममे सभकेँ अपसियाँत देखि जयन्तक ध्यान सेहो ओमहर गेलनि ।

"की बात छैक? अहाँसभ एना परेसान किएक छी?"- जयन्त पुछलखिन ।

"अहाँक पित्तीकेँ किछु भए गेलनि अछि । सएह सुनि लोकसभ दौड़ रहल अछि ।"- एकटा युवक बजलाह ।

"भेलैक की?"

"कहि नहि सकैत छी? ओतए गेनहि पता लागि सकैत अछि।"-दोसर युवक बजलाह ।

जयन्त अध्ययन कए रहल छलाह । सभकिछु छोड़ि दौड़लाह ।

हुनकर पित्ती देवीकान्तकेँ ताबे होस आबि गेल रहनि । किछुगोटे हुनका घेरने अखनहु बिअनिसँ हबा कए रहल छलाह । किछु गोटे लग-पासमे बतिआ रहल छलाह । सुधाकर सेहो अपन

लठैतसभक संगे किछु विमर्शमे लागल छलाह कि जयन्त हड़बड़ाएल ओतए पहुँचलाह । दरबाजापर लोक करमान लागल छल । जयन्तके देखितहि सुधाकर बजैत छथि-

"सभटा झंझटिक जड़ि तूँ छह । तोरे कारण बाबूकेँ ई दशा भेलनि । ने तूँ गाम अबितह, ने ई फसादसभ होइत ।"

जयन्त की बजितथि? ओ देवीकान्त लग पहुँचि हुनका प्रणाम केलथि । ताबे हुनका होस आबि गेल रहनि ।

"की भेल काका?"

"किछु नहि, चक्कर आबि गेल छल । आब ठीक छी ।"-देबीकान्त बजलाह । ताबे सुधाकर ओहिठाम ससरि कए आबि गेलाह । हुनका मोनमे अरवनो शंका रहनि जे कहीं हुनकर पिता जयन्तक बात मानि ने लेथि। कारण हुनका ई बात बूझल रहनि जे हुनकर पिता पाठशालाक समर्थक छथि ।"

"तोरे चलते ई दुखित पड़लाह। ने तूँ पाठशालाक चर्चा उठबितह ने हिनकर मोन खराब होइत ।"-सुधाकर बजलाह ।

"से की?"

"बेसी चलाक नहि बनह । तोरा बूझल छह जे पाठशालाक जमीन हमरासभक हिस्सामे आबि गेल अछि सेहो कहि नहि कहिआसँ, तरवन ओहिपर पाठशाला बनेबाक चर्चा करबाक की औचित्य छल?"

"मुदा पाठशाला बनतैक कतए? ओ जगह तँ कतेको पुस्तसँ पाठशालाक रहल अछि ।"

"जे छल से छल । आब ओ पाठशालाक जगह नहि अछि। हमरा लोकनिक घराड़ी अछि । ई बात तोरा बूझक चाही।"

सुधाकर आ जयन्तमे चर्चा होइत सुनि लग-पासमे बहुत लोकसभ जमा भए गेल । मुदा केओ किछु नहि बाजए । ककरो साहस नहि रहैक जे सुधाकरक गप्पमे टोकारा देत ।

"ई जमीन पाठशालाक थिक । मुदा ओहूसँ जरूरी अछि जे काकाक जान बाँचनि । अखन अहाँ हुनका अस्पताल लए जाउ । हुनकर नीकसँ इलाज कराउ । तकरबाद आओर बात सभ पर चर्चा हेतैक । ने हम कतहु जा रहल छी, ने अहीं । तखन परेसानीक की बात छैक? दुनूगोटे बैसि कए समाधान निकालि लेब ।"

"बेसी कबीलती नहि करह । आगि लगा कए आब पानि ढ़ाड़ए अएलाह अछि । नीक चाहैत छह तँ जानकीधाम वापस चलि जाह । जे फदका पढ़क होअ से ओतहि चैनसँ सँ पढ़ियह । ई गाम छैक । एहिठाम तोरासन ढोंगीक कोनो काज नहि छैक ।"

"पाठशाला अपन जगहेपर चलत .... ।" औ बाबू! ओ एतबे बाजल छलाह कि सुधाकर गहुमन साँप जकाँ छड़पल । ओकरा संगे ओकर लठैतसभ लाठी भाँजि रहल छल । सुधाकर जयन्तक नरेठी पकड़ि लेलनि । ई दृश्य देखि उतरबारिटोलक दूटा युवक कुदलाह ।

"खबरदार! बहुत भए गेल । आब जँ एक शब्द हिनका किछु कहबनि तँ गेल घर छी ।"

" तोहर ई साहस । सरेआम हमरा चुनौती देबैं । आबो सम्हरि जो । भाग एहिठामसँ, नहि तँ जान नहि बँचतौक ।"

सुधाकर लठैत सभकेँ इसारा केलक । लठैत सभ दुनू युवक दिस बढ़ल । ताबे उतरबारिटोल दिस सँ लोकक हुजुम लाठी,भाला ,गराँस ,बरछी लेने ओहि दुनू युवकक समर्थनमे आबि गेल ।

सुधाकर आ ओकर समर्थक लठैतसभ सर्द भए गेल ।

"एहन हेतैक, से नहि सोचने रहिऐक ।"-सुधाकरक लठैत बाजल ।

"रे कायरसभ! एहीलेल तोरासभकेँ घी पिया-पियाक पोसने छी जे संकट देखितहि हाथ ठाढ़ कए देबैं।"-सुधाकर बाजल।

"बेसी फटर -फटर नहि करह । जल्दीसँ पाठशालाक बात मानि लएह नहि तँ.... ।"-दुनू युवक बाजल।

"तूँ सभ के छह? हमर दिआदी लड़ाइमे किएक हस्तक्षेप कए रहल छह?-सुधाकर पुछलखिन ।

"हम सभ एही माटि-पानि केँ छी । मुदा अहाँ जकाँ स्वार्थे आन्हर नहि भए गेल छी ।

"से की?"

"ईहो कहबाक काज छैक? पाठशाला कोनो नव नहि बनि रहल छैक । कैक पुस्तसँ ई चलि रहल छल । बीचमे संयोगसँ बंद भए गेलैक । जयन्त सन विद्वान एकरा फेरसँ चलबए चाहैत छथि तँ तोरा की परेसानी छह?"

उतरबारिटोलक समस्त युवकमंडली गोविंद आ माधवक संग सहमतिमे बाजए लागल । ओकरासभक अबाज सुनि दछिनबारिटोलक लोकसभ सेहो जय जयन्त!जय जयन्त! करए लागल । माहौल गरमाइत देखि जयन्त स्वयं सभकेँ बुझबैत कहलखिन-

" शांत होइत जाउ । पाठशाला तँ समाजक चीज छैक । सभक इच्छा छैक तँ बनबे करतैक । हम तँ अपन जीवन एही हेतु

उसरगि चुकल छी । काकाजी बहुत अस्वस्थ छथि । फिलहाल सभसँ पहिने हुनकर इलाज कराओल जाए ।"

"हम आब पूर्ण स्वस्थ छी ।"-देवीकान्त बजलाह ।

"हमहूँ पाठशालाक पक्षमे छी । ओएह हमर सही इलाज अछि । जयन्त कौलिक मर्यादाक अनुकूल काज कए रहल छथि। हम हुनकर समर्थन कए रहल छी ।"

हुनकर बात सुनि माहौल एकदमसँ बदलि गेल । जयन्तक आग्रहपर सभगोटे अपन-अपन घर दिस बिदा भेलाह । सुधाकर चोटाएल साँप जकाँ अपन पिता दिस देखलथि आ बिना किछु बजने लठैतसभक संगे मोछ फरकबैत ओहिठामसँ प्रस्थान कए गेलाह ।

१७

एकटा समय छलैक जे उतरबारिटोलक लोकसभ दछिनबारिटोलक गिरहथसभक ओहिठाम हर जोतैत छल,जन-बनिहार रहए ,घरसँ लए कए बाहरधरिक सभटा काज करैत छलए आ बोनिक नाम पर जकरा जे भेटि जाइ,नहि भेटेक तैओ कोनो बात नहि । ककरो बाबा पाँचटा टका कर्ज लेने रहैत ,ताहि ऋणकेँ सधेबामे कैक पुस्तकक श्रम लागि गेल । मुदा कर्जा ठामहि छलैक। मुदा समयक चक्र बदलैत छैक,से बदललैक । आब ओ उतरबरिआ टोल नहि अछि । केओ दछिनबारिटोलक जन-बनिहार नहि अछि। ओहि टोलमे बीए-एमए पास लोक छैक । मास्टर,अफसर,की-की ने बनि गेल छैक छौंड़ासभ। तेँ ने ओहि दिन जखन पाठशालाक विवाद भेलैक तँ ओहिटोलक युवकसभ छढ़पि कए जयन्तक समर्थनमे आबि गेल । जयन्तक पितिऔत

लठैतक सहयोगसँ ओहि जगहकेँ किन्नहु छोड़बाक हेतु तैयार नहि छल। ताहि हेतु ओ अपन वयोवृद्ध पिताक अवहेलना करबामे सेहो बाज नहि आएल । आब सोचिऔक जे भेलैक ने परिवर्तन । मुदा जहिना उतरबारिटोलक लोकसभकेँ विकास भेलैक तहिना दछिनबारिटोलक लोकक गर्त दिस बढ़ि रहल अछि । साँझ होइत देरी सौंसे टोल तारीक दुर्गंधसँ महमह करए लगैत अछि । किछु बूढ़सभ महादेवक मंदिरपर शरण लेने रहैत छथि , कोनो आओर समाधानो नहि छनि । किछु गोटे जे अखनहु सक्षम छथि से सुधाकर सन लंठक आगू सकदम छथि। कहुना कए समय बिता रहल छथि ।

जयन्त नहि सोचि सकलथि जे हिनकर मातृभूमि एतेक बदलि गेल हेतनि । फेर हुनका ककरोसँ किछु लेबाक नहि रहनि । ओ तँ अपन ज्ञान समाजकेँ बिना कोनो लोभ-लालचकेँ बितरित करए आएल छथि। ताहि हेतु एकटा स्थान चाही । पाठशाला पूर्वहिसँ स्थापित छल । ओ तकर गौरवकेँ आगू करए चाहैत छलाह। मुदा हुनकर जानकीधाम प्रवासक अवधिमे एतेक घटना-दुर्घटना भए गेल अछि से ओ की जाने गेलाह? जन्मभूमिक निःस्वार्थ सेवा करबाक हार्दिक इच्छासँ ओ कालीकान्तक आग्रहकेँ अस्वीकार कए देने रहथि । ताहि बातक हुनका कोनो दुख नहि रहनि । मुदा जखन अपने पितिऔतकेँ एना हिंसक भेल देखि रहल छथि तँ दुखी होएब स्वभाविके।

ओहि दिनक फसादक बाद ओ पाठशाला आबि कए मौन भए गेलाह। तकरबादसँ केओ किछु पुछनि ओ बजबे नहि करथि। ई समाचार सुनि सुधाकर बहुत प्रसन्न रहथि ।

" अहाँ तँ अनेरे चिंता करैत रहैत छी । एक इसारा दिऔक हमसभ एकरा जानकीधाम पहुँचा देबैक । ककरो हबो नहि लगतैक।"-एकटा लठैत बाजल ।

"हमसभ जानकीधाम पहुँचेबाक कोनो ठेका लेने छिऐक। जतए जएबाक होनि ततए जाथु । मुदा पाठशालाक लफड़ा छोड़थु।"-दोसर लठैत बाजल ।

"मुदा उतरबारिटोलबलासभ जे टपर-टपर कए रहल अछि, तकर की करबहक?"-तेसर लठैत बाजल।

"हमरा हिसाबे तँ ओ दुनू अगत्ती छौंड़ासभकेँ किछु सबक सिखाएब जरूरी अछि, नहि तँ करवनो उकबा उठि सकैत अछि।"-चारिम लठैत बाजल ।

ओकरा सभकेँ ठीक केनाइ आब आसान बात नहि छैक । पुलिस-थाना सभ ओकरेसभ दिस भए जाइत छैक । तोरासभक संग के देतह? सोचि विचारि कए काज करह । एहन ने होअए जे मुँहे भरे खसी ।"-सुधाकर बजलाह ।

"हमरा लगैत अछि जे जयन्त शीघ्रे जानकीधाम वापस चलि जेताह । बातो सही छैक, एहि गाममे आब की राखल छैक? एहिठाम शास्त्र पढ़निहार अछि के ? सभ तँ साँझ होइते तारी पीबि कए बमकए लगैत अछि,ताहिठाम हिनकर पोङापंथीकेँ ककरा काज हेतैक?"-सुधाकर बजलाह ।

"तखन कएल की जाए?"-पहिल लठैत बाजल ।

"तूँ सभ पता तँ लगाबै जे उतरबारिटोलमे की चलि रहल अछि? जाहि प्रकारसँ ओ दुनू छौंड़ा बाजि रहल छल ताहिसँ हमरा बहुत चिंता भए रहल अछि । कहीं पाठशालाक नामपर ओ सभ पुरना ओलि ने चुकाबए लागए ।"- सुधाकर बजलाह।

"ठीक कहि रहल छी । हमसभ ओमहरे जाइत छी, देखैत छी जे हबाक रुखि केमहर अछि?"-से कहि लठैतसभ उतरिबारिटोल दिस बिदा भेल ।

१८

उतरिबारि टोलमे पाकड़िक झमटगर गाछ छल । ओकरे छाहरिमे सौंसे टोलक लोकसभक बैसार छल। गोविंद आ माधव ओहि बैसारक अगुआ छलाह । ओना ओहिठाम कीर्तन करबाक हेतु साँझमे लोकसभक जुटान होइते रहैत छल । मुदा ओहि दिनक बात किछु विशेष छल । गोविंद आ माधव एकतुरिआ छलाह । इसकूलसँ लए कए कालेज धरि एकहि संगे पढ़लाह । एमए पास केलाक बाद नौकरी नहि करब ,समाजक सेवा करब ,ताहि बिचारसँ प्रेरित भए गाम वापस आबि गेलाह । एहन लोक कमे होएत जे भेल नौकरीकेँ लात मारि गाम-घर घुरि जाएत । मुदा ओ सभ से केलाह। गाम आबि तँ गेलाह, मुदा एहिठामक स्थिति तँ बहुत खराब रहैक। केओ ककरो सुनबाक हेतु तैयार नहि । सभ अपना-आपमे परिपूर्ण।

“गरीब छी तँ छी, मूर्ख छी तँ छी, हम ककर की बिगाड़ैत छिऐक? जे मोन होएत से करब । हम ककरो नौकर छिऐक की? हमरासभकेँ जे बुझबैत अछि से पहिने अपने घर सम्हारि लिअ तँ बुझबैक जे बहुत केलक।” तरह-तरहक फकरासभ लोक बजैत रहैत।

ई सभ सुनबाक हेतु गोविंद आ माधव पहिनहिसँ तैयार रहथि । गाम केहन होइत अछि से ओ सभ स्वयं देखने-भोगने रहथि। समाज सुधार करबाक हेतु सहनशीलता चाहबे करी । दस तरहक लोक छैक,सभकेँ मिला कए लए जएबाक हेतु धैर्य चाहबे करी । से सभ सोच-बिचारि कए दुनूगोटे गाम वापस आएल रहथि।

गोविंद आ माधवक सतत प्रयाससँ गाममे बहुत परिवर्तन भेल । लोकसभक शिक्षाक प्रति आकर्षण भेलैक । तरह-तरहक नव व्यवसाय लोक शुरु केलक । एहिसभसँ लोकसभक आर्थिक स्थितिमे सुधार भेल। गोविंद आ माधवक एहिमे बहुत योगदान रहलनि । जाहि कारणसँ उतरबरिआ टोलक लोकमे ओ सभ बहुत लोकप्रिय भए गेलाह।

पाठशाला ककरो व्यक्तिगत वस्तु नहि होइत अछि । फेर ई कोनो आजुक तँ अछि नहि । कैक पुस्तसँ इलाकाक लोक एहिठाम शिक्षा लैत रहलाह अछि । उचित तँ ई छल जे सुधाकर स्वयं एहि काजकेँ आगू करितथि। दछिनबारिटोलक लोकसभ हुनकर संग दैत । मुदा भेल उलटा । सुधाकर पाठशालाक जगहकेँ कोनो स्थितिमे छोड़बाक हेतु तैयार नहि छथि ,अपितु तरह-तरहक षड़यंत्र कए जयन्तकेँ गामसँ भगा देबए चाहैत छथि जाहिसँ ओ निश्चिंत भए हुनको हिस्साक खेत-पथारकेँ कब्जा कए सकथि । छैक ने अन्याय? फेर पाठशाला रहलासँ सभक फएदा हेतैक । गामेमे लोक उच्च शिक्षा प्राप्त कए सकत । जयन्त सन विद्वान व्यक्तिसँ शिक्षा ग्रहण करबाक नीक अवसरकेँ हमरा लोकनि हाथसँ नहि जाए देबैक । एहि हेतु हमसभ जानपर खेल सकैत छी ।"- गोविंद बाजल। माधव ओकर बातकेँ समर्थन करैत आगू कहलक-

"जाहि तरहें जयन्तकेँ अपने लोकसभ तंग कए रहल छनि ओ संपूर्ण समाजक हेतु कलंक बात अछि। अपसोचक बात अछि जे दछिनबारिटोलक लोकसभ मूकदर्शक बनल छथि ।"

"ओ सभ आब छथिहे कोन जोकर । तारी-दारूसँ फुरसति हेतनि तखन ने किछु आओर सोचताह।"-बैसारमे सँ केओ बजलाह।

"सत्य वचन ।"-दोसर गोटे बजलाह ।

"मुदा हमरा लोकनि चुप नहि रहि सकैत छी । ई नागबाबाक टोल अछि । ओ नागबाबा जे सौंसे जानकीधाममे अलख जगओने छथि। जयन्तक जान नागेबाबा बचओने छलाह।"-तेसर बाजल ।

"से केना?"-चारिम पुछलकैक ।

ई बात ककरा ने बूझल छैक । नान्हिएटामे जयन्त घरक परिस्थितिसँ तंग भए कए धारमे डुबए जाइत रहथि । संयोगसँ नागबाबा हुनका देखि लेलखिन आ बुझा-सुझा कए हुनका अपना संगे जानकीधाम लेने चलि गेलखिन । ओएह हुनकर नाम जानकीधामक प्रसिद्ध शारदाकुंजमे लिखओलथि । जँ नागबाबा नहि देखने रहितथि तँ कहि नहि जयन्तक की हाल होइत?"-पाँचम लोक बाजल ।

"तखन तँ जयन्तपर हमरा लोकनिक अधिकार सिद्ध अछि। ओ अपनसभक लोक छथि । हुनकर रक्षा अवश्य हेबाक चाही ।"

"एवमस्तु! "-सभ एकस्वरसँ बाजल ।

तकर बाद सर्वसम्मतिसँ प्रस्ताव पास भेल जे गामक युवकसभ पार लगा कए जयन्तक सुरक्षाक देखभाल करताह ।

हुनकर नित्यप्रतिक आवश्यकता हेतु गामेसँ व्यवस्था कएल जाएत। ईहो निर्णय भेल जे पाठशाला ओतहि चलत जतए चलैत रहल अछि। ताहि हेतु जे करए पड़तैक से कएल जाएत ।"

लठैतसभ सभटा समाचार सुधाकरकेँ देलकनि । सुधाकरक सिटीपीटी गुम्म छल ।

आब की कएल जाए?"-सुधाकर लठैतसभकेँ पुछलखिन।

"अहाँ चिंता नहि करू । हमरा लगमे एहि समस्यासभक सही इलाज अछि।"-एकटा लठैत बाजल।

"तँ बजैत किएक नहि छह?"-सुधाकर कहलक ।

"जयन्तक जान ओहि शोधग्रंथमे अछि । जँ ओकरा चोरा ली तँ जयन्त बताह भए जाएत, अपने गामसँ पड़ा जाएत वा भए सकैत अछि जे धारेमे कुदि जाए ।"-दोसर लठैत बाजल ।

"ई बात तँ हम पहिनेसँ बुझैत छी । हम तँ जानकीधाममे कहने रही जे शोधग्रंथ लेने चलू तँ अहाँसभ ज्योतिषीजीकेँ दए देलिऐक आ ओ पकड़ाओ गेल ।"

"जे बीति गेल, से गेल । आब की कएल जाए ताहिपर विचार करैत जाह ।"-सुधाकर बाजल ।

"एहिमे विचारबाक की छैक? जयन्तक सिरमासँ कहुना कए शोधग्रंथकेँ चोराएल जाए । फेर देखैत रहू तमासा ।"-तेसर लठैत बाजल ।

चारू लठैत आ सुधाकर एकमतसँ एहि प्रस्तावपर सहमत भेलाह ।

१९

ओहीरातिसँ उतरबारिटोलक युवकसभ पाठशालाक सुरक्षामे लागि गेलाह । मुदा ककरो ई साहस नहि भेलैक जे जयन्तकेँ सोझा-सोझी कोनो मदति देबाक गप्प करैत । भोजनक व्यवस्था हेतु बैसारमे चर्च भेल रहैक । मुदा ई बात सभकेँ बूझल रहैक जे जयन्त से मानताह नहि । सभकेँ ई आश्चर्य लगैक जे आखिर ओ एतेक दिनसँ गाममे छथि ,ककरोसँ किछु लए नहि रहल छथि तखन जीबि कोना रहल छथि? खाइतो छथि की नहि ?

"एहन ने होअए जे ओ अन्ने बिना प्राण त्यागि देथि । तखन तँ सभकिछु धएले रहि जाएत ।"-गोविंद बजलाह।

"मुदा कएल की जाए ? ओ ककरोसँ कोनो व्यक्तिगत समस्याक बारेमे चर्चो नहि करैत छथि । ककरो ओहिठाम जएबाक तँ प्रश्ने नहि उठैत अछि ।"-माधव बजलाह।

"किछु ने किछु तँ हमरोसभक कर्तव्य अछि कि नहि?"

"से तँ अछिए । मुदा तकर निराकरण कोना होअए? यदि हुनका से स्वीकार रहितनि तँ कालीकान्तक आग्रहे किएक नहि मानि लितथि जाहिसँ हुनका संपूर्ण सुख-सुविधाक होइतनि ।"

“से बात सही छैक । तथापि हमसभ काल्हि भोरे जा कए हुनकासँ प्रत्यक्ष गप्प किएक नहि कए ली?"

"एकदम सही कहलहुँ । काल्हि भोरे हमसभ पाठशाला चलब । अपना भरि प्रयास करब, आगू भगवानक इच्छा ।”

एहि तरहे गोविंद आ माधव आपसमे चर्च करैत छलाह । उतरिबारिटोलक लोकसभक सहानुभूति जयन्तक संगे एहूबात लए कए रहैक जे ओ नागबाबाक बहुत प्रियपात्र छलाह आ नागबाबा

तँ उतरिबारिए टोलक छलाह । ओहिटोलक लोक सदिखन जानकीधाम जा कए हुनकासँ मार्गदर्शन लैत रहैत अछि। ओ बेर-कुबेर गरीब-गुरबासभकेँ मदतिओ करैत छथिन ।

उतरबरिआटोलक बैसार आ ओहिमे लेल गेल एकतरफा निर्णयसभक जयन्तकेँ कोनो जानकारी नहि रहनि । भए सकैत अछि जे प्रात भेने गोविंद आ माधव एहिसभक चर्च हुनकासँ करितथि । मुदा सुरक्षाक प्रश्नकेँ टारब उचित नहि बुझेलनि तेँ गोविंद चारिगोटेकेँ ओही रातिसँ पठेनाइ शुरु कए देने रहथि । सुधाकर आ हुनकर लठैतसभ नहि सोचने हेताह जे एतेक जल्दी ई सभ भए जेतैक । तेँ रातिक अन्हरिआ आ खराब मौसमक फएदा लैत ओही राति अपन कार्यक्रमकेँ आगू बढ़एबाक बिचार केलनि।

रातिमे मौसम बहुत खराब छल । रहि-रहि कए बिजलौका चमकि उठए । लगैत छल जे कोनो क्षण वर्षा शुरु भए जाएत । घटाटोप मेघ सौंसे आसमानमे भरि गेल छल । एहन भयावह माहौलमे जयन्त एसगर ओहि पाठशालाक ढहल-ढनमानइत चारक नीचामे कहुना कए जान बँचबैत छलाह । एहनो स्थितिमे हुनकर संपूर्ण ध्यान ओहि शोधग्रंथ पर लागल रहैत छलनि । ओकर उपसंहार लिखि काजक इतिश्री करबाक छल ।

ओहि राति संयोग एहन भेल जे ओ लघुशंका हेतु कनीके फटकी गेल छलाह । शोधग्रंथकेँ सिरमा तरमे राखि देने रहथिन। लठैतसभ तँ धपाएल रहबे करए । मौका देखतहि ओहि पाठशालामे प्रवेश केलक आ जान-बेजान शोधग्रंथकेँ ताकए लागल । अन्हारमे किछु देखाइत नहि छल । चारूकात ओसभ हसोथि रहल छल । ताबे बिजलौका चमकल। उतरबारिटोलक रखबारसभ पाठशालासँ सटले गाछीमे नुकाएल छल । बिजलौकाक प्रकाशमे ओ सभ लठैत

सभकेँ देखबे नहि केलक,चिन्हिओ गेल । औ बाबू! आब तँ देखएबला दृश्य भए गेल । चारूकातसँ चारूगोटे पाठशालामे पैसल। पाठशालामे एकटा लठैत एमहर-ओमहर शोधग्रंथ तकबामे व्यस्त छल । ओकर एकटा संगी बाहर रखबारी करैत रहैक । ताबतेमे लाठी बजरल -धमाक! धमाक! ओहि लठैतक बामा पैरपर लाठी लगलैक । ओ ठामहि खसल । ताबे जयन्त सेहो आबि गेलथि। बाहर ठाढ़ सुधाकरक लठैत चिचिआ रहल छल -

"चोर! चोर! दौड़ैत जाउ औ गौंवा-घरुआसभ ।

लठैतसभक चिकरब-भोकरब सुनि कए दुनूटोलक लोकसभ जमा भए गेल । दूपहर रातिक समय छल। अन्हार गुज्ज। आसमान मेघसँ आच्छादित छल । वर्षासे शुरु भए गेल छल । एहन स्थितिमे चोर पाठशालामे की चोरबए आएल? ओतए छल की? इएह सबाल सभक मोनमे घुमि रहल छल । उतरबारिटोलबला सभ कहए जे सुधाकरक लठैतसभ चोरी करए आएल छलाह आ ओ सभ से उतरबारिटोलक रखबारक नाम लगबैत छल । एतबेमे पाठशालाक पछबरिआ देबालक बिचला सोङर खसि पड़लैक । चारूकातसँ लोकसभ दौड़ल । कहुना कए ओकरा फेर ठाढ़ कएल गेल ।

"हमरा नहि लगैत अछि जे एहिठाम केओ चोरी करए आएल होएत । जरूर किछु आओर बात अछि।"-सुधाकर बजलाह।

"अहाँसभ अनेरे एतेक रातिमे परेसान भेलहुँ । चिंताक कोनो बात नहि अछि ।"-जयन्त बजलाह ।

"एहि बातक तफसिआ होएब बहुत जरूरी अछि जे आखिर ई सभ एहन खराब मौसममे एतेक रातिमे एतए की करए

आएल रहथि? ततबे नहि हमरेसभपर उलटे दोष मढ़ि रहल छथि।"-उतरबारिटोलक रखबारसभ बजलाह ।

"आब एतेक रातिमे ई सभ विषयपर चर्चा करब उचित नहि । सभगोटे अपन-अपन घर जा कए विश्राम करू । काल्हि सभबातपर विचार कएल जेतैक ।"-जयन्त बजलाह ।

जयन्तक बात मानि लोकसभ हहरि गेल। मुदा उतेरबारिटोलक रखबारसभ लग-पासमे नुकाएल रहि गेलाह कारण ओ सभ जयन्तक सुरक्षा हेतु बहुत चिंतित रहथि ।

२०

प्रात भेने संयोगसँ नागबाबा घुमैत-फिरैत उतरिबारिटोल पहुँचलाह । उतरिबारिटोल हुनकर जन्मस्थान अछि । तेँ गाहे-बगाहे ओ एतए अबैत रहैथ छथि । एहूठामसँ कैकगोटे हुनकर आश्रममे जानकीधाम जाइत रहैत अछि। गाम एलाक बाद ओ अपन पैतृक घरमे नहि रहैत छथि । पाकड़ीक गाछसँ सटले नागबाबाक सहयोगसँ ओतए मंदिर बनाओल गेल । दछिनबारिटोल लोकसभ ओहि समयमे नागबाबाक सहयोग नहि केने रहथि। संभवतः हुनकर सभक अहं बाधक भए गेल रहए । मुदा नागबाबा ककरोसँ किछु नहि लेलथि । कहाँदनि नागबाबाक एकटा भक्त सभटा खर्च देलकैक । गाम अएलाक बाद नागबाबा ओही मंदिरपर रहैत छलाह।

नागबाबाक अबितहि ओहिठाम लोकक करमान लागि गेल । लग-पासमे जे केओ हुनका अबैत देखलक,हुनकर पाछू-

पाछू मंदिर धरि चलि आएल । नागबाबा मंदिरपर अएलाक बाद लोकसभसँ हालचाल लैत रहथि कि जयन्त ओतए पहुँचि गेलाह। ओ हुनका साष्टांग प्रणाम केलनि । नागबाबाकेँ जयन्तक सभटा समाचार पता रहनि ।

"कालीकान्त अहाँक समाचार सुनि बहुत चिंतामे पड़ि गेल छथि । हुनके कहलापर हम गाम अएलहुँ अछि । ओना हमरा केदारनाथ -बद्रीनाथ जएबाक कार्यक्रम छल। मुदा कालीकान्त अड़ि गेलाह । कहए लगलाह-

"जयन्त गाममे बहुत झञ्झटिमे पड़ि गेल छथि। हुनका लेने अबिअनु । जानकीधाममे हुनकर बहुत आवश्यकता अछि ।"

नागबाबाक बात सुनि जयन्त तुरंत कहैत छथि-

"हम अहाँक उपकारकेँ नहि बिसरि सकैत छी । मुदा जन्मभूमिक ऋण के उतारत? पाठशालाक काज जाधरि आगू नहि होएत हमरा शांति नहि भेटि सकैत अछि ।"-जयन्त बजलाह ।

"अहाँक विचार तँ बहुत उत्तम अछि । मुदा एहिमे सभसँ भाङ्ट तँ अहाँक अपने समाङ कए रहल छथि।"-नागबाबा बजलाह ।

"आब अहाँ आबिए गेल छी । सभटा सलटि जेतैक । हम तँ निर्णय लए चुकल छी । हमर जीवन तँ एही पाठशालाक हेतु समर्पित अछि आ रहत । आगू ईश्वरक इच्छा ।"-जयन्त बजलाह।

"हमसभ जयन्तकेँ संगे छी । पाठशाला अवश्य बनि कए रहत । एहि हेतु हमसभ सर्वस्व त्याग करबाक हेतु तैयार छी।"-उतरिबारि टोलक लोकसभ बाजल ।

"अहाँ लोकनिक उत्साह प्रशंसनीय थिक । परंतु पाठशाला कोनो एकदिनक चीज नहि अछि । एहि हेतु योज्ञ शिक्षक चाही,

प्रतिभाशाली विद्यार्थी चाही आ सभसँ बेसी शांति चाही जाहिसँ शिक्षाक हेतु उचित आ आवश्यक वातावरण रहैक । झञ्झटि-फसाद केलासँ तँ पाठशाला नहि चलि सकैत अछि । -नागबाबा बजलाह।

साँझमे पाठशालापर दुनू टोलक लोक जमा रहए । नागबाबा सेहो आबि गेल रहथि । उतरबारिटोलक बच्चासँ बूढ़ धरि पहुँचि गेल रहए । गोविंद आ माधव नागबाबासँ सटले बैसल रहथि। दछिनबारिटोलक लोकसभ सेहो बेराबेरी आबि रहल छलाह। सुधाकर अपन लठैतसभक संगे अबितहि बाजए लगलाह-

"नागबाबा पहिने अपन पाप धो लेथि तखन पाठशाला बनबिहथि ।

"की बाजि रहल छह आ ककरा कहि रहल छहक से होस छह?"-केओ गौंवा बाजल ।

"तोरा सभकें किछु नहि बूझल छह तँ किएक बजैत छह? कोनो जरूरी अछि जे सभ बातमे लारि देबे करी ।"-सुधाकर बाजल।

"तूँ अंट-संट बजैत रहबह आ लोक सुनैत रहत, से जमाना गेलैक । आबो जँ नहि सुधरबह तँ ई लठैतक बले कैक दिन चलबह?"-दोसर गौंवा बाजल ।

"खबरदार! बिना बुझने-सुझने एहि तरहक बात बजबाक परिणाम भोगबाक हेतु सेहो तैयार रहह । कतबो किछु बदलि गेलैक अछि ,मुदा ताहिसँ की?-सुधाकर बाजल ।

"अहाँ कहए की चाहैत छी, से साफ-साफ किएक नहि बजैत छी जे जिलेबी जकाँ बातकें घुमा रहल छी ।"

"नागबाबापर हत्याक आरोप रहैक । जान बँचाबक हेतु तहिआसँ गामसँ भागि कए बबाजी भए गेल अछि आ सभकेँ ठकने फिरि रहल अछि । "-सुधाकर बाजल ।

"सत्य कहि रहल छथि, सुधाकर ।"-हुनकर समर्थन करैत लठैत सभ गरजल ।

"तूँ कोनो थानेदार नहि छह जे नागबाबाक केसक जाँच करबह । नागबाबा एहिगामक प्रतिष्ठित संत छथि आ हमरा लोकनिकेँ ओ निरंतर कल्याण केलनि अछि । हमसभ हुनकर खिलाफमे एकशब्द नहि सुनि सकैत छी ।-गोविंद बाजल ।

वाद-विवाद बढ़ैत देखि नागबाबा हस्तक्षेप करैत बजलाह-

"हम जे छी, नहि छी ताहि लेल ककरो परेसान रहबाक प्रयोजन नहि अछि, ने हमरा ककरो प्रमाणपत्र चाही। मुदा ई स्पष्ट करू जे अहाँ जयन्तक पाछू किएक पड़ल रहैत छिअनि । ओ अपन पैतृक जगह पर पाठशाला बनाबए चाहैत छथि तँ अहाँकेँ एहिमे की परेसानी अछि? दोसर बात जे रातिमे अहाँक लठैतसभ हुनका लग की करए गेल रहए? एतबे नहि -जानकीधाममे सेहो इएहसभ पहुँचल रहथि आ हुनकर शोधग्रंथकेँ चोरबएमे लागल रहथि । जँ हम कालीकान्तकेँ नहि मनबितिअनि तँ एकरासभकेँ फाँसी भेल रहैत ।"-नागबाबा बजलाह ।

"ओकरासभकेँ जखन जे हेतैक नहि हेतैक, मुदा तोरा तँ अखने थानामे बंद कएल जेतह । देखहक सामने दिस । पुलिस आबि रहल अछि ।"-सुधाकर बजलाह । बात सही रहैक । एक दर्जन पुलिस जीपमे पाठशाला दिस आबि रहल छल । पुलिसकेँ अबैत देखितहि ओतए पड़ाहि लागि गेल । दछिनबारिटोलक

लोकसभ इएह-ले ओएह-ले भागल । मुदा उतरबारिटोलक लोकसभ टस सँ मस नहि भेल ।

पुलिस आएल जरूर, मुदा ओ तँ अबितहि नागबाबाकेँ दंडवत प्रणाम केलक । चारू लठैत आ सुधाकरकेँ गट्टा धेलक आ अपना संगे जीपपर बैसा कए थाना लेने चलि गेल ।

बैसारमे जोरसँ नारा लागल-

"नागबाबाक जय!"

२१

दोसर दिन भोरे नागबाबा पाठशाला आबि जयन्तसँ भेंट केलनि ।

"हम वापस जानकीधाम जा रहल छी । भेल जे जएबासँ पहिने अहाँक भेंट केने चली ।"

"अहाँ अएलहुँ तँ हमरा बहुत उसास भेल । हमरा इच्छा छल जे अहाँक सामनेमे पाठशालाक काजकेँ आगू कएल जाए । एक बेर शुरु भए जेतैक तँ चलैत रहतैक ।"

"एतेक आसान बात नहि अछि । एहिठाम बहुत तरहक बातसभ छैक । एहिमे बड़का-बड़का लोकसभक हाथ छैक । अहाँक शोधग्रंथ लए कए सेहो बहुत षड़यंत्र भए रहल अछि । अहाँकेँ तँ स्वयं बुझले अछि जे जानकीधाम धरि ई लठैतसभ अहाँक पछोड़ केने छल। "

"तखन की कएल जाए?"

"हमरा विचारसँ एहि शोधग्रंथकेँ कालीकान्त लग पठा दिऔक । ओतहि एकर विमोचनो होएत आ तकरबाद आगूक कार्यक्रम सेहो तैयार कएल जाएत ।"

"मुदा ई कालीकान्त लग जाएत कोना?"

"बढ़िआँ होइत जे अहाँ हमरे संगे चलितहुँ । ताबे एहूठाम माहौल शांत हेतैक ।"

"ठीक छैक। "

साँझमे जयन्त नागबाबाक संगे शोधग्रंथ लए बिदा भए गेलाह । जयन्तके नागबाबा संगे जाइत देखि सौंसे उतरिबारिटोल उलटि गेल । सभकेँ भेलैक जे जयन्त तंग भए लखनपुर छोड़ि रहल छथि । ओना ई बात जयन्त ककरो कहने नहि रहथिन । ककरो पतो नहि चलितैक। मुदा जखन नागबाबाक संगे धारक कात ओ पहुँचलाह तँ सुधाकर अपन लठैतसभक संगे थानासँ छुटि कए आबि रहल छल । हिनका लोकनिकेँ जाइत देखि ओकर प्रसन्नताक अंत नहि छल ।

"नागबाबा! धन्य छी अहाँ । ई काज जँ पहिने केने रहितहुँ तँ एतेक फसाद नहि होइत । खैर! कोनो बात नहि । हम तँ जयन्तकेँ पहिने कहने रहिऐक जे गामक वातावरण ओकरा सन विद्वानकेँ रहए जोकर नहि अछि । ओकरा जानकीधाममे रहब ठीक हेतैक । ओहुना आब पाठशाला के जाइत अछि? चारूकात अंग्रेजी माध्यमक इसकूलसभ खुजि गेल छैक । लोक देहो बेचि कए अपन बाल-बच्चाकेँ पब्लिक इसकूलमे पढ़बए चाहैत अछि ।"

"नागबाबा किछु नहि जबाब देलखिन, ने जयन्त किछु बजलाह । सुधाकर विजयी मुद्रामे लठैतसभक संगे आगू बढ़ि गेलाह । गामसँ जयन्तक जएबाक समाचार क्रमशः सौंसे पसरि

गेल। ई बात गोविंदक कान धरि सेहो पहुँचल । पहुँचैक रहैक । थोड़बे कालक बाद गोविंदक माधवसँ भेंट भेलनि ।

"जयन्त गाम छोड़ि कए जा रहल छथि।"-गोविंद बजलाह।

'से तूँ कोना बुझलहक? -माधव पुछलकनि ।

"सौंसे गाममे हल्ला छैक । लोकसभ धारपर करमान लागल अछि । हुनका लौटबाक आग्रह कए रहल अछि ।"

"तँ की ओ मानि नहि रहल छथि?"

"चलह ने । ओतहि जा कए सही बातक जानकारी भेटि सकैत अछि ।"

माधव आ गोविंद धारक कात पहुँचैत छथि । ओहिठाम लखनपुर दुनूटोलक लोकक करमान लागल छल । सभ एतबे बाजि रहल छल -

"ई तँ बहुत खराब भेल । एहन विद्वान लोककेँ अपन डीह-डाबर छोड़ए पड़ि रहल छैक ।"

भीड़केँ चीड़ैत दुनूगोटे जयन्त लग पहुँचलाह । ओ सभ जयन्तक पैर पर खसि पड़ैत छथि ।

"हम किन्नहु अहाँकेँ वापस नहि जाए देब । ई तँ बहुत भारी अन्याय होएत । हमरासभकेँ जीबैत ई कदापि नहि होएत ।"

“अहाँसभ परेसान नहि होउ । थोड़ेदिनक बाद जयन्त स्वयं गाम वापस आबि जेताह । जानकीधाममे किछु जरूरी काज छनि। तकरबाद आगूक बात-विचार कएल जेतैक ।"

" जँ हमरा दुनूगोटेकेँ संगे जएबाक अनुमति देथि तखने हिनका जाए देबनि ।"

"कोनो आपत्ति नहि । जँ अहाँ सभकेँ सएह इच्छा अछि तँ चलि सकैत छी । मुदा गौंवासभकेँ तँ मनाउ ।"

गोविंद,आ माधव जयन्त आ नागबाबाक संगे बिदा भए गेलाह । गौंवासभ बड़ीकाल धरि ई दृश्य देखैत रहि गेलाह ।

२२

जयन्तकेँ गामसँ चलि जएबाक समाचारसँ अनका जे किछु भेल होइक, मुदा हुनकर पितिऔत सुधाकरकेँ तँ लगलनि जेना स्वर्ग भेटि गेल । थानासँ जमानति करा कए लौटलाक बाद घर पहुँचितहि ओ आगूक योजनामे लागि गेलाह । दरबजेपर पिता भेटि गेलखिन। सुधाकरकेँ देखितहि ओ पुछैत छथि-

"सुनैत छी जे जयन्त चलि गेलाह ।"

"सभ दिन स्वतंत्र रहएबला लोककेँ गाम-घर कोना नीक लगितनि?"-सुधाकर बजलाह ।

"से की?"

"हुनका नागबाबा अपना संगे लेने गेलखिन । सुनैत छी आब हुनके संगे रहताह ।"

"हमरा ई बातपर विश्वास नहि होइत अछि । ओ तँ अपन समाजक बीचमे रहए आएल छलाह । कौलिक परंपराक अनुसार पाठशालाकेँ पुनःस्थापित करए चाहैत छलाह । फेर अचानक एहन निर्णय किएक केलनि?"

"जे केलनि, से केलनि । आब अहाँ तकर शोक नहि मनाउ। काज हमहीं आएब । जयन्तक आशा छोड़ू । ओ महास्वार्थी आदमी थिक । अपन फएदा जतए देखलक ततए गेल ।

हमरा-अहाँ सँ ओकरा की मतलब? जखन ओकरा आँखिमे पानि नहि छैक तखन हमसभ ओकर चिंता किएक करी? हमरा विचारसँ तँ इएह मौका थिक । पाठशाला जगहमे अपन पक्का मकान बनाली। ई घर अछिओ छोट ,फेर बहुत पुरान भए गेल अछि,करवन खसत तकर कोनो ठेकान नहि ।"

"ई कोना भए सकैत अछि । ओ जगह तँ सभदिनसँ पाठशालाक रहलैक अछि । पूर्वजक कृतिकेँ हमही नष्ट कोना कए लेब?"

"इएह तँ अहाँकेँ लए बैसल । सभदिन खाली कबाइत पढ़ैत रहि गेलहुँ । सौंसे उतरबारिटोल ओहि जगहपर नजरि गरओने अछि । चाहैत अछि जे कहुना कब्जा कए ली । हमरा लोकनिक आपसी मतभेदक सद्यः फएदा उठाबएमे लागल अछि । ओ सभ तँ हसेरीकेँ जोगार सेहो कए लेने छल । संयोग कहू जे जयन्त अपने हटि गेलाह । यदि ई मौका हाथसँ गेल तँ ओ जगह सभदिनसँ अपन परिवारक हाथसँ गेल । बुझलिऐक किछु की नहि?"

"कहि नहि तोरा ई कुबुद्धि कोना भए गेलह । जयन्त परिवारक विद्वान छथि । हमरा लोकनिक वंशमे एहन विद्वान आइ धरि नहि भेल छल । हमर सभक कर्तव्य अछि जे हुनका उचित सम्मान दी, हुनकर योजनामे मदति करी।"

"शुरु भए गेलहुँ ने । हम बुझिते रही । जखन अहाँसन बाप होथि तखन शत्रुक कोन काज? अपना बुतें तँ अहाँकेँ किछु भेल नहि । तखन हमहूँ जे किछु करितहुँ से तरह-तरहक दिक्कति केने जा रहल छी । एकबेर यदि उतरबारिटोलबलाक हाथमे ओ जगह चलि गेल तखन फेर ठाढ़ो होमए नहि देत से बुझा रहल अछि कि नहि?"

सुधाकरक वयोवृद्ध पिता आगू किछु नहि बाजि सकलाह । सुधाकर लठैतसभकेँ बजओलक,बुलडोजरक ओरिआन केलक आ पाठशालाक जमीनपर सदल-बल पहुँचि गेल । बुलडोजरक काजे नहि रहैक । असलमे पाठशाला तँ कहुनाक सोङरसभपर लटकल छल । जहाँ सोङर हटाओल गेल,ओकर चार धराम दए खसि पड़ल। अधपक्क इंटासँ गिलेबापर जोड़ल गेल देबाल बुलडोजरक पहिले चोटमे मटिआमेट भए गेल । से तँ भेल । मुदा बात एतबे पर नहि रुकल । उतरबारिटोलमे हल्ला भए गेल । जकरे देखू सएह पाठशाला दिस दौड़ल आबि रहल अछि । बच्चा,बूढ़,जबान सभ दौड़ल। ककरो हाथमे लाठी,ककरो हाथमे भाला,ककरो किछु..जकरा जे भेटलैक से लेने फानल । देखिते-देखिते पाठशालाक चारूकात लोकक करमान लागि गेल । सुधाकरक लठैतसभ सेहो पूरा तैयारीमे छल । ओ सभ सुधाकरकेँ इसारासँ पुछलकैक। सुधाकर सहमति देलखिन ।

लठैतसभक बंदूकसँ धराधर गोली निकलए लागल । फटाक...फटाक.....फटाक..... । औ बाबू! देखिते-देखिते पड़ाहि लागि गेल। मिनटोमे सभटा भीड़ निपत्ता भए गेल । सुधाकर मोछपर ताव देलाह ।

"फसाद करए चलल छलाह । हुनकासभकेँ पता हेबाक चाही जे ककरा संगे भिरंत छनि?" -से कहि लठैतसभकेँ पीठ ठोकैत सुधाकर कहैत छथि-

"हमर ई खानदानी जमीन अछि । अहींसभ कहू एकरा कोना छोड़ि देबैक?"

"सत्य वचन । आब जे करबाक अछि से कए लिअ । समय नहि बिताउ ।"-लठैत सभ बाजल ।

बुलडोजर लगाकए पाठशालाक जगहकेँ किछुए कालमे समतल कए देल गेल । पुरनका चीज-वस्तुक कतहु नामो-निसान नहि रहि गेल । रहि गेल तँ बस सुधाकर आ ओकर घमंड ।

उतरबारिटोलक लोकसभ ओहिठामसँ भागल तँ थानेमे जा कए ठाढ़ भेल। एतेक लोककेँ एना एकहिठाम अपसियाँत देखि कए थानेदार चिचिआएल-

"की बात छैक? अहाँसभ एना गाम छोड़ि कए कतएसँ आबि रहल छी?"

"जुलुम भए गेलैक दरोगाबाबू!

"की भेलैक से कहू ने?"

"पाठशालाक जमीन सुधाकर कब्जा कए लेलक । पाठशालाकेँ बुलडोजर लगाकए उड़ा देलक। सुनैत छी आब ओहिपर अपन मकान बनाओत ।"

"एहि लेल अहाँसभ किएक परेसान छी । ओकर दियादी झञ्झटिमे अनेरे ने जान देबएपर लागल छी ।"

" एहनो कतहु भेलैक अछि? ओ जगह सार्वजनिक छैक। सभदिनसँ ओहिठाम पाठशाला छलैक । ताहिठाम आब ओ अपन घर कोना बना सकैत अछि ।"

" अहाँसभ अपन-अपन घर जाउ । व्यर्थक फसाद नहि करू । नहि तँ जहलमे सड़ि जाएब । सुधाकर कोनो मामुली आदमी नहि अछि । मंत्रीसँ लए कए सन्तरी धरि सभ ओकर पाकिटमे छैक। किछु बुझलिऐक की नहि?"

दरोगाजीक बात सुनि लोकसभ छगुन्तामे रहए । मुदा करितए की ? तैओ केओ थानालगसँ हटबाक नामे नहि लैक । किछु अगत्ती छौंड़ासभ अड़-बड़ सेहो बाजए लागल छल । ई बात

सुधाकरकेँ पता चललैक । ओ लठैतसभकेँ लेने थाना पहुँचि गेल । कहि नहि दरोगाजीसँ की बतिआएल ,की केलक की नहि? कनीके कालक बाद ओ थानासँ चलि गेल । तकरबाद तँ जे भेल से की कहू? दरोगाजीक सामनेमे जे केओ अएलैक तकरा मारि डंटासँ,मारि डंटासँ ओधबाध कए देलकैक । सभ जान-बेजान भागल ।

२३

गामक सीमासँ बाहर होइत काल जयन्तक आँखिसँ नोर झहर-झहर खसि रहल छल । जानकीधामसँ शिक्षा प्राप्त केलाक बाद ओ साइते सोचने हेताह जे फेर कहिओ गाम छोड़ि कए जानकीधाम जेताह। गाम जएबाक हेतु ओ ततेक उत्सुक छलाह जे अपन शोधग्रंथक उपसंहार लिखबाक हेतु ओतए नहि रुकलाह । सोचलाह -"गामक सुरम्य ओ स्नेहमयी वातावरणमे ई काज बेसी नीक होएत । ओहिमे अपन-माटि पानिक स्वाद रहत।" मुदा परिस्थिति तेहन भए गेल जे ओहिठामसँ अचानक हुनका बिदा होमए पड़लनि। यद्यपि मोनमे ई भावना छनिहे जे ओ एकदिन फेर अपन माटि-पानिमे घुरि अओताह । जानकीधाम जाएब तँ एकटा मात्र तात्कालिक समाधान छल । मुदा ई भेल बहुत कष्टकर घटना। जाहि ठाम माताक अनन्य सिनेह ओ पिताक पाण्डित्वपूर्ण सानिध्यमे हुनकर पालन भेल ताहिठामक ऋण बिना चुकओने ओ वापस जा रहल छलाह। एक हिसाबे हुनका ई बैमानी बुझाइनि । जान चलि जाइत से बेसी नीक । तथापि ओ जीबैत छथि आ अपन प्राणप्रिय मातृभूमिसँ वंचित भए एकबेर फेर दूर जा रहल छथि।

हुनका नागबाबापर मोने-मोन कैकबेर तामसो होनि । मुदा फेर अपनाकेँ रोकथि ।

"धन्यकेँ नागबाबा जे हम आइ एहि जोकर भेलहुँ अछि.नहि तँ जयन्त नामक व्यक्ति कहिआ ने बागमतीक धारमे बहि गेल रहितथि आ ककरो एहि बातक पतो लगैत कि नहि । तेँ ने सुधाकर परेसान छथि । हुनका हिसाबे तँ हम खतम रही । मुदा भावी प्रबल ।"- जयन्त गुमसुम इएह सभ सोचैत रहथि कि रस्ताक कातमे महादेवक मंदिर देखेलनि । मोनमे भेलनि जे दर्शन कए ली।" साइत महादेव हमर दुख कम कए सकथि।" माधव सेहो हुनकर संगे गेलाह । महादेवक दर्शन कए ओ निकलले छलाह कि गोविंद डाक देलखिन-

"गामसँ टुनटुन अएलाह अछि । किछु जरूरी समाद छनि।"

जयन्त आ माधव ओमहरे बिदा भेलाह। एहिबीच गोविंद आ नागबाबा गप्प करए लगलाह ।

"बहुत अनर्थ भए गेल ।"- गोविंद बजलाह ।

"की भेलैक?"-नागबाबा पुछैत छथि।

"बजबाक साहस नहि भए रहल अछि ।"

"बजबहक नहि तखन बुझबैक कोना?"

"टुनटुनेसँ गप्प कए लिअ ।"

"कहाँ छथि टुनटुन?"

"महादेवक दर्शन करए गेलाह अछि ।"

"ठीक छैक । आबए दिअनु ।"

गोविंद एहि दुर्घटनाक समाचार जयन्तकेँ नहि देबए चाहैत छलनि । हुनका डर रहनि जे ओ एकरा बरदास्त नहि कए सकताह। मुदा एकरा कतेक काल नुकओने रहितथि ।

टुनटुनकेँ देखितहि नागबाबा पुछैत छथि -

"की बात छैक से फरिछा कए बाजह।"

"सुधाकर आ ओकर लठैतसभ बुलडोजरसँ पाठशालाकेँ तोड़ि देलक । आब सुनैत छी ओहि जगहपर अपन घर बनाओत।"

"गौंवासभ किछु नहि कहलकैक?"

"के की कहितैक? केओ झञ्झटिमे नहि पड़ए चाहलक । फेर ओकरा संगे तँ गुंडासभक झुंड छैक । सौंसे दछिनबारिटोलक युवकसभ ओकर पाछू-पाछू बेमत्त भेल अछि ।"

"सएह कहू? केहन भए गेल गाम? न्यायक संग देनिहार केओ नहि?"

"से नहि बाजू। उतरबारिटोल लोक जान लगा देलक । थाना धरि गेल । मुदा दरोगाजी सेहो ओकरे संग भए गेलैक । उनटे उतरबारिटोलक लोकसभकेँ धमका देलकैक । गोली-बारुद चलेबाक परिस्थिति भए गेलैक। सभ जान-बेजान भागल ।"

जयन्त एहि समाचारकेँ बकर-बकर सुनैत रहि गेलाह । किछु बाजल नहि भेलनि । पाठशालाक दुर्गतिक समाचार सुनि हुनकर हृदय विदीर्ण भए गेलनि । हुनका मोन होइत छल जे तुरंते गाम घुरि जाइ। मुदा नागबाबा अड़ि गेलाह ।

"सभ किछुक समय होइत छैक । अखन अहाँकेँ गाम गेनाइ उचित नहि होएत । सबाल मात्र ओहिठाम जेबेक नहि अछि। कोनो ओहिठाम लोकक कमी थोड़े छैक । मुदा ओ सभ झूठ-मूठमे ओझराएल रहैत अछि। यदि अहूँ सएह करए लागब

तखन की फरक भेलैक? एतेक पढ़ि-लिखि कए अहाँ अपन क्षमताकेँ एहिसभमे नष्ट करी से उचित नहि होएत । अस्तु,धैर्यपूर्वक सही समयक प्रतीक्षा करू । संप्रति हमरा लोकनि पूर्वनियोजित कार्यक्रमक अनुसार जानकीधाम चली । ओहिठाम अहाँक शोधग्रंथक विमोचन कएल जाएत । संगहि विद्वान लोकनिसँ विमर्श कए आगूक कार्यक्रम बनाओल जाएत । गोविंद आ माधव पाठशालाक सुधि लेबाक हेतु पर्याप्त छथि । ई दुनूगोटे टुनटुनक संगे गाम लौटि जाथि आ स्थितिक जानकारी लेथि । मुदा बेसी फसाद नहि करथि । समय अएलापर पाठशाला बनिए कए रहत,एकरा रोकब ककरो वशक बात नहि अछि ।"

"जे अहाँक विचार ।"-जयन्त बजलाह ।

गोविंद आ माधवकेँ इच्छा रहनि जे ओ सभ जयन्तक संगे रहथि । तथापि नागबाबाक बात मानि हुनका प्रणाम कए टुनटुनक संगे गाम बिदा भए गेलाह । जाइत काल जयन्त कहलखिन-

"चिंता नहि करब । हमहूँ अएबे करब ।"

२४

गोविंद आ माधव गाम पहुँचितहि ठोकले पाठशाला लग पहुँचलाह ।

"एहिठाम तँ किछु नहि बाँचल अछि?"

"एतेक तेजीसँ ई सभ भेल से सोचि आश्चर्य लागि रहल अछि । ओहूसँ आश्चर्य एहि बातसँ होइत अछि जे दछिनबारिटोलक लोकसभ सभकिछु चुपचाप देखैत रहि गेल । किछु प्रतिकार नहि

कए सकल । एहन तँ नहि छल ई टोल । एक समय छल जखन एहि टोलमे विद्वानसभ भरल छलाह । जतहि देखू ततहि शास्त्र चर्चा भए रहल अछि । ओही टोलमे आइ की हाल अछि? गामक एकटा प्रतिष्ठित संपदा छल ई पाठशाला ,तकरो रक्षा नहि कए सकलाह ।"

"जखन अपने आदमी शत्रु भए जाइत अछि तँ रक्षा करब ककरो हेतु मोसकिल भए जाइत अछि । सुधाकर तँ अपन पितोक बात नहि सुनलाह । कहाँदनि ओ बहुत कहलखिन । मुदा सुधाकर तँ जे छथि से सभकेँ बूझल अछि ।"

"आब की कएल जाए? एहिठाम तँ सुधाकर अपन मकान बना रहल छथि । एतेक तेजीसँ एकर काज आगू कोना बढ़ि गेल,से सोचि आश्चर्य लागि रहल अछि । हमरा लोकनिक गेला सात दिन भेल अछि । एतबे समयमे मकानक काज एतेक आगू भए गेल ।"

ओ सभ आपसमे गप्प कइए रहल छलाह कि ओहिठाम सुधाकर आबि गेलाह । हुनका संगे लठैत सभ सेहो छल ।

"कहिआ गाम अबैत गेलह?"

"आबिए रहल छी?

"ओ! हम तँ सुनने रहिऐक जे आब तूँ सभ जयन्तक संगे जानकीधामेमे रहबह ।"

"बीचे रस्तासँ वापस होमए पड़ल ।"

"से किएक? गाम कोनो भागल जाइत छलैक । किछु दिन जानकीधाममे रहितह । नीक-बेजाए बुझितहक ।"

"सोचने सएह रहिऐक । मुदा से अहाँ कहाँ होमए देलिऐक?"

"लएह । हम की केलिअह?"

"अहाँकेँ ई कुबुद्धि केना भेल जे पाठशालाकेँ तोड़ि कए ओहिठाम अपन घर बना रहल छी । ई तँ सार्वजनिक स्थान छलैक। गामक एकटा प्रतिष्ठा छलैक । अहाँक पूर्वजसभक कीर्त्ति छल । एना नहि करक चाहैत छल ।"

सुधाकर लठैतसभकेँ इसारा केलथि । ओसभ लाठी भजैत हिनकासभ दिस बढ़ल । लठैत सभ गोविंद आ माधवपर दनादन प्रहार करैत गेल । लाठीक प्रहार लगितहि दुनूगोटे ठामहि खसलाह।

"कहैत छलिअह जे एहि मामलामे टांङ नहि अड़ाबह। मुदा तोरासभकेँ बहुत दाबी भए गेल छह । हमर आपसी मामला अछि । ई जगह सार्वजनिक कोना भए गेलैक? सभदिनसँ हमर पुरखाक एहिपर अधिकार रहल अछि । हमर बाबूक नामे रसीद कटैत छनि । तूँ सभ तँ जबरदस्ती परेसान छह । आबो समय छैक। अपन काजमे लागि जाह ,नहि तँ....... ।"

दुनूगोटे मारि लगलासँ कुहरि रहल छलाह । की बजितथि?

"हिनका दुनूगोटेकेँ घर धरि पहुँचा दहुन । आ हे! दबाइक दोकानबलासँ मलहम कीनि दिअहुन । चोटसभ पर लगबैत रहताह। "-से बाजि सुधाकर जोरसँ ठहाका पाड़लनि । गोविंद आ माधव बेसुध रहथि । प्रतिकार करबाक स्थितिमे नहि रहथि । हुनका लठैतसभ उठा-पुठाकए उतरबारिटोलक पाकड़ीक गाछतरमे ओही हालमे राखि देलक आ चलि गेल ।

२५

जानकीधाम पहुँचलाक बाद जयन्त नागबाबाक संगे रहए लगलाह । शारदाकुंजमे आचार्यजीकेँ ई बात पता लगलनि । ओ प्रतीक्षामे रहथि जे जयन्त अपने अएताह । मुदा कैक दिन बीति गेलाक बादो जखन आचार्यजीसँ भेंट करए नहि गेलाह तँ हुनका रहल नहि गेलनि । ओ स्वयं शिष्यसभक संगे जयन्तसँ भेंट करबाक हेतु नागबाबाक स्थानपर पहुँचलाह । नागबाबा ओहि समय ओतहि रहथि । जयन्त अपन शोधग्रंथकेँ विमोचन हेतु प्रस्तुत करबामे व्यस्त छलाह ।

आचार्यजीकेँ सामनेसँ अबैत देखि हुनकर हर्षक सीमा नहि छल । ओ तुरंत उठि हुनका दण्डवत भए प्रणाम केलनि ।

" क्षमा करब आचार्यवर! हम अपनेसँ अखन धरि भेंट नहि कए सकलहुँ । सोचैत रही जे पुस्तकक विमोचन करबाक अवसरेपर अपनेसँ भेंट होएत ।"

"कहिआ छैक विमोचन?"

"अपनेक सुविधानुसारे तिथि तय कएल जाएत ।"

"बढ़िआँ होएत जे कालीकान्तोसँ पुछि लेल जाए । अहाँक गेलाक बाद ओ कए बेर पुछारी करैत छलाह ।"

" आचार्यवर! सत्य पुछल जाय तँ हम संकोचवश ने अपनेसँ भेंट कए सकलहुँ ने कालीकान्तक सामने जएबाक साहस भेल?"

"से की?"

"हम तँ जानकीधाम छोड़ि कए गाम चलि गेल रही । मुदा परिस्थिति एहन भेल जे हमरा नागबाबाक बात मानि एतए आबए पड़ल ।"

"जे भेलैक, से भेलैक । जानकीधाम अएबाक हेतु ककरोसँ पुछबाक काज नहि होइत छैक । ई तँ सभहक स्थान अछि ।"

"आचार्यवर पुस्तकक विमोचनक सभ भार अपनेपर अछि । अपने जखन उपयुक्त बूझी तखने एहि कार्यकेँ संपन्न कएल जाएत ।"

" एहि शुभकाज केँ जतेक जल्दी कएल जाए ततेक नीक ।"

"फेर अपने कालीकान्तसँ विमर्श कए आगूक कार्यक्रमक आदेश देल जाए ।"

"ठीक छैक । हम आइए भेंट करबनि । "

तकरबाद आचार्यजी कालीकान्तसँ भेंट कए सभबात कहलखिन । कालीकान्त एहि बातसँ बहुत प्रसन्न रहथि जे जयन्त जानकीधाम लौटि गेलाह ।

"मुदा जयन्त अपने किएक नहि अएलाह? "

"ओ अपनो आबए चाहैत रहथि । मुदा..."

"मुदा की? एहिठाम अएबामे हुनका कोन अवरोध?"

"से सभ की रहतनि । ओ पुस्तकक विमोचनमे व्यस्त रहि गेलाह । हमरोसँ भेंट नहि कए सकल रहथि ।"

“ओ! आब बुझलिऐक ने असली बात । चलू हम अखने अहीं संगे चलैत छी ।"

कालीकान्त चंद्रिकाकेँ बजओलनि आ तीनूगोटे जयन्तसँ भेंट करबाक हेतु नागबाबाक स्थान पर पहुँचि गेलाह । संयोगसँ नागबाबा कतहु गेल रहथि ।

कालीकान्त संगे चंद्रिकाकेँ देखि जयन्तकेँ तँ जेना करेंट लागि गेलनि । ओ अध्ययन छोड़ि ठाढ़ भए गेलाह । कालीकान्तकेँ अभिवादन करैत छलाह कि चंद्रिका टोकि देलखिन-

"अहाँ तँ हमरा साफे बिसरि गेलहुँ ।"

जयन्त किछु नहि बाजि सकलाह ।

चंद्रिकाक सौंदर्य देखैत बनैत छल । जयन्तक इच्छा भेलनि जे हुनका कनी नीकसँ देखी । एतेक दिनपर भेंट भेल रहनि । मुदा संकोचवश मुड़ी नहि उठा सकलाह ।

हुनका दुनूकेँ गप्प करैत देखि कालीकान्त आ आचार्यवर सहटि गेलाह ।

"अपनेक आज्ञा होइ तँ काल्हि अपनेक सभा मंडपमे एहि पुस्तकक विमोचन संपन्न कएल जाए ।"- आचार्यवर बजलाह ।

"अवश्य कएल जाए ।"- कालीकान्त सहमति दैत बजलाह ।

२६

ई संसार आश्चर्यसँ भरल अछि । एतए सभकिछु स्वयं नियंत्रित होइत रहैत अछि । हम-अहाँ तँ नियतिक हाथक एकटा मामुली यंत्र छी । जीवन यात्रामे के कतए भेटत,के कतए फराक भए जाएत कोनो ठेकान नहि । कहि सकैत छी जे सभ भाग्यक खेल अछि । जयन्त सन अनाथ लोक एहन महान विद्वान भए

गेलाह । ततबे नहि ,एतेक सुयोग्य होइतहु आ मौका भेटलोपर ओ राजसुखकेँ छोड़ि अपन गाम लौटलाह। ई उम्मीद रहनि जे अपन पूर्वजक कीर्तिकेँ आगू करब । समाजक सेवा करब। गाम-घरमे शिक्षाक प्रचार-प्रसार करब । मुदा से करब आसान नहि भेलनि । अपने पितिऔत बाधक भए गेलखिन । कहबी छैक जे लोभी मनुक्खकेँ अपन स्वार्थक आगू किछु नहि देखाइत अछि । सएह हाल रहनि सुधाकरक । नहि तँ पाठशालाकेँ बुलडोजर लगा कए ढाहि देबाक की औचित्य छल? एहन तँ नहि छल जे ओ रस्तापर भिजैत रहथि । घर तँ हुनका रहबे करनि ।

सुधाकरक वयोवृद्ध पिता देवीकान्त हुनका कैकबेर कहलखिन-

" सुधाकर! ई जगह सार्वजनिक छैक । हमरा लोकनिक पूर्वजक कृति अछि । जयन्त विद्वान छथि। हुनकर अभिलाषामे सभक कल्याण अछि ,आदि,आदि ।”

मुदा सुधाकर तँ छलाहे डपोरसंख । बापेकेँ धमका देलाह। दस हजार फज्जति केलाह । ओहो की करितथि? एक्केटा बेटा रहनि। वृद्धावस्थामे के देखितनि? फेर एकसरे ओ बहुत किछु नहि कए सकैत छलाह । दछिनबारिटोलक छौंड़ासभकेँ सुधाकर मिला लेने छल । ओ सभ छोटछीन लोभमे पड़िकए ओकर पाछू-पाछू चलैत रहैत छल । उतरबारिटोलक लोकसभ जरूर विरोध केलक आ कइए रहल अछि,मुदा थाना पुलिस सभ सुधाकरेक संग दए रहल छलैक । लोकसभ देखिते रहि गेल आ पाठशाला बुलडोजरक चोट पड़िते हहरि कए खसि पढ़ल । किछुए दिनमे ओ जगह सपाट भए गेल छल। ओहीठाम सुधाकर अपन घर बना लेलाह । आब तँ ई हाल अछि जे ओतए कहलोपर केओ पाठशालाक चर्चा नहि करए

चाहैत अछि । दछिनबारिटोलक लोकक कहब-"ककरा लेल कानू? जकरा लेल कानब तकरा आँखिमे नोरे ने?" माने जे दछिनबारिटोलबलाक छलैक पाठशाला । ओएहसभ ओहिमे शिक्षक होइत छलाह,हुनके बालवच्चा ओहिमे विद्यार्थी रहैत छल। उतरबारिटोल लोकसभ तँ जन बनिहार छल । बेसी सँ बेसी ओहिमे रखबार वा एहने कोनो छोटमोट काज भेटि जाइत छलैक । समय बदललैक । ओकरसभक समाजपर वर्चस्व बढ़लैक । शिक्षा आ संपत्ति दुनूमे ओ सभ आगू भए गेल । ततबे नहि विचारो श्रेष्ठ भए गेलैक । तेँ ने ओएहसभ जयन्तक संग ठाढ़ भेल । से तँ भेल, मुदा सुधाकर जे चाहलक से केलक । जयन्त जानकीधाम जएबाक हेतु विवश भए गेलाह । ई सभ घटनाक्रम सीनेमाक रील जकाँ आइ जयन्तक माथमे घुमि रहल छलनि ।

कालीकान्तक दरबारमे पुस्तक विमोचनक गरिमामय वातावरणमे जयन्त आजुक उत्सवक केन्द्रविंदु छलाह । कालीकान्त सपरिवार मंचपर विराजमान रहथि । चंद्रिका तँ रहि-रहि कए जयन्तकेँ उचकि-उचकि कए देखैत रहैत छलि । आइ जयन्त लागिओ रहल छथि तेहने , जेना कोनो राजकुमार होथि। गौर वर्ण,नमगर,सोटल देह ,तेजस्वितासँ परिपूर्ण हुनकर आभामण्डल देखैत बनैत छल ।

" अपनेक आज्ञा हो तँ आजुकसभा प्रारंभ कएल जाए ।"- आचार्यजी बजलाह ।

"अवश्य । आज्ञा अछि ।"- कालीकान्त बजलाह ।

सभसँ पहिने “जय जय भैरवि असुर भयाविनी.....” गाओल गेल । गीत गेनिहारक नेतृत्व कालीकान्तक कन्या चंद्रिका कए रहल छलीह। संपूर्ण वातावरण जगदम्बाक आराधनामे लीन

लगैत छल । भगवती गीतक बाद आचार्यजी, नागबाबा दिस ताकि कए कहैत छथि-

" ई छथि जानकीधामक प्रसिद्ध संत नागबाबा । हिनके अनुकंपासँ सुधाकरक जान बाँचल । अन्यथा तँ टुगर जयन्त बागमतीमे डुबि कए प्राण देबए जा रहल छलाह । तेँ हमर आग्रह जे ओ सभसँ पहिने जयन्तकेँ आशीर्वाद देथि ।'

नागबाबाकेँ ओना के नहि जनैत छल । कतेको लोककेँ ओ अपन शक्तिसँ जान बचओने छथि ।

चारूकातसँ लोक बाजि उठल-"नागबाबाक जय!"

नागबाबा कहैत छथि-"हम तँ मात्र निमित्त छलहुँ। जयन्तकेँ लिखल छलनि तेँ हम हुनका जानकीधाम आनि सकलहुँ। ओना हिनका विद्वान बनेबामे आचार्यजीक अमूल्य योगदान अछि। संगे कालीकान्त सेहो हुनका उत्साहित करैत रहलथि । हमरा लोकनिक हुनका बहुत-बहुत आशीर्वाद अछि । निश्चय ओ मानवताक हेतु एकटा वरदान सिद्ध हेताह ।"- से कहि नागबाबा बैसि गेलाह ।

"आब हम जयन्तसँ आग्रह करबनि जे अपन एहि शोधग्रंथक बारेमे हमरा लोकनिकेँ किछु जानकारी देथि ।'

जयन्तक शोभा देखैत बनैत छल । पचीस सालक तेजस्वी युवक पीत वस्त्र पहिरने जहाँ ठाढ़ भेलाह कि एकस्वरसँ लोक बाजि उठल-

"जयन्त अमर रहथु!"

जयन्त संपूर्ण एकाग्रतासँ अपन शोधग्रंथक बारे मे बाजि रहल छलाह –

"ई ग्रंथ हमर पूर्वज द्वारा कएल गेल शोध काजकेँ आगू बढ़बाक प्रयास मात्र अछि । एहिसँ बहुत बेसी काज ओ सभ पहिनहि कए चुकल छथि । हम तँ मात्र ओही काजकेँ आगू केलहुँ अछि । ई ग्रंथ मूलतः मिथिलाक संस्कृतिकक गौरव गाथा थिक । मिथिलाक माटि-पानिमे कतेको मनीषि लोकनि उतपन्न भेलाह आ अपन सर्वस्व ज्ञान संचयमे लगा देलाह । हमरा विश्वास अछि जे पाठक लोकनिकेँ एहिसँ मिथिलाक संस्कृतिकक बारेमे बहुत किछु बुझबाक मौका भेटतनि ।"

जाबे जयन्त बजैत रहलाह,ताबे लगबे नहि करए जे हजारों लोक हुनका सुनि रहल अछि । जयन्तक ओजस्वितापूर्ण भाषण सुनि सभ मंत्रमुग्ध छलाह । आब ओ अपन भाषण समाप्ते करए जा रहल छलाह कि ज्योतिषी हुनका टोकलाह-

" अहाँ अरवन नेना थिकहुँ। अपने मुँहे अपन एतेक प्रशंसा करब अहाँकेँ शोभा नहि दैत अछि जयन्त! हम एहि पोथीकेँ पढ़लहुँ अछि । ई तँ मात्र पुरनका पोथीसभक नकल अछि । अहाँसँ बेसी कतेको नीक विद्वान हमर गाममे भेल छथि आ छथिहो। एहन पोथी के पढ़त? इ तँ मात्र समय खराब करब भेल।.... आदि..आदि... ।" ओ आओर बाजएपर प्रवृत छलाह कि ओहिठाम उपस्थित लोकसभ चिचिआ उठल-

"बैसि जाउ,बैसि जाउ... । हमसभ अहाँक पक्षपाती आ दुर्भावनापूर्ण विचार नहि सुनए चाहैत छी ।.." सौंसे हल्ला होमए लागल । एक क्षण लेल सभ बिसरि गेल जे कालीकान्त सपरिवार ओतए विद्यमान छथि ।

कारी भुट्ट , बड़ीटा माथ नाक पीचल ,चानिपरसँ केश उड़ल ज्योतिषीजी मिथिलेक छलाह । नेनामे संगतुरिआसभ

हुनका नकपीच्चा कहैत छल ,केओ मुण्डा कहैत छल । कालीकान्त हुनकर ज्योतिष ज्ञानसँ बहुत प्रभावित रहथि । तेँ हुनका अपन ज्योतिषी बनाकए रखने छलथि। सभटा सुख-सुविधा हुनका छलनि। मुदा कहबी छैक जे चालि,प्रकृति आ बेमाए,ई तीनू संगे जाए -सएह हुनका संगे रहनि । ओ जयन्तसँ ततेक ईर्ष्या करथि जे होनि की करी, की नहि । हुनकर शोधग्रंथकेँ नष्ट करबाक प्रयास सेहो ओ केने रहथि । मुदा पकड़ल गेलाह । तथापि कालीकान्त छोड़ि देलखिन कारण जे किछु रहल होउ । मुदा आजुक घटनासँ कालीकान्त बहुत तमसेलाह-

"की अड़बड़ बाजि रहल छी? अहाँसँ एहन आशा नहि छल। ई सभा विद्वान लोकनिक हेतु अछि । व्यक्तिगत ईर्ष्या द्वेष प्रकट करबाक ई उपयुक्त स्थान नहि अछि ।"

"कालीकान्तक टोकारा दैते आरो लोकसभ विरोध प्रकट करए लगलाह ।

" कालीकान्त सही कहि रहल छथि। हमरा लोकनिकेँ जयन्तक विद्वताकेँ आदर करबाक चाही । जयन्त कतेक परिश्रमपूर्वक एहिग्रंथक रचना केलनि अछि । अनेरे चिरौरी नहि करथि-ज्योतिषीजी ।'

ज्योतिषीजी लाजे कठौत भए चुप भेलाह से चुप्पे रहि गेलाह आ मौका देखितहि बिना ककरो किछु कहने ओहिठामसँ घसकि गेलाह । ज्योतिषीजीकेँ चलि गेलाक बाद सभामे फेरसँ शांति भेल। लोककेँ नहि बुझाइक जे आखिर ई व्यक्ति के छथि आ एना किएक केलाह? आब तँ जे हेबाक छलैक से भइए गेलैक ,मुदा एतेक रमनगर माहौलमे एकाएक तनाव उतपन्न कए गेलैक ।

आचार्यजी ई बात बुझलथि । ओ कालीकान्तसँ मंत्रणा कए कार्यक्रममे कनीक परिवर्तन केलथि ।

" आब किछु काल संगीत कार्यक्रम होएत । तकर बाद जलखै आ चाह पान कएल जाएत । शेष कार्यक्रम तकरबाद होएत।

कालीकान्तक दरबारक बात छलैक । एक सँ एक गबैया सभ आएल छलाह । कैकटा तँ विद्यापति गीत गेबामे माहिर रहथि। गीत गोविंद गायनक सेहो ओरिआन छल । सभसँ पहिने गीत शुरु केलीह चंद्रिका-

"के पतिआ लए जाएत रे मोर प्रियतम पासे.... । आश्चर्य,बेजोड़ .....। लोकसभ एकस्वरमे बाह! बाह! कए उठलाह। जयन्त सेहो आश्चर्यचकित रहथि जे चंद्रिका मैथिलीमे एहन सुंदर केना गाबि रहल छथि । मुदा हुनका चंद्रिकाक बारेमे कतेक बात बुझले रहनि? कालीकान्त चंद्रिकाक गायनपर लोकक थपड़ी सुनि,सुनि मंत्रमुग्ध रहथि । एकहि क्षणमे सौंसे पंडाल नि:शब्द भए गेल । जेना सभहक चित्त हरि लेल गेल हो । जयन्तक उत्सुकताक तँ अंते नहि रहनि । ओ ई नहि बूझि सकल रहथि जे चंद्रिका एतेक नीक गबैत छथि आ सेहो मैथिलीमे? एकबेर हुनका मोनमे शंका भेलनि जे कहीं ईहो मैथिले तँ नहि छथि? फेर भेलनि जे ई कोना भए सकैत अछि? कालीकान्त मिथिला की करए जेताह? मुदा मैथिली शब्दसभक एतेक शुद्ध आ स्पष्ट उच्चारण तँ किछु कहि रहल छल?

चंद्रिकाक संगीत समाप्त होइते पण्डाल थपड़ीसँ गड़गड़ा उठल । सभ एतबे कहए जे एकटा आओर,एकटा आओर...।

कालीकान्तक सीना गर्वसँ फुलि गेलनि । दर्शकक आग्रहपर चंद्रिका एकटा आओर मैथिली गीत गेनाइ शुरु केलथि-

सुनु,सुनु पनिभरनी गे कनी घुरिओक ताक........।"

ऐँ ई तँ मधुपजीक गीत गाबि रहल छथि । एकरा मैथिली गीतक एतेक ज्ञान केना भेलैक? जयन्त बेरि-बेरि सोचथि ।

ओमहर जनता तँ बुझू गीत सुनि-सुनि भावविभोर भए गेल छल ।

पंडालमे आओर कलाकारसभ छलाह । मुदा सभ चंद्रिका, चंद्रिका चिचिआ रहल छल । आचार्यजी कहुना कए सम्हारलनि । तकरबाद एकटा आन गायककेँ सेहो मौका देल गेल। भोजनक समय भए गेल छल। अस्तु,सभगोटेकेँ भोजनगृहमे चलबाक आग्रह भेल ।

"कालीकान्तक भोजनक हेतु बनल विशिष्ट प्रकोष्ठमे कालीकान्त, गौरी, चंद्रिका, जयन्त, आचार्यजी, नागबाबा आ किछु विद्वान लोकनि छलाह । जकरे देखु सएह चंद्रिकाक गायनक चर्च कए रहल छलाह ।

" हमरा नहि बूझल छल जे अहाँ मैथिली गीतसभ एतेक नीकसँ गाबि लैत छी ।"-जयन्त कहलखिन।

"अरवन अहाँकेँ बहुत किछु बुझबाक अछि ।"-से कहि चंद्रिका जोरसँ हँसि देलखिन । कालीकान्त ओमहरे देखि रहल छलाह। जयन्त लजा गेलाह । ताबे गौरी सहटि कए जयन्त लग आबि गेलीह ।

“चंद्रिकाक मात्रिक मिथिलेमे छैक।"

"ऐँ! से नहि बूझल छल । कोन गाम?"

“दरभंगासँ सटले "महिपुर ।"

"ओ ई तँ हमरा बुझले नहि छल । तेँ ने एतेक नीक मैथिली गीत गबैत छथि ।"

" जाबे जानकीधाममे रहलहुँ ताबे पढ़एमे लागल रही । तकर बाद अहाँ रहबे नहि केलहुँ तँ बुझबैक कोना?"

जयन्त बड़ असमंजसमे पड़ि गेल बुझाइत छलाह । आचार्यजी ई बात बुझलखिन । ओ बातकेँ बदलैत कहैत छथि-

"भोजनक बाद कालीकान्तक भाषण हेबाक अछि । विद्वानसभ प्रतीक्षा कए रहल छथि ।"

"ठीक छैक । हमरा लोकनि ओतहि चली ।"-कालीकान्त बजलाह । आगू-आगू कालीकान्त आ पाछू-पाछू सभगोटे सभा मंडप दिस बिदा भेलाह ।

बैसक फेरसँ प्रारंभ होइतहि कालीकान्त जयन्तक गुणगान करए लगलाह-

"ओना एहि दुनिआमे एक सँ एक विद्वान छथि । मुदा एकहिठाम एतेक तरहक व्यक्तिगत गुण जे हमसभ जयन्तमे देखैत छी से बहुत दुर्लभ अछि । निश्चय ई ईश्वरक आशीर्वादक बिना संभव नहि अछि । जयन्त संस्कृतेटाक विद्वान नहि छथि,अपितु एहिठाम रहैत ओ कतेको देशी,विदेशी भाषामे महारत प्राप्त केने छथि । विद्वान तँ ई छथिहे संगे हिनकर व्यक्तित्वमे त्याग,कर्तव्यक प्रति निष्ठा भरल अछि । ओ उच्च कोटिक गायक आ सिद्धहस्त ज्योतिषी सेहो छथि । एतेक कम समयमे एतेक रास गुण हासिल कए लेब अपना-आपमे दृष्टांत अछि । तेँ हमर इच्छा अछि जे जयन्तक हमरा ओहिठाम राज-पाट सम्हारथि । एहिसँ हमरा लोकनि हुनकर अनुग्रहित होएब ।"

संकोचवश जयन्त किछु जबाब नहि दए पाबि रहल छथि। आचार्यजी हुनकार कानमे किछु कहैत छथि । ओहो किछु जबाब दैत छथिन । फेर आचार्यजी बजैत छथि-

" ई परम सौभाग्यक बात हमरो लेल आ हमर विद्यार्थी जयन्तोक लेल अछि जे अपने हुनकर प्रतिभाक एतेक सम्मान करैत छिअनि । परंतु उचित होएत जे जयन्तकेँ विचारबाक हेतु किछु समय देल जाए "

कालीकान्तक मोन छोट भए गेलनि । ओ आगू किछु नहि बजलाह । चारूकात मौन पसरि गेल ।

"सएह कहू ,एहन अवसरकेँ जयन्त गमा रहल छथि । आपसमे लोकसभ गप्प कए रहल छथि ।

"अपन सिद्धांतपर अड़ल रहएबला लोक लागि रहल छथि।"-दोसर बाजल ।

"कपार फुटि गेल छनि, नहि तँ एहनो काज केओ छोड़ैत अछि ।"-तेसर बाजल । एहि तरहें तरह-तरहक बातसभ चारूकात होइत रहल । सभा विसर्जित भए गेल । जयन्त आचार्यजीक संगे आगू बढ़लाह। चंद्रिका एकटक हुनका देखैत रहि गेलीह ।

२७

कालीकान्त परिवार सहित त्रिकुट भवन पहुँचलाह । हुनका गुमसुम देखि कए गौरी पुछैत छथि-"की बात छैक? बड़ उदास लागि रहल छी?"

"बात की रहतैक? कतेको दिनसँ इच्छा छल जे चंद्रिकाक बिआह कए दिअनि । ताहि हेतु जयन्त बहुत उपयुक्त व्यक्ति लागि

रहल छथि । चंद्रिकाकेँ हुनका प्रति आकर्षण सेहो देखाइत अछि। ओही द्वारे हम हुनका राज-काजमे लगाबए चाहलहुँ । मुदा ओ तँ एकदम बहीर भेल छथि । जहाँ एहि तरहक कोनो प्रस्ताव होइत अछि की तुरंत ओकर प्रतिवाद कए दैत छथि । ईहो नहि जे सोच-विचार करबाक हेतु किछु समय लगाबथि । की करी किछु फुरा नहि रहल अछि ।"

"एहिमे चिंता करबाक कोन बात भेलैक? जयन्त कोनो नेना तँ छथि ने? ओ परमविद्वान व्यक्ति छथि। सभसँ बड़का बात छैक जे हुनका अहाँक राज-पाटक कोनो लोभ-लालच नहि छनि । तेँ हुनका एहि तरहें तँ काबू नहि कएल जा सकैत अछि ।"

"तखन की कएल जाए?"

" ओ कोनो मूर्ख नहि छथि । अहाँक मोनक बातकेँ ताड़ि जाइत हेताह। हुनका मात्र प्रेमेसँ जीतल जा सकैत अछि । ताहि हेतु चंद्रिकापर छोड़ि दिऔक । जँ ओकर सिन्नुर जोर पकड़तैक तँ काज भए जेतैक नहि तँ जे भावी । एहि लेल अपन शांति खराब करब कोनो बुद्धिमानी नहि होएत।"

"बात तँ ठीके कहि रहल छी । असलमे संतानक मोहमे लोक आन्हर भए जाइत अछि । सभकिछु बुझितो हम परेसान अही लेल भए रहल छी ।"

“बैसारमे ज्योतिषीजीक व्यवहारसँ जयन्त बहुत दुखी रहथि ।"-गौरी बजलीह ।

"जाहि तरहें ओ बजलाह ककरो खराब लगितैक । हमहूँ बहुत परेसान भए गेल रही । अहाँक पितिऔत छथि नहि तँ हम हिनका सभदिनक हेतु छुट्टी कए दितिअनि ।"'

"कोनो जरूरी छैक जे सभबातमे तमसाइए जाइ । एहिसँ तँ समस्या आओर बिकट भए सकैत छी । हमरा लोकनिकेँ ई जानबाक प्रयास करबाक चाही जे आखिर ओ एना केलथि किएक? हुनका नीकसँ बूझल रहनि जे ओ जे किछु कए रहल छथि से पसिंद नहि कएल जाएत,तथापि ओ एहन बजलाह आ बजिते रहि गेलाह।"

"हमरा लोकनिकेँ हुनकासँ गप्प करबाक चाही । आखिर बुझिऐक तँ जे हुनकर मोनमे की छलनि आ आगू ओ की चाहैत छथि । जँ हुनकर एहने विचार रहि गेल तखन हमरासभकेँ सोचए पड़ि सकैत अछि जे की करी?"

"ठीक कहलहुँ । हुनकासँ साफ-साफ गप्प करब जरूरी अछि ।"

कालीकान्त ज्योतिषीजीकेँ समाद पठओलखिन जे ओ तुरंत भेंट करथि । ओहि समय ज्योतिषीजी किछुगोटेसँ गप्प कए रहल छलाह । कालीकान्तक समाद भेटिते ओ बिदा भेलाह ।

"बढ़िआँ होएत जे अहाँ हुनकासँ असगरेमे गप्प करी ।"-से कहि गौरी उठि गेलीह । ओ चौकठि धरि गेल रहथि की ज्योतिषीजी भेटलखिन ।

"हम तँ अहींसँ भेंट करए अबैत रही।"

"कालीकान्त अहाँक बाट ताकि रहल छथि । हम कनी जरूरी काजसँ जा रहल छी ।"

“ठीक छैक ।"

ज्योतिषीजी कालीकान्त लग पहुँचि गेल रहथि । मुदा कालीकान्तक ध्यान कतहु दोसर ठाम रहनि । कनी काल तँ प्रतीक्षा

केलाह । तकरबादो जखन ओ अपनेमे रमल रहथि तँ ओ टोकलखिन -

" हमरा बजओलहुँ ।"

"ओ ज्योतिषीजी! आउ,आउ ।"

दुनूगोटे आमने-सामने बैसलाह । जलखै,चाह-पान आबि गेलैक ।

चाह पीबैत गप्प-सप्प होइत रहल ।

"हम ई नहि बूझि सकलहुँ जे ओहि दिन पुस्तक विमोचनक समयमे अहाँ जयन्तक खिलाफ किएक भए गेलहुँ?"

" हम किछु बाजए नहि चाही । मुदा हमरा बाजए पड़ल ।"

"से की?"

"हुनकर ग्रंथमे मौलिकता नहि अछि । ओ तँ एमहर-ओमहरसँ नकल कए लेने छथि आ कहैत छथि जे हुनकर ओ शोधग्रंथ छनि ।"

"मुदा अहाँक तँ ओ विषयो नहि अछि । ओहिठाम एक सँ एक विद्वान बैसल छलाह । ओ सभ किछु नहि बजलाह, अपितु हुनकर काजक प्रशंसा करैत गेलाह, अहींकेँ की समस्या भए गेल जे एना भरल सभामे हुनका अपमानित केलिअनि ।"

"क्षमा कएल जाए । हमरा हुनका कोन मोकाबला अछि । ओ हमरा लग नेना छथि ।"

"तेँ ने सोचबाक छल ।"

"जयन्त तँ हमर कुटुम्ब छथि । हम हुनकर अहित किएक करबनि ।"

"मुदा अहाँक काज तँ तेहने भेल ।"

"हमरा जे वाजिब बुझाएल से बजलहुँ । यदि अपनेकेँ खराब लागल तँ हम क्षमा प्रार्थी छी ।"

कालीकान्त गुम्म पड़ि गेलाह ।

"ठीक छैक । अहाँ जा सकैत छी ।"

ज्योतिषीजी कालीकान्तक आज्ञा पाबि बिदा भेलाह । मुदा कालीकान्तक तामस बढ़िए गेलनि । ओ ई बात नीकसँ बूझि गेलाह जे ज्योतिषीजीक मोन शुद्ध नहि छनि । ज्योतिषीजीसँ गप्प केलाक बाद कालीकान्त आश्वस्त भए गेलाह जे ओ किछु जबरदस्त खेल खेला रहल छथि ।

२८

नान्हिटा मनुक्खक जिनगीमे कहि नहि कतेक तरहक खेलसभ होइत रहैत अछि । की-की घटना-दुर्घटना होइत रहैत अछि । केहन-केहन काज लोक करैत रहैत अछि । ओकरा होइत रहैत छैक जेना ओ अमर हो । जे किछु नीक अछि से हमरे बखरामे आबए । सभक हक हम मारि ली तँ कोनो हरजा नहि । बस हम सुखी रही,आओर जे हेतैक से हेतैक । मनुक्खक इएह स्वार्थी प्रवृति सर्वनाशक जड़ि अछि । एही कारणसँ ई संसार एहन भेल जा रहल अछि जे जयन्त सन विद्वानकेँ अपन डीह-डाबर छोड़बाक हेतु विवश कए देलक । ओ तँ समाजक सेवा हेतु गेल छलाह । ककरोसँ किछु लेब तँ हुनकर स्वभावमे छनिहे नहि । तथापि सुधाकरसन प्रचंडमूर्खसँ हुनका सामना भेलनि । तकरा की कहबैक-नियति,आओर की कहल जा सकैत अछि? कहबी छैक- "विधि बामके करनी कठिन , जेहिं मातु कीन्ही बावरी ।

असगरमे बैसल जयन्तक हृदयमे रहि-रहि कए टीस उठि जाइत छनि । मातृभूमिक प्रति मोह कही वा कर्तव्यक भावना कही, हुनकर मोन बेरि-बेरि लखनपुर स्थित पाठशालापर पहुँचि जाइत अछि । हुनका बिसरने नहि बिसराइत छनि ओ क्षण जखन दूपहर रातिमे कहुना कए सोङरपर लटकल ओहि चारक तरमे सुधाकरक लठैतसभ पहुँचि गेल छल । कहि नहि ओ सभ की जुलुम करैत,मुदा धन कही उतरबारिटोलक रखबारसभकेँ जे जानपर खेपि कए जयन्तक आ हुनकर कृतिक रक्षा केलक । आब जखन पुस्तकक विमोचन भए गेल,जयन्तक माथ हल्लुक लगैत छलनि। पुस्तकक मूलप्रति कालीकान्तक पुस्तकालयमे सुरक्षित राखि देल गेल छल । आब ओ एहि समस्यासँ तँ मुक्त छलाह। मुदा ज्योतिषीजीक व्यवहार लए कए ओ बहुत दुखी रहथि। संवेदनशील स्वभावक लोक हेबाक कारण बेरि-बेरि हुनका एहि बातपर सोचाइत रहैत छनि । ई हुनका बूझल रहनि जे ज्योतिषीजी मैथिले छथि । मुदा हुनका ई जानकारीमे नहि रहनि जे ओ गौरीक पितिऔत छलाह। हेबो कोना करितनि? निरंतर अध्ययनमे लीन रहबाक कारण हुनका लगपासोक बहुत कम जानकारी रहैत छलनि।

जयन्तकेँ अखनहुँ विश्वास नहि होनि जे सुधाकर योजनावद्ध तरीकासँ हुनकर पाछू पड़ल रहथि,सेहो एहि हद धरि जे जानकीधाममे लठैत पठा कए हुनकर शोधग्रंथक चोरी करबा देलाह। ई तँ संयोग रहैक जे बादमे ओ भेटि गेल । तखने जयन्तक माथा ठनकल रहनि जे ई लठैतसभक जड़ि कतहु आओर अछि कारण पोथी चोरा कए चोर की करत? सोना-चानी होइत ,टाका

पैसा होइत तकर चोरी करितए । मुदा हुनकर शोधग्रंथक पाछू किएक पड़ि गेल? आब तँ हुनका बहुत किछु स्पष्ट भए गेल रहनि ।

ज्योतिषीजी सुधाकरसँ मिलि कए षड़यंत्रसभ करैत रहैत छलाह । आश्चर्यक बात छैक जे सद्यः पकड़ेलाक बादो कालीकान्त हुनका किछु नहि केलखिन आ ओ अखनो कालीकान्तक कृपापात्र बनले छथि,त्रिकुट भवनमे रहिते छथि । मुदा से होइत किएक नहि? ओ तँ आब सुधाकरकेँ बुझबामे अएलनि जे गौरीक ज्योतिषीजी पितिऔते छथि। अस्तु,जयन्त सम्हरिकए रहए लगलाह ।

साइत ओ अपन प्रयासमे सफल रहितथि । मुदा चंद्रिका लए कए बेस मोसकिलमे पड़ि जाइत छलाह । फेर ओहो तँ मनुक्खे छलाह । कोना पाथर तँ रहथि नहि। चंद्रिकाक प्रति कतहु-ने -कतहु हुनको मोनमे स्थान बनि गेल छलनि । करथि तँ की करथि? बहुत विकट समस्यासभ भेल जा रहल छल । भने ओ अपन गाम चलि गेल छलाह । मुदा विधाताकेँ से मंजूर नहि भेलनि। मुदा आब की कएल जाए...? ई समस्या बेरि-बेरि हुनका परेसान करैत रहैत छलनि।

समय द्रुतगतिसँ भागि रहल छलैक । नान्हिटा किशोरसँ बढ़ैत-बढ़ैत जयन्त आब युवक भए गेल छलाह । तुलसीबाबा कहने रहथि-

" बरसहि जलद भूमि नियराये..जथा नवहि बुध विद्या पाए...!" कहक माने जे विद्या भेलासँ विद्वान विनम्र भए जाइत छथि, से जँ सद्यः देखबाक हो तँ जयन्त लग चलि जाउ । घमंडक तँ कतहु लेश नहि छलनि हुनकामे। शांत, गंभीर आ चिंतनमे लीन रहैत छलाह जयन्त । जेहने विलक्षण बुद्धि, तेहने देखबामे सुंदर छलाह ओ । तेँ ने चंद्रिका हुनका पछोड़ केने छलीह ।

असलमे जयन्त एहिसभमे पड़ए नहि चाहैत छलाह । हुनकर मूल लक्ष्य तँ अपन मातृभूमिमे पूर्वजक स्थानपर बनल पाठशालाकेँ पुनर्जीवित करबाक छल । मुदा से आब होएत कोना? एमहर चंद्रिका, कालीकान्तक आकर्षक प्रस्ताव,तँ ओमहर छल गामक उजरल-उपटल पाठशाला जकर आब नामो-निसान मेटा देने छल-के? हुनके पितिऔत सुधाकर । लोभक कारण सुधाकर सभकिछु पीबि गेल छलाह । कोनो कुकर्म करए हेतु तैयार छलाह ।

किंकर्तव्यविमूढ़ जयन्त नदीकातमे बैसल छलाह । मंद-मंद हबा बहि रहल छल । सूर्यास्तक समय छल । अस्ताचलगामी भगवान सूर्य अपन तेजकेँ समेटि रहल छलाह कि अचानक हुनका एकटा महिला नदीमे स्नान कए बाहर अबैत देखेलथि ।

"ई तँ चिन्हल लगैत छथि..... ।"-जयन्त मोने-मोन सोचैत छथि ।

क्रमशः ओ महिला आओर लगीच अबैत गेलीह । जयन्त किछु बजितथि ताहिसँ पहिने ओएह चिचिआ उठलीह-

"जयन्त! ..जयन्त!..."

अहाँ के....?"

सएह कहू, तूँ आब हमरा चिन्हितो नहि छैं ने ? हद भए गेल । हम छी शीला.........."

अहाँ एहिठाम कोना?"-जयन्त बजैत छथि ।

" नदीमे स्नान हेतु आएल रही ।"

"ओ मुदा तूँ रहैत कतए छही?"-जयन्त पुछलखिन ।

शीला चुप भए गेलीह । किछु नहि बाजि सकलीह । आँखि नोरसँ भरि गेलनि । जयन्तकेँ भेलनि जेना किछु गलती भए

गेल। हुनकर ध्यान शीला दिस गेलनि । गोर-नार,नमगर,पैघ-पैघ आँखि, ,सोंटल देह सभकिछु अपूर्वे छलैक शीलामे । शीला एखनो अत्यंत रमणीक लगैत छलीह । ओ चुरी पहिरने छथि । माथमे सिंदूरो केने छथि । छीटबला नुआ पहिरने छथि । कहक माने बिआहल छथि,सधबा छथि तखन असगर किएक छथि? जयन्तक मोनमे तरह-तरहक संशय उठि रहल छलनि कारण गाममे जखन ओ शीलाक पुछारी केने छलाह तँ केओ निजगुत जानकारी नहि दए सकलनि , आचार्योजी नहि । ओ तँ शीलाक पिता बैदजीसँ पुछबो केने रहथिन । सभ गुम पड़ि गेल रहनि । मुदा ई अकस्मात सामने आबि एकटा पैघ प्रश्न ठाढ़ कए देलथि। जयन्तक नेनाक संगी छलखिन शीला । एतेक दिनक बाद एहि हालमे हुनकासँ भेंट हेतनि से ओ सोचिओ नहि सकैत छलाह ।

जयन्तकेँ किछु पुछल नहि होनि आ शीला किछु बाजथि नहि । एहि तरहें दुनूगोटे एकदोसरकेँ एकटक देखैत रहि गेलथि । चुप्पी तोड़ैत जयन्त पुछैत छथि -

"आइ-काल्हि कतए रहैत छही?"

लगेपासमे ।"

"अपन पता दे जाहिसँ कहिओ काल भेंट-घाँट भए सकैत।"

शीला अपन पता लिखा देलखिन ।

"अबिहैं जरूर ,बहुत रास गप्प करबाक अछि । "-से कहैत ओ आगू बढ़ि गेलीह । जयन्त एकटक हुनका देखैत रहि गेलाह। संयोग केहन होइत छैक । आइ कतेको सालक बाद शीलासँ अकस्मात भेंट भए रहल छलनि, ओहो नदीक कातमे । मुदा ओकर हाल की अछि,कोन परिस्थितिमे जीबि रहल अछि ,गाम-घर

जाइतो अछि कि नहि,से सभ जानबाक इच्छा रहनि मुदा ओतेक गप्प करबाक उपयुक्त परिस्थिति नहि छल । शीला चलि गेली,मुदा जयन्तक मोन हुनकेपर टाङल रहि गेलनि ।

२९

बिआहक बएस भए गेलाक बाद शीलाक पिता हुनका हेतु कथासभक पता लगबए लगलाह । इच्छा रहनि जे नीकठाम काज ठीक कए ली । कैकटा कथासभ भेटबो करनि । मुदा शीला टरका दैत छलखिन ।

"बिआह कतहु भागल जाइत छैक,हम अखन पढ़ि रहल छी । पढ़ाइ-लिखाइसभ दिन नहि पार लगैत छैक । तँ पहिने ई काज कए ली ।"- से सभ कहि ओ पिताक बातकेँ काटि दैत छलखिन । बैदजी शीलाकेँ बहुत मानैत छलखिन । तँ हुनकर इच्छाक खिलाफ जा कए बिआह कए देब हुनका उचित नहि लगैत रहनि । एहि तरहें बहुत समय निकलि गेल । कहि नहि,शीलाक मोनमे की रहैक । मुदा जखन बहुत समय बीति गेल,शीला पढ़ाइ-लिखाइ सेहो कए लेलनि तँ बैदजी शीलाक बिआह लए कए बहुत चिंतित रहए लगलाह। गाम-घरमे शीलाक बिआहमे भए रहल विलंब एकटा चर्चाक विषय भए गेल । गाहे-बगाहे गामक लोक टोकारा दए दैत छल । शीला ई बात बुझलखिन । फेर ओ ओहन आदमीक बाट कतेक दिन धरि तकितथि जकर कोनो अता-पता हुनका लग नहि रहनि ? हारि कए हुनकर बिआह बैदजी ठीक कए देलखिन । बर दिल्लीमे कोनो नीक निजी कंपनीमे प्रबंधक छलथि ।

घरक स्थिति सेहो सुभ्यस्त छलनि । गामेक सुधाकर घटकैती कए रहल छलाह । बर आ ओकर परिवारक प्रति ओ बैदजीकेँ आश्वस्त कए देलखिन । बैदजीक प्रस्ताव ओ एकहि बेरमे मानि गेलाह । शीलाक बिआह भए गेल। बरिआती -सरिआती सभ बहुत प्रसन्न रहथि । शीला चारिए दिनक बाद सासुर चलि गेलीह।

शीलाक चलि गेलाक बाद बैदजी बहुत उदास रहए लगलाह । असगर समय काटब मोसकिल होइत छलनि । रहि-रहि कए शीला मोन पढ़ैत छलखिन। मुदा ओ एहि बातसँ संतुष्ट रहथि जे बेटी नीकठाम गेलखिन। कोनो पिताक हेतु एहिसँ बेसी खुसीक बात आओर की भए सकैत छैक? मोने-मोन ओ भगवानकेँ धन्यवाद दैत रहैत छलाह । मुदा हुनकर ई खुसीपर कहि नहि ककर नजरि लागि गेल । शीला सासुर जाइते महासंकटमे पड़ि गेलीह। ओतए जाइते पता लगैत छनि जे हुनकर बर तँ पहिनेसँ बिआहल छथि। असलमे ओ दिल्लीमे पढ़ैत काल एकटा कालेजक सहपाठिनीक संगे प्रेम विआह कए लेने छलाह । ओ महिला विधर्मी छलि। जखन ई बात बरक पिताकेँ पता लगलनि तँ ओ अनसन कए देलाह । ओ बर माता-पिताक दबाबमे आबि कए शीला संगे दोसर बिआह कए लेलाह । बिआह तँ भए गेल । मुदा हुनकर पहिल पत्नीक परिवारक लोक हुनकापर आक्रमण कए देलक,जानसँ मारबाक धमकी देबए लागल । आब ओ करितथि की? पहिल पत्नीकेँ राखए पड़लनि। से बात जखन शीलाकेँ पता लगलनि तँ ओ हुनका संगे रहबाक हेतु किन्नहु तैयार नहि भेलीह । सभदिनक हेतु हुनका छोड़ि जानकीधाम ससुरक डेरापर चलि गेलीह ।

जयन्तकेँ शीलाक बारेमे ततेक उत्सुकता भेलनि जे ओ एकदिन हुनकर देल पतापर पहुँचि गेलाह। हुनका देखितहि शीलाक प्रसन्नताक अंत नहि छलनि । दुनूगोटामे गप्प-सप्प होइत-होइत समय केना बितल से नहि बूझि सकलाह । साँझ भए रहल छल । शीलाक स्थिति-परिस्थितिसँ ओ बहुत चिंतित भए गेलथि । मुदा कइए की सकैत छलाह?

"हमरा ओहि आदमीक संगे एको घड़ी रहब संभव नहि बुझाएल । एहन धोखेबाज, दुष्ट व्यक्ति संगे जीवन बिताएब तँ बहुत दूरक बात थिक ।"

"तखन की भेलैक?"

"की हेतैक? हमर ससुर बहुत प्रयास केलाह जे हम मानि जाइ । मुदा हमरा हुनकापर विश्वास नहि भेल । जखन हुनकर बेटाक बिआह भए गेल रहनि तँ दोसर बिआह करेबाक की औचित्य छल?"

"अहाँक ससुर के छथि आ ओ कतए रहैत छथि?"

"ओ कालीकान्तक ओहिठाम ज्योतिषीजीक नामसँ जानल जाइत छथि । अहींक पितिऔत सुधाकरक कुटुम्ब छथिन।"

" सएह कहू, ओ एहन काज केलाह? हद भए गेल ।"

"एहिमे सभटा दोष सुधाकरक छैक । ओएह हमर पिताकेँ फँसओलथि । हुनकर बातपर विश्वास कए ओ हमर बिआह ठीक कए देलथि ।"

"बहुत अन्याय भेल अहाँ संगे । एहि तरहें अहाँ कतेक दिन रहब?"

शीला कानए लगलीह । जयन्त कैं बहुत दुख भेलनि। मुदा कइए की सकैत छलाह?"

हम फेर आएब "-से कहि ओ बिदा भेलाह ।

जयन्त चौकठि लग पहुँचले हेताह कि ज्योतिषीजी गाडी़सँ उतरलाह ।

जयन्त प्रयास केलाह जे काते-काते निकलि जाइ । मुदा से संभव नहि भेल । चौकठिसँ बाहर होइतहि दुनूगोटेक आमना-सामना भए गेलनि । जयन्तकैं ओहिठामसँ निकलैत देखि ज्योतिषीजी बाजि उठलाह –

"एहिठाम केना अएलहुँ?"

"शीला हमर नेनाक संगी छथि । संयोगसँ आइ नदीकातमे देखा गेलीह । बहुत दिनक बाद भेंट भेल रहए तैं जिज्ञाशावश नहि रहल गेल । मुदा हुनका देखि कए बहुत कष्ट भेल । अहाँक रहैत एतेक अन्याय होएब बहुत दुखक बात थिक । अहाँ शीलाक जीवन बरबाद कए देलिऐक । मानवताक नामपर अहाँ एकटा कलंक छी।"-जयन्त बजलाह ।

"अहाँकें एहिसँ की मतलब? ई हमर पारिवारिक समस्या अछि आ हम एकर समाधानमे लागल छी।"

“आब की समाधान हेतैक । जखन अहाँक पुत्रक बिआह पहिनेसँ भेल छलनि तखन एहन अन्याय करबाक की औचित्य छल?"

"हमरोसभकें ई बात नहि बूझल छल । बादमे पता लागल।"

"गलत बाजि रहल छी । अहाँकें सभबात नीकसँ बूझल छल । "

"अहाँ अनेरे एहि मामलामे टांग अड़ा रहल छी ।"

"एक आदमीक जिनगी नष्ट केलाक बादो अहाँ एना बाजि रहल छी । एतेक भारी अपराध अहाँक व्यक्तिगत समस्या कोना भए सकैत अछि?

कहि नहि सदति शांत रहएबला जयन्तकेँ अचानक एतेक तामस किएक भेलनि? संभवतः ओ शीलासंग कएल गेल अन्यायसँ पहिनेसँ बहुत दुखी छलाह । संयोगवश ओ सामने आबि गेल रहथि आ हुनका लोकनिमे वाद-विवादक स्थिति बनि गेल छल। बात बढ़ैत देखि शीला बाहर भेलीह । ओ जयन्तकेँ इसारा कए किछु कहए चाहथि। मुदा ओ अंठा कए आगू बढ़ि गेलाह ।

३०

पुस्तक विमोचनक समयमे ज्योतिषीजीक व्यवहारसँ कालीकान्त बहुत दुखी रहथि । कालीकान्त नहि बुझि सकलथि जे ओ एहनो कए सकैत छथि,सेहो जयन्त सन विद्वानक संगे । मुदा एहिमे तँ ओ बहुत दिनसँ लागल रहथि । सुधाकर आ हुनक लठैतसभसँ हुनकर पुरान संपर्क रहनि। सुधाकरकेँ शुरुएसँ ई प्रयास रहनि जे जयन्त गाम घुरि कए नहि आबथि । एहि हेतु ओ अपना भरि प्रयासो केलाह, मुदा से होइत नहि देखि तरह-तरहसँ जयन्तकेँ तंग करए लगलाह । एहिमे ज्योतिषीजी सेहो सुधाकरक संगे भए गेल रहथि ।

ओहि दिन शीलासँ भेंट केलाक बाद ज्योतिषीजी संगे जयन्तकेँ विवाद करैत देखि शीला बहुत चिंतित भए गेल रहथि।

ज्योतिषीजी तँ शीलाकेँ पहिनेसँ बहुत तंग करैत छलाह । ओहि दिन तँ हदे भए गेल। जयन्तकेँ एहिठामसँ गेलाक बाद ज्योतिषीजी जे-से बाजए लगलाह । ओतबे नहि कालीकान्तकेँ जा कए जयन्तक सिकाइत कए देलखिन । जतेक नून-तेल लगा सकलाह से लगा कए बातकेँ बतंगर करबाक चेष्टा केलनि ।

"जयन्त एहन काज नहि कए सकैत छथि । ओ विद्वान छथि, हुनकर निष्ठापर हमरा लोकनिकेँ पूर्ण विश्वास अछि । हमरा तँ अहींक व्यवहारपर सक भए रहल अछि ।"-कालीकान्त बजलाह।

"अहाँ स्वयं जयन्तसँ गप्प कए लिअ । हम अपनेकेँ गलत बात किएक कहब? "

"अहाँ अखन जाउ । हम जयन्तसँ गप्प केलाक बादे किछु कहि सकैत छी ।-कालीकान्त बजलाह।

कालीकान्त जयन्तकेँ बजओलखिन । जयन्त शीलाक ओहिठामसँ लौटि कए बहुत परेसान रहथि । हुनका अपने मोन होनि जे सभटा बात कालीकान्तकेँ जा कए कहथि जाहिसँ शीलाक समस्याक किछु न्यायोचित समाधान होनि । ताबे कालीकान्तक बजाहटि आबि गेल । ओ सभ काज छोड़ि कालीकान्तसँ भेंट करए पहुँचि गेलाह।

कालीकान्तक ओहिठाम जयन्त पहुँचैत छथि । ओहि समय ओ असगरे अपन बैसकीमे किछु चिंतामे रहथि । जयन्तकेँ देखतहि कालीकान्त बाजि उठलाह-

"आउ, आउ जयन्त! हम अहींक बाट ताकि रहल छलहुँ।

"हम स्वयं अपनेसँ भेंट करए चाहैत रही ।"

"की बात?"

"ज्योतिषीजी बहुत अन्याय केलाह ।"

"की भेलैक?"

"हमरे गामक शीला हिनकर पुतहु अछि । ओ नेनामे हमरा संगे पढ़ैत छलि । संयोग एहन भेल जे बहुत दिनक बाद ओकरा हम धारक कातमे देखलिऐक । ओकर परिस्थिति ठीक नहि बुझाएल । हम बहुत चिंतित भए गेलहुँ । मुदा ओ किछु बजबे नहि करए । तखन कहुना कए ओकर पता लेलहुँ । हम की जाने गेलिऐक जे ओ ज्योतिषीजीक पुतहु छथि आ हुनके संगे रहैत छथि। हम हुनकर देल पतापर शीलाक ओहिठाम गेलहुँ । ओतए शीला अपनासंग भेल अन्यायक बात कहए लगलीह । हुनकर दशा देखि हम बहुत दुखी भए गेल रही । ताबतेमे ज्योतिषीजी पहुँचि गेलाह । हमरा ओतए देखि हुनका की भेलनि की नहि से तँ ओ जानथि । मुदा हमरा तँ बहुत तामस भेल । तथापि हम बहुत संयमसँ रहलहुँ । हम तँ एतबे पुछलिअनि जे ओ अपन विवाहित बेटाक दोबारा बिआह शीलाक संगे किएक करओलाह जखन कि सभबात हुनकर जानकारीमे रहनि । बस एतबे बात भेलैक कि ओ हमरापर दुनिआभरिक तामस निकालए लगलाह । ततबे नहि तरह-तरहल धमकी सेहो देबए लगलाह । अहीं कहू जे एहिमे हमर की गलती अछि ?"

"हम बात बुझि गेलिऐक । ज्योतिषी अछिए बदमास । हम तँ गौरीक कारणें चुप छी।"

" एँ! गौरी...."

"गौरीक पितिऔत छथिन ज्योतिषीजी । तेँ मोसकिल भए जाइत अछि । मुदा अहाँ चिंता नहि करू। हम हिनकर समाधान

शीघ्रे निकालब । लगैत अछि जे हिनकर समय हमरासभ लग पूरा भए गेल छनि।"

"हमर से उद्देश्य नहि अछि । हम तँ एतबे चाहब जे शीलाक संगे न्याय होनि । हुनकर पिता बहुत प्रतिष्ठित लोक छथि। तिनका संगे ई धोखा केलनि । एकटा निर्दोष जिनगीकेँ नष्ट करबाक पाप केलनि अछि । तकर समाधान तँ अपनहि कए सकब।"

कालीकान्त जयन्तक बातसँ बहुत प्रभावित रहथि। जयन्त जएबाक उपक्रम कए रहल छलाह कि गौरी चंद्रिकाक संगे आबि गेलखिन।

"एना कोना चलि जाएब जयन्त! किछु जलखै कए लिअ।" -गौरी बजलीह ।

"हम तँ अखन पूजा-पाठो नहि केलहुँ अछि । "

"सरबते पीबि लिअ ।"

जयन्तकेँ देखितहि चंद्रिका बहुत प्रसन्न भए गेल रहथि । मुदा किछु बाजथि नहि। गौरीक संकेत पाबि ओ अपने हाथे सरबत बना कए जयन्तकेँ देलखिन । दुनूगोटेमे कनीकाल हँसी-ठठ्ठा भेल। फेर जयन्त चलि गेलाह ।

जयन्तक गेलाक बाद चंद्रिका बड़ीकालधरि त्रिकुट भवनक ऊपर जा कए हुनका देखैत रहि गेलीह । त्रिकुट भवनसँ निकलि कनी फटकी गेलाक बाद ओ पाछू तकैत छथि तँ चंद्रिकाकेँ हँसैत देखलाह।

ओमहर जयन्त गेलाह आ ऐमहर ज्योतिषीजी बाजए लगलाह।

“हम अपने केँ कहए नहि चाहैत रही । मुदा अहाँ महान छी, हमरा लोकनिक कुटुम्ब छी, तेँ अपनेकेँ नहि कहब तँ कहबे ककरा?"

"बात की छैक?"

"जयन्त..."

"एतबे ओ बाजल छलाह कि कालीकान्त क्रुद्ध भए गेलाह।

"अहाँ बहुत लंपट आदमी छी । आइधरि हम कुटुंब बुझि कए अहाँक सभबातकेँ अंठेने रहैत रहलहुँ । मुदा बात हदसँ बाहर भए रहल अछि ।"

"हम नहि बूझि सकलहुँ ।"

"भगल नहि करू । ओहि दिन पुस्तक विमोचनक कार्यक्रममे अहाँक व्यवहारसँ हमसभ बहुत दुखी छी। अहाँकेँ बुझबाक चाही जे ओ कार्यक्रम हम स्वयं आयोजित केने रही, जयन्त तँ हमर बात मानि कए आबि गेल रहथि । ततबे नहि... ।"

कालीकान्तकेँ बेसी तमसाइत देखि गौरी रोकलखिन -

"छोड़ू बितल बातक घमरथन केलासँ की लाभ । अखन की भेलैक जे अहाँ एतेक तमसा गेल छी?

"सुनैत छी जे ज्योतिषीजी अपन पुतहु संगे बहुत अनुचित केलनि ।"

"से की?"

कालीकान्त शीलाक बारेमे सभटा बात गौरीकेँ कहलखिन।

" ई सत्य नहि अछि ।"

"तँ सत्य की अछि?"

"हमरोसभकेँ सभबात नहि बूझल छल । एतबे सुनने रहिऐक जे कतहु कनी-मनी छैक ।"

"अहाँकेँ सभटा बात बूझल रहए ,तैओ अहाँ अपन बेटाक दोसर बिआह शीलाक संगे करओलहुँ । ई तँ बहुत अनुचित भेल।"

"जे भेल,से भेल । मुदा आबो किछु करू जाहिसँ शीलाक संग न्याय होनि नहि तँ हम न्याय करब ।"-कालीकान्त चेतौनी देलखिन । "

"आब हमरासभकेँ ज्योतिषीजीसँ फराक भए जएबाक चाही । हिनकर चलते हमहूँसभ अयशक भागी भए रहल छी ।"

"मुदा ओ तँ संबंधी छथि । तकर की करबैक?"

"जे होथि, मुदा हम आब हुनका अपन राजकाजमे सामिल नहि राखि सकैत छी । बढ़िआँ होएत जे ओ अपन डेरा सेहो फराक राखथि ।"

" डेरा तँ तुरंत नहि बदलल जा सकैत अछि, ताहि हेतु हिनका किछु पलखति दिऔन । आगू अहाँक मरजी ।" एहि घटनाक बाद कालीकान्त आ हुनक पत्नीमे एहि तरहें आपसी चर्चा भेल । ज्योतिषीजीकेँ सभ बात कहि देल गेलनि । ओ की बजितथि? तथापि हुनकर डेरा तत्काल ठामहि रहए देल गेलनि ।

३१

एहिबेर बहुत दिनपर नागबाबा लखनपुर पहुँचलाह । स्वास्थ्यसँ किछु हरस्त लागि रहल छलाह । उतेरबारिटोलक मंदिरपर हुनकर डेरा छल । शीलाक पिता मधुकान्त बैदकेँ

नागाबाबाक अएबाक सूचना भेटलनि । ओ दौरल हुनकासँ भेंट करबाक हेतु पहुँचलाह।

"बाबा दणडवत्"-बैदजी नागबाबाकेँ प्रणाम कए हुनके पांजरमे बैसि जाइत छथि । कनीके कालमे गोविंद, माधव किछु आओर युवक संगे पहुँचलाह । ओहि समय बैदजी शीलाक समाचार पुछि रहल छलाह।

"जयन्तसँ भेंट भेल रहए । ओएह शीलाक बारेमे किछु-किछु कहैत रहथि ।"

"की कहलथि?"

"की कहू?"-से कहि नागबाबा चुप रहि गेलाह । ओना बैदजीकेँ तँ सभबात बुझले रहनि । ओ गलती कए गेल रहथि । आब पछताइए कए की हेतनि? केहन हँसैत-बजैत शीलाक भविष्यकेँ अंधकारमय कए देलाह,से सोचि-सोचि ओ दुखित भए गेल रहथि । कतबो केओ कहनि कोनो दबाइ नहि खाथि । कोनो डाक्टर-बैद लग नहि जाथि । अपन एकमात्र संतानक दुखसँ भीतरिआ कष्ट रहनि जकर कोनो समाधान हुनका नहि बुझाइन । एहन स्थितिमे नागबाबाक आगमनक समाचर सुनि ओ जेना-तेना हुनका लग पहुँचल रहथि।

"शीलाक आब ओहिठाम रहबाक कोनो लाभ नहि छैक। दिन-प्रतिदिन ओकर स्थिति खरापे भेल जा रहल अछि । तेँ हमरा हिसाबे तँ ओकरा गामे लए आनू ।-नागबाबा कहैत छथि । शीलाक खिस्सा सौंसे गाममे पसरि गेल रहैक । मुदा केओ की करैत? बिआह भए गेलाक बाद बेटीक स्थिति माता-पिताक वशमे नहि रहि जाइत छैक । कानून जतेक समाधान नहि दैत अछि ताहिसँ बेसी समस्या उतपन्न कए दैत अछि । पश्चिमक संस्कृतिक अनुकरण कए लोक

बिआह विच्छेद कए लिअ । मुदा समाज ओकरा डेग-डेगपर प्रताड़ित करबासँ बाम नहि होइत अछि । जएह-सएह वक्र दृष्टिसँ देखए लगैत अछि । जँ ओ नैहरमे वापस आबिओ गेलथि तँ अपने परिवारमे पाहुन भए जाइत छथि। कानून द्वारा प्रद्त्त पैतृक संपत्तिक अधिकार कागजेमे समेटल रहि गेल अछि । सएह सभ सोचि लोक चाहैत अछि जे बेटी जेना-तेना सासुरेमे रहए ।

मुदा शीला संगे तँ बहुत पैघ धोखा भए गेल रहैक। ओकरा संगे तँ ओकर घरोबला नहि रहैक । ओ पहिनहिसँ विधर्मीसँ बिआह कए लेने रहैक । बैदजीक मोनमे अपराधबोध तँ होइते रहनि ,मुदा ताहिसँ की होएत? नागबाबाक हावभाव देखि हुनका बुझबामे कसरि नहि रहलनि जे असलियत की अछि । तैओ मोनमे कतहु उम्मीद रहनि जे की पता किछु नीक भए गेल होइक ?तैं ओ बहुत आशासँ नागबाबाक अएबाक समाचार सुनितहि हुनका लग आएल रहथि । लग-पासमे बैसल युवकसभकेँ सेहो शीलाक खिस्सा बूझल रहनि । ओ संभ सेहो चाहथि जे शीलाक मदति कएल जाए। मुदा से कोना कएल जाए? नागबाबा मुँहे शीलाक कोनो स्पष्ट समाचार नहि सुनलाक बाद हुनकर सभक चिंता आओर बढ़ि गेलनि ।

"हमरा तँ मोन होइत अछि जे अखने जानकीधाम जा कए शीलाक ससुर आ ओकर पतिकेँ जहलमे बंद करबा दी ।"- गोविंद बजलाह ।

"मुदा ताहिसँ होएत की? - माधव कहलखिन।

" तँ की हमसभ मूकदर्शक बनल रही आ एकटा निर्दोष स्त्री अन्याय सहैत रहि जाए ।"

"तोहरसभक हिसाबे की कएल जाए?"-बैदजी बजलाह ।

" हमसभ पाठशालाक समस्याक समाधानक हेतु जयन्तसँ भेंट करबाक हेतु जानकीधाम जाएब । एहि हेतु काल्हि बैसार होएत । ओही बैसारमे शीलाक समस्याक बारेमे सेहो चर्चा कएल जाए आ तकरबाद सभगोटे चलब । ओतहि सोझा-सोझी बात फरिछा जेतैक । एकटा स्त्री संगे एतेक अन्याय कए ओ निचैन नहि रहि सकैत छथि ।"

"बात तँ तूँ सभ वाजिब कए रहल छह। मुदा बैदजी क सहमतिएसँ किछु कएल जएबाक चाही ।" -नागबाबा बजलाह ।

"हम समाजसँ बाहर थोड़े छी । जे सभक विचार, सएह हमरो विचार ।"

साँझमे होमएबला बैसारक हकार देबाक भार टुनटुनकेँ देल गेलनि । टुनटुन स्कूटरपर चढ़ि कए एकटा छौंड़ाक संगे चिकर-चिकरि कए कहलथि -"सुनैत जाउ,आइ साँझमे मंदिरपर बैसार अछि । नागबाबा सेहो रहताह । सभगोटे अवश्य आएब ।"

केओ -केओ पुछलकैक -"कथीक बैसार छैक?"

गौंवासभसँ सबाल-जबाब करब ओकर काज नहि रहैक । ओ तँ मात्र हकार देबाक हेतु गेल रहए । हकार देलाक बाद ओ वापस होइत रहए की सुधाकर भेटि गेलखिन । इसारा दए रुकबाक हेतु कहलखिन । स्कूटरक आगूमे ठाढ़ भए गेलथि । चारूकात सुधाकरक लठैतसभ घेरि लेलक । हारिकए ओकरासभकेँ स्कूटरसँ उतरए पड़लैक ।

"कथीक बैसार छैक?"-सुधाकर पुछलखिन ।

"पाठशालाक पुनर्निर्माण करबाक चर्चा हेतैक ।"

"हमर डीह-डाबरपर पाठशाला बनबए चललाह अछि । हरगिज नहि होमए देबह । जकरा जानक काज नहि होइक सएह

ओहि बैसारमे जाए ।"-सुधाकर चिकरि-चिकरि कए सौंसेगामकेँ ई बात सुना देलखिन।

दोसर दिन साँझमे आरतीक बाद उतरबारिटोलक मंदिरक परिसरमे बैसार शुरु भेल । बैसारमे उतरबारिटोल उमड़ि गेल छल। मुदा दछिनबारिटोलक मात्र दुइए गोटे अएलाह ,मधुकान्त बैदजी आ सुधाकरक वयोवृद्ध पिता देवीकान्त ।

नागबाबा सामान्यतः शांत रहैत छलाह । मुदा कहि नहि ओहि दिन बैसारमे ओ एकाएक बहुत उग्र भए गेलाह । भेलैक ई जे बैसार शुरु होइतहि सुधाकर सदल-बल पहुँचि गेल । ओकर लठैतसभ चारूकातसँ मंदिर परिसरकेँ घेरि लेलक । ओना लठैतसभ तँ सुधाकरक संगे रहिते छलनि मुदा ओहि दिन किछु बेसिए गोटे अनने रहथि ।

"सभगोटे कान खोलि कए सुनि लिअ । आइ नओ-छओ भइए कए रहत । रोज-रोजक ई झंझटिसँ मुक्ति जरूरी अछि। अन्यायोक एकटा सीमा होइत अछि । हमर पूर्वजक देल घराड़ीकेँ ई सभ पाठशाला बनाबए हेतु अमादा छथि। ई कतक न्याय थिक ।”

"हमहूँ एही गामक छी । एहिठाम पाठशाल कोनो आजुक नहि अछि । हमसभ नेने रही तखनो एतए पाठशाला छल आ हमरसभक बाबा जखन नेना छलाह तखनो छल । अहाँक घराड़ी ई कोना भए गेल?"- नागबाबा बजलाह ।”

"तोहर बुद्धि सठिआ गेलह अछि । जमीन-जायदादक निर्णय कागजसँ होइत अछि, चिचिएलासँ नहि। ई जमीन बाबा हमरासभक नामे लिखि गेल छथि । एहिपर ककरो कोनो अधिकार

नहि अछि ।"-से कहि ओ अपन जेबीसँ एकटा कागज निकालि कहैत छथि-

"जकरा देखबाक होने से देखथु । ई पाठशालाक जमीनक रजिष्ट्रीक कागज अछि । तथापि यदि केओ झञ्झटि करबापर अड़ल होथि तँ तकरो इलाज हम तैयार रखने छी ।" -सुधाकर ई बजले छलाह कि लठैतसभ लाठी भाँजए लागल ।

"एहन अन्याय नहि करह । जयन्त सन विद्वान एतए पाठशाला चलबए चाहैत छथि । ओ विद्वान छथि । समाजक उपकार कए सकैत छथि । हुनकर आग्रह मानबाक चाही ।"-सुधाकरक पिता देवीकान्त बजलाह ।

"एह! विद्वान छथि । हमरा सभटा पता अछि । जानकीधाममे शीलाक संगे... ।" -ओ एतबे बाजल होएताह कि बैदजी चिकरलाह-

"खबरदार! पाजी नहितन । शीला... ।" किछु आओर बजितथि ताहिसँ पहिनहि हुनकर अबाज अवरुद्ध भए गेल । ओ धराम दए खसलाह । चारूकातसँ लोकसभ हुनका घेरि लेलक । लठैतसभ कात भए गेल ।

"बैदजी नहि रहलाह।"-गोविंद बाजल । बैदजीकेँ हृदयाघात भए गेलनि । चारूकात हाहाकार मचि गेल । परिस्थिति हाथसँ बाहर होइत देखि सुधाकर लठैतक संगे भागल ।

३२

गाममे भेल बैसार आ ओहि कारणसँ शीलाक पिता बैदजीक आकस्मिक निधनक समाचार जयन्त धरि पहुँचल । समाचार सुनितहि हुनका ठकबिदोर लागि गेलनि।

"आब की होएत? शीलाकेँ ई दुखद समाचार केना देल जाएत? "-जयन्त नागबाबाक चेलाक संगे बैसल बतिआ रहल छलाह। ओएह गामसँ समाद लए कए आएल छलाह।

"नागबाबा कतए छथि?"

"ओ अखन गामेमे छथि ।”

“गामक की हाल छैक?"

“गाममे बहुत तनाव अछि । उतरबारिटोलक लोकसभकेँ नागबाबा रोकि देलखिन नहि तँ ओहीदिन बहुत किछु भए गेल रहैत । "

"एहनमे हमरा लोकनिक ओहिठाम गेनाइ संभव होएत?"

"मुदा नहिओ गेनाइ तँ समाधान नहि अछि ।"

"तखन की कएल जाए?"

"हमरा हिसाबे तँ कालीकान्तकेँ सभबात कहल जाए । ओएह किछु समाधान कए सकैत छथि ।"

"बात तँ सही कहि रहल छी । मुदा कालीकान्तकेँ ई सभ कहबामे हमरा बहुत संकोच भए रहल अछि ।"

"अहाँ अपने किएक कहबनि । आचार्यजीकेँ पठा देल जाए । ओ सम्हारि सकैत छथि।"

"सही कहलहुँ । मुदा शीलाकेँ कोना ई समाचार देल जाएत? ओ तँ पहिनेसँ बहुत परेसान छथि ।"

"मुदा हुनका जानकारी देनाइ तँ अनिवार्य अछि । गाममे हुनकर पिताक लास हुनकर प्रतीक्षा कए रहल अछि।"- से कहि नागबाबाक चेला अपन आश्रम चलि गेल ।

जयन्त आचार्यजीसँ भेंट करबाक हेतु बिदा भेलाह । आचार्यजी आश्रमक गेटपर भेंट भए गेलखिन ।

“की बात छैक? अहाँ बहुत परेसान लागि रहल छी?"

जयन्त आचार्यजीकेँ सभबात कहलखिन ।

"हमरा लोकनिकेँ कालीकान्त लग चलक चाही । हुनका सभ बात कहबनि । ओएह रस्ता निकालताह।"

"ठीक छैक । मुदा शीलाकेँ कोना सूचित कएल जाएत?"

"कालीकान्त लग चलू ने । सभ भए जेतैक ।"

जयन्त आचार्यजीक संगे कालीकान्तक ओहिठाम बिदा भेलाह ।

३३

आचार्यजीक संगे जयन्त कालीकान्त लग पहुँचलाह । कालीकान्त अपन ओसारापर बैसल चाह पीबि रहल छलाह । गौरी सेहो ओहीठाम बैसल छलीह । भोरुका अखबार आबि गेल रहैक। ओहि अखबारक मुख्यपृष्ठपर लखनपुरमे भेल कांडक समाचार छपल छल । कालीकान्त ई समाचार पढ़िए रहल छलाह कि आचार्यजीक संगे जयन्तकेँ देखलकिन ।

"बहुत सही समयपर आबि गेलहुँ । "

"की बात भेलैक?"

"अखबारमे जयन्तक गामक घटनासभक समाचार छपल छैक। सएह पढ़िकए चिंतामे पड़ि गेल छी ।"
"ओही विषयमे अपनेसँ चर्चा करए आएल रही । सुनबामे आएल जे शीलाक पिताक देहावसान भए गेलनि आ गाममे लोकसभ शीलाक प्रतीक्षा कए रहल छथि ।"
"ओ तँ ज्योतिषीजीक संगे भोरे निकलि गेलीह । सुधाकरक मारफत हुनका समाचार भेटि गेल रहनि ।"
"जयन्त सेहो जाए चाहैत छथि ।"
" ओहिठामक माहौल तँ बहुत खराब छैक । कहीं किछु अनिष्ट ने भए जाए?"
" जयन्तक गेनाइ जरूरी छनि । शीलाक परिवारसँ हिनका लोकनिक बहुत घनिष्टता रहलनि अछि ।"
ई सभ गप्प-सप्प भइए रहल छल कि गौरी आ चंद्रिका सेहो आबि गेलीह ।
चंद्रिका अड़ि गेलीह जे ओहो जयन्तक संगे जेतीह । कालीकान्तकेँ बुझेबे नहि करनि जे हुनका कोना मनाओल जाए? कारण एहि माहौलमे हुनका लखनपुर गेनाइ कोनो तरहे उचित नहि बुझाइनि । जखन चंद्रिका नहिए मानलखिन तँ तय भेल जे सभगोटे संगे जेताह। मुदा जयन्त मना कए देलखिन ।
" अहाँ अखन किछु दिन रुकि जाउ । श्राद्ध होमए दिऔक । तकरबाद आबि जाएब ।"
"जयन्तक बात सही बुझाइत अछि । हमरा लोकनिक अखन ओहिठाम गेलासँ परेसानी बढ़ि सकैत अछि।"-कालीकान्त बजलाह ।

दोसरदिन अहल भोरे जयन्त आचार्यजीक संगे लखनपुर बिदा भेलाह । रस्ताभरि हुनकर मोन भकुआएल रहनि ।

"जयन्त एतेक किएक सोचैत छी? अहाँ तँ विद्वान छी । जीवन-मरण तँ चलिते रहैत अछि । एकरा स्वीकार केनहि कुशल थिक।"-आचार्य बजलाह ।

"सबाल जीवन-मृत्युक नहि अछि । जाहि तरहें हिनकर मृत्यु भेलनि से बहुत दुखदायी अछि । एकटा लफङ्गा सभकेँ परेसान केने अछि आ सभ मुँह ताकि रहल अछि ।"

"सभ चीजक समय होइत छैक । ओकरो जबाब भेटतैक आ भेटबे करतैक ।"

"से तँ ठीक अछि । मुदा हमरो लोकनिक किछु कर्तव्य बनैत अछि कि नहि? की हमसभ मात्र नियतिकेँ दोष दए समय काटैत रहि जाएब । समस्याक जड़ि ओ पाठशालक जमीन थिक जाहिपर जबरदस्ती सुधाकर कब्जा कए लेने अछि । ओही विषयपर चर्चा करबाक हेतु बैसार भेल छल । मुदा की सँ की भए गेल ।"

"आब तँ आगूएक सोचबामे फएदा अछि । कोनो समाधान तखने भए सकैत अछि ।"

"तकर माने जे सुधाकर जकरा चाहए मारि दैक, परेसान करैत रहैक आ हमसभ भाग्यक पलटी लेबाक प्रतीक्षा करैत रही ।"

"फिलहाल श्राद्ध होमए दिऔक । तकरबाद कालीकान्त सेहो अएबे करताह । हुनका सामनेमे विमर्श कएल जाएत। सुधाकर कतबो बलगर होथि, मुदा कालीकान्तक आगू ओकर एकटा नहि चलतैक। जखन एतेक दिन धैर्य रखबे केलहुँ तँ थोड़ेक दिन आओर सही । पाठशालाक समाधान सेहो हेबे करतैक। "

दुनूगोटे गप्प-सप्प करैत लखनपुरक सीमामे प्रवेश कए रहल छलाह । धारक कातमे बैदजीक चिताक आगि मिझा गेल छल । शीलाक लखनपुर पहुँचएमे विलंब भेलनि । लोकसभ गाममे लासकेँ बेसी काल रखनाइ उचित नहि बुझलक । बैदजीक संस्कार शीलाक गाम पहुँचबासँ पहिनहि गौंवासभ कए देलखिन। ज्योतिषीजी शीलाकेँ लखनपुर पहुँचा कए चोट्टे अपन गाम चलि गेलाह । ई समाचार हुनका धारक कातेमे टुनटुन देलखिन । टुनटुन संगे ओ सभ बैदजीक दरबाजापर पहुँचलाह। ओहिठामक दृश्य बहुत दुखद छल। ओसारापर एकसरि बैसलि शीला कनैत-कनैत बेहाल छलीह । जेना-तेना बैदजीक श्राद्ध संपन्न भेल ।

सुधाकर तँ ओहि दिनक घटनाक बाद जे निपत्ता भेलाह से घुरि नहि अएलाह । थानासँ पुलिस हुनकर पता लगबैत कैक दिन आएल । मुदा सुधाकरक किछु पता नहि चललैक । संभवतः ओहोसभ खानापुरिए कए रहल छल। गाममे सभकेँ एहि बातसँ आश्चर्य लगैक जे शीलाक घरबला ससुरक श्राद्धोमे नहि अएलाह। लखनपुरसँ अपन गाम वापस होइत काल ज्यतिषीजीकेँ की भेलनि की नहि तकर किछु पता नहि चलि सकल। मुदा ओ महिपुर नहि पहुँचि सकलाह। रस्तेमे रहि गेलाह । लोकसभ बाजए जे लखनपुरक चओरमे हुनका जिन गछारि लेलकनि।

गोविंद जयन्तसँ भेंट करए आएल रहथिन । संगमे माधव आ उतरबारिटोलक किछु युवकसभ रहथि। आचार्यजी सेहो ओतहि छलाह । नागबाबा सेहो रहथि । सभकेँ एकठाम बैसल देखि शीला सेहो ओतहि आबि गेलीह।

" यद्यपि बैदजीक मृत्यु आकस्मिक भेल, मुदा तकर पाछू की छल? एही अत्याचारीक दुर्व्यवहारसँ ओ बहुत दुखी भए गेलाह आ हुनका

हृदयाघात भए गेलनि । पुलिसमे प्राथमिकी लिखाओल गेल । आइ कैक दिन भए गेल । केओ पकड़ल नहि गेल । पुलिस-थाना मात्र खानापुरी कए रहल अछि । कोनो ठोस कारबाइ नहि भए सकल ।”-गोविंद बजलाह ।
“शीला एकसरि छथि । सभसँ पहिने हिनकर सोचल जाए । तकरबादे आगू बढ़नाइ उचित होएत ।"- माधव बजलाह ।
" आब तँ जे हेबाक छलैक से भइए गेल । मुदा तकरा पकड़ि कए बैसल तँ नहि रहल जा सकैत अछि । अहाँसभ हमरा लेल चिंता नहि करू । हमर भविष्य तय भए चुकल अछि । हम आब कतहु नहि जाएब । ई हमरो गाम अछि आ हमरो किछु करबाक हक अछि । पाठशालाक काज आगू करू । हमहूँ ओहीमे जे संभव होएत योगदान करब ।”- -शीला बजलीह ।
" हमरा लोकनि आइ साँझमे मंदिरपर बैसार करब आ ओतहि आगूक रस्ता तय होएत ।"-गोविंद बजलाह ।

३४

दोसर दिन बैसारसँ पहिने मंदिर लग झमटि कए कीर्तन भेल। ओना ओहिठाम कीर्तन होइते रहैत छल। मंगल दिन रहबाक कारणे विशेष आयोजन भेल रहैक । सौंसे उतरबारिटोलक जबान,बूढ़,नेनासभ एकठ्ठा रहए। कीर्तन समाप्त भेलाक बाद प्रसाद वितरण भेल । लोक तकरबाद चलि जाइत । मुदा कीर्तन शुरु होमएसँ पहिने गोविंद कहि देने रहैक जे कीर्तनक बाद बैसार हेतैक आ सभगोटे ओहिमे सामिल होएत । लोकक अस्मितासँ जुड़ल बहुत रास बातसभ रहैक ।

आब ओ समय नहि रहि गेल रहैक जे लोक अनेरे सहैत रहतैक । देशमे लोकतंत्रक बिहाड़ि बहि रहल छैक । समाजमे तकर प्रभाव स्पष्ट देखा रहल छैक । गेलैक ओ समय जे गरीब-गुरबाकेँ खानदानी कर्जक एबजमे भरि जिनगी बेगार करए पड़ैत छलैक । आब तँ बोनिओ देलापर जन नहि भेटैत छैक । किएक भेटौक? सभक स्थिति सुधरलैक । सभक बाल-बच्चा देश-विदेश काजपर चलि गेलैक । दिल्ली,पंजाब आ कतए-कतए नहि पसरि गेलैक । किछुगोटे तँ देसक सीमानोकेँ तरपि गेल। अरब चलि गेल, किछुगोटे तँ पढ़ि लिखि कए अमेरिका,जर्मनी धरि अपन पैठ बना लेलक । ताहिठाम आब सुधाकर सन लोक लठैत बलें कतेक दिन टिकि सकैत अछि? ई बात उतरबारिटोलक लोकसभ नीकसँ बुझैक जे जँ ओ सभ लागि पड़तैक तँ सुधाकरकेँ कहए,केहनो बदमासकेँ ओ सभ लाइनपर आनि देतैक । मुदा ओहोसभ बेसी फसाद नहि करए चाहलक । सोचलक जे समयसँ सभ ठीक भए जेतैक, मुदा से कहाँ भेलैक? सुधाकरक मोन बढ़ैत गेलैक । जयन्त सन सरल ओ विद्वान व्यक्तिकेँ तबाह करए पर लागि गेल ।

कहबी छैक जे 'विद्वान सर्वत्र पूज्यते' । जयन्तमे ततेक विद्या छनि जे जखन जतए चाहथि अपन जगह बना सकैत छलाह। कालीकान्त हुनका अपना संगे रखबाक हेतु कतेको बेर कहि चुकल रहथि । मुदा मतृभूमिक सिनेह कही,मोह कही जे कही ओ एहि संकटसँ गुजरि रहल छथि । हुनका तँ दुपहर रातिमे लठैतसभ साफे कए देने रहैत । मुदा धन कही उतरबारिटोलक रखबारसभकेँ जे जानपर खेपि कए ओहन खराब मौसममे हुनका बचओलक ।

ई बात सभ लोकसभक मोनमे छलैहे,हाल-हालमे नव घटना सेहो भेलैक। शीलाक पिता बैदजीकेँ सभक सामनेमे बेज्जत

कएल गेलनि जकरा ओ नहि सकलाह आ ठामहि रहि गेलाह। शीला आब निठ्ठाह एसगरि भए गेलीह । यद्यपि ओ बिआहल अछि,ओकर पति जीवित छथि । पहिने एकटा बिआह केने छलाह,ओहो विधर्मीक संगे,तखन एकर जिनगी बरबाद करबाक कोन औचित्य छल? मुदा ओ सएह केलाह। शीला आब तय कए लेलक अछि जे गामेमे रहत आ जयन्तक काजमे सहयोग देत,समाजक सेवा करत जाहिसँ भविष्यमे ककरो संगे एहन घटना नहि होइक ।

बैसार प्रारंभ भेल।

नागबाबा,आचार्यजी,जयन्त,शीला,गोविंद,माधव मंचपर रहथि। आश्चर्यक बात रहैक जे दछिनबारिटोलक एक आदमी नहि आएल रहैक । बैसार शुरु होइतहि सुधाकर अपन लठैतक संगे दन-दन करैत हाजिर भए गेलाह । सभ अकचका गेल । ई कतएसँ आबि गेलाह?सुधाकरक पाछू-पाछू एक दर्जन सिपाही सेहो अएलैक । ओहिमेसँ सेसर सिपाही आगू बढ़ल आ नागबाबा दिस हथकड़ी बढ़बैत कहलकैक-

"अहाँकेँ गिरफ्तार कएल जाइत अछि ।"

केओ किछु बुझैत,किछु सबाल-जबाब करैत ताहिसँ पहिनहि हुनकर हाथमे हथकड़ी लागि चुकल छल। स्वयं ओहो छगुन्तामे छलाह । नागबाबाक ई हाल देखि उतरबारिटोलक युवकसभ छरपल । ओकरासभकेँ अंदाज लागि गेलैक जे एहिमे सुधाकरक कुचक्र अछि। तनाव बढ़ैत देखि पुलिसबला माइकपर घोषणा केलक-

"खबरदार! जँ केओ पुलिसक काजमे बाधा करब तँ जहल जाएब ।'

-से सभ बजैत पुलिस नागबाबाकेँ पुलिस जीपमे बैसा लेलक आ लेने चलि गेल । सुधाकर आ ओकर लठैतसभसेहो पाछू-पाछू चलि गेल । लोकसभ देखिते रहि गेल ।

एहि तरहें नागबाबापर पुलिसक आक्रमणसँ उतरबारिटोलक लोकसभ बहुत उत्तेजित रहथि । गोविंद आ माधव आगू फनलाह । हुनका पाछू-पाछू बीस-पचीसटा युवक फानल। ककरो हाथ मे लाठी ,ककरो हाथमे बरछी तँ ककरो हाथमे भाला छलैक । सभ सुधाकरकेँ पछोड़ करबाक हेतु छटपटा रहल छल । हालात काबूसँ बाहर होइत देखि जयन्त उठलाह आ माइकपर कहैत छथि-

"हम आइसँ आमरण अनसन प्रारंभ कए रहल छी । जाधरि नागबाबा बाइज्जत बरी नहि हेताह, जाधरि पाठशाला अपन पूर्वस्थानपर नहि बनि जाएत ताबे हम अन्न-जल ग्रहण नहि करब ।" जयन्तक एतेक बजितहि सभ सन्न भए गेल । युवकसभ थकमका गेलाह । सभ एक-दोसर दिस देखए लागल। ककरो किछु फुरेबे नहि करैक जे आब की कएल जाए ? सभकेँ एहि तरहें परेसान देखि आचार्यजी माइक धेलनि -

“मानलहुँ जे सुधाकर आ हुनकर समर्थक बहुत अत्याचार कए रहल छथि आ पुलिस-प्रशासनक लोक सेहो हुनके संगे ठाढ़ बुझाइत छथि, तथापि हमरा लोकनिकेँ धैर्य बनओने राखक चाही कारण हमसभ एतए ज्ञान वितरित करबाक सरंजाम स्थापित करए अएलहुँ अछि ने कि हिंसावादकेँ प्रश्रय देबाक हेतु । नागबाबाकेँ पुलिस पकड़ि कए लए गेलनि । मुदा ई सभ कतेक दिनधरि चलत? नहि चलि सकत , न्याय हेबे करतैक । अस्तु,हमर प्रार्थना अछि जे अहाँसभ कानून अपना हाथमे नहि ली । "

"एकतरफा सहनशीलताक लोक गलत अर्थ लगबैत अछि, आचार्यवर! ई तँ हमसभ सद्यः देखिए रहल छी । कहिआसँ जयन्त पाठशालाक हेतु प्रयत्नशील छथि । मुदा भेल की? हुनकर पैतृक हककेँ पचा लेबाक भरिसक प्रयत्न सुधाकर करैत रहलाह आ पाठशालाक जगहपर अपन व्यक्तिगत घर बना लेलाह आ हमसभ मूकदर्शक भेल छी । ऊपरसँ नागबाबाकेँ पुलिस पकड़ि लेलक ।"- गामक युवकसभ बाजल ।

"आचार्यजीक कहब अपना हिसाबे ठीके छनि । तैँ हम शांतिपूर्ण प्रयास कए रहल छी । हमर अनशन करबाक निर्णय अटल अछि। अहाँसभ कृपया शांत रहू आ शांतिपूर्ण आंदोलनमे सहयोग करू ।"- जयन्त बजलाह ।

आचार्यजीक आग्रह आ जयन्तक आमरण अनशनक घोषणाक बाद युवक लोकनि अपन-अपन हाथसँ हथिआर फेकि देलाह । गोविंद आ माधव किछु आओर युवकसभक संगे थाना बिदा भेलाह। नागबाबा थानामे नहि रहथि । हुनका पुलिस जिला मुख्यालय लेने चलि गेल कारण ओहिठाम रखबामे अशांतिक संभावना बुझेलैक । स्थानीय पुलिससभसँ पता लगलैक जे बीसो साल पूर्व एकटा हत्याक मामलामे नागबाबाकेँ पकड़ल गेलनि अछि।

भेल ई रहैक जे अपन युवावस्थामे नागबाबा समाजमे परिवर्तनक हेतु अग्रसर रहैत छलाह। ताहि हेतु गाम-गाम घुमि कए गरीब,असहाय लोकसभक संगठन बनओने छलाह । ओकरासभकेँ अपन अधिकार हेतु निरंतर जागरुक रहबाक हेतु प्रेरित करैत छलाह । समाजक समृद्ध लोकसभकेँ ई कतहु नीक लगैक? ओसभ हिनका खिलाफ षड़यंत्र केलक ।

नागबाबा एकदिन अहल भोरे अपन खेतमे कुसिआर काटए गेल रहथि । ओहिमे पहिनेसँ ककरो हत्या कए फेकि देल गेल छल । नागबाबा लास देखितहि चिकरए लगलाह । चारूकातसँ बदमाससभ मौकाक ताकमे छलहे,ओहिठाम जमा भए हिनके नाम लगा देलक । पुलिसमे हिनकर नाम लिखा गेल । बादमे जाँच-पड़तालमे हिनकर खिलाफ किछु सबूत नहि भेटलैक । पता नहि एतेक दिनक बाद कोना ओहि मामलाकेँ सुधाकर जगा देलक जाहि कारणसँ हुनका तंग कएल जा रहल अछि ।

उतरबारिटोलक हेतु तँ नागबाबा भगवाने छलाह । समस्त जीवन ओ हुनका लोकनि सामाजिक,आर्थिक विकासक हेतु प्रयत्नशील रहलाह । सन्यासी रहितहुँ ओ अपन गाम-घरसँ संपर्क बनओने रहलथि । धनकेँ नागबाबा जे जयन्तक जान बाँचल आ ओ शारदाकुंज पहुँचि एतेक शिक्षा ग्रहण केलथि । सुधाकर एहूबातसँ हुनकासँ तमसाएल रहैत छल । "ने नागबाबा रहैत ने ई दुष्ट जीबैत ।"-करवनो काल सुधाकर ई बात बजबो करए।

सभक मोनमे आक्रोश भरल छल । ऊपरसँ जयन्तक अनशनक घोषणासँ संपूर्ण समाजमे जबरदस्त प्रतिक्रिया भेल । दोसर दिन अखबारसभक मुखपृष्ठमे ई समाचार छपल । चारूकातसँ फोन आबए लागल । पुलिसक करमान लागि गेल ।

सभ केँ प्रयास रहैक जे जयन्त अनशन तोड़ि देथि ,मुदा ओ किछु बजबे नहि करथि,मौन भए गेलथि। उतरबारिटोलक युवकसभ दिन-राति जयन्तक रक्षामे लागल रहैत छलाह । पुलिस तँ पहरा दैते छल। लोकक आबा-जाही लागले रहैत छल । जयन्तक अनशनक दस दिन भए गेल। हुनकर स्वस्थ्य गड़बड़ेबाक

भयसँ प्रशासनक अधिकारी लोकनि बहुत चिंतित रहथि । मुदा जयन्त अपन निर्णयपर अडिग छलाह।

“चाहे जान रहए की जाए । मुदा अपन निर्णयसँ हम नहि हटब।” ओ ई बात बेरि-बेरि स्पष्ट कए देलाह ।

जयन्तक अनशन आ एहिसँ जुड़ल घटनाक्रमसँ अखबारक पन्ना भरल रहैत छल । कालीकान्तकेँ सेहो पता लगलनि। ओ सपरिवार लखनपुर पहुँचि गेलाह । हुनका संगे सएसँ बेसी लठैतसभ सेहो आएल । कालीकान्त ई सुनने रहथि जे कैक पुस्त पहिने हुनकर पूर्वज लखनपुरेमे रहैत छलाह । हुनको पूर्वजसभ जयन्तक पूर्वज द्वारा स्थापित पाठशालामे पढ़ल रहथि । आइ सद्यः ओ लखनपुर गाममे छलाह । अपन पूर्वजक गाममे गजबक आनंद लागि रहल छलनि ,मुदा गामक माहौलसँ ओ ततबे दुखी छलाह । जयन्तक प्राण संकटमे देखि हुनकर समस्त परिवार आ मित्र मंडली परेसान छलाह । चंद्रिका कैकबेर जयन्तसँ गप करबाक प्रयस केलीह मुदा ओ मौनमे रहबाक कारणसँ किछु नहि बाजथि । चारू कात चिंता पसरि गेल छल । सरकारी महकमा सेहो परेसान छल । सभ समस्याक जड़ि सुधाकर बुझाइत छल । सभकेँ इच्छा रहैक जे हुनका पकड़ल जाए आ नओ-छओ कएल जाए। मुदा सुधाकर कहि नहि कतए निपत्ता भए गेल छल ।

जयन्तक अनशनक समाचार गाम-गाम पसरि गेल । पाठशालासँ पढ़ल विद्वानसभ समस्त प्रांतमे पसरल छलाह । काने-कान ई घटनाक समाचार सभठाम पसरि गेल । नित्यप्रति गाम-गामसँ लोकसभ लखनपुर मंदिरक लग-पास जमा होइत गेल । सभक मुँहमे एतबे बात रहैक-"आब की होएत? जयन्तक जान बँचि सकत की ओ अनशन करिते चलि जेताह?

३५

जयन्तक अनशनक समाचार नागबाबाकेँ जहलमे पता चललनि । से सुनि ओहो अनशन शुरु कए देलनि । जेलर बाबू सहित वरिष्ठ अधिकारीसभ हुनका बुझेबाक प्रयास केलक मुदा ओ एकहि बात कहथि-“जहिआ जयन्त अनशन तोड़ताह,तहिए हमहूँ अनशन तोड़ब । अहाँसभ हुनकासँ गप्प करू । हमरा किछु कहलासँ कोनो फएदा नहि होएत।”

जेलक अधिकारीसभक परेसानी बढ़ि गेलैक मुदा किछु करब ओकरासभक हाथमे नहि रहैक । सभकेँ एतबे छगुन्ता रहैक जे नान्हिटा आदमी सुधाकर एतेक शक्तिशाली केना भए गेल जे थानासँ लए कए ऊपरधरिसभ ओकरे बात सुनैत अछि? जँ से नहि होइत तँ स्थिति एतेक खराब नहि भेल रहैत । सुधाकरक सामर्थ्यक रहस्य बुझब ककरो वशमे नहि रहि गेल छलैक । एतेक दिनसँ लखनपुरमे घमाचौकरी भए रहल अछि मुदा सुधाकरक किछु नहि बिगड़ल । ओ लापता अछि,से अछि आ जखन मोन हेतैक लठैतसभक संगे लाठी भजैत हाजिर भए जाएत । बाहरे प्रशासन! लगैत अछि जे बहुत ऊपरधरि सुधाकरक घालमेल चलि रहल अछि। ई बात दछिनबारिटोलक लोकसभकेँ किछु-किछु अंदाज रहैक । तँ ओ सभ चुप रहैत छल । सुधाकरक इलाज तँ उतरबारिटोलक युवकसभ करएबला छल,ओ सभ हथिआर पकड़ि लेने छल मुदा जयन्त अड़ि गेलाह। ओ अनशनपर बैसि गेलाह । कहि नहि शांतिपूर्ण समाधानक हुनकर ई प्रयास कतए धरि पहुँचत?

ओमहर जहलमे नागबाबाक स्थिति नित्यप्रति खरापे होइत गेलनि । जेलरबाबू कतबो प्रयास केलक ओ अनशन करिते रहि

गेलाह । हुनका अस्पतालमे लए जएबाक विमर्श भए रहल छल । संभवतः दोसर दिन प्रातभेने ओ सभ ओहि प्रयासमे लागि जाथि। ऊपर अधिकारीसभक आदेशक प्रतीक्षा भए रहल छल। मुदा से समय नहि आएल । ओही राति अचानक हुनका हृदयाघात भेलनि। कनीकाल ओ घीं-घीं केलाह आ सभ खतम । रातुक बात रहैक,सभ सुति रहल छल । ककरो ध्यान नहि गेलैक । नागबाबा एहि दुनिआसँ बिदा भए गेलाह । भोर भेने जेलक सिपाही हुनका पड़ल देखि उठाबक प्रयास केलक ।

मुदा ओ रहितथि तखन ने ..। सौंसे जेलमे फसाद भए गेल । नागबाबा नहि रहलाह । अखबार,रेडिओ सभपर समाचार आबए लागल । कनीकेकालमे ई समाचार लखनपुरधरि सेहो पहुँचि गेल।

३६

उतरबारिटोलक मंदिरसँ सटले नागबाबाकेँ समाधि देल गेल । एहि अवसरपर सौंसे इलाकाक लोक उलटि गेल छल । मास दिनसँ अनशनपर बैसल जयन्त डाक्टरी परामर्शक अवहेलना करैत नागबाबाक अंतिम संस्कारमे उपस्थित छलाह । कालीकान्त आ हुनकर समस्त परिवार सेहो चुपचाप सभकिछु देखैत रहलाह । एहि घटनाक्रमसँ उतरबारिटोल युवकसभ बहुत उत्तेजित रहथि ।

"नागबाबाक संगे एतेक अन्याय भए गेल आ हमसभ एहिना सहि लेब ,ई भए नहि सकैत अछि ।"-ओ सभ एक-दोसरकेँ कहैत छलाह । पाठशालासँ जुड़ल नव-पुरान समस्त विद्वानसभ ओतए पहुँचि गेल रहथि । दछिनबारिटोलक पढ़ल-लिखल

अधिकांश लोक प्रवासी भए गेल रहथि । परदेशमे रहिकए अपन जीवन-यापन करैत छलाह । तथापि अपन गाम-घरक समाचारक टोह लैत रहैत छलाह । से सभ धराधर गाम पहुँचए लगलाह ।

"अपनसभक गाम एहन तँ नहि छल?"-एक दोसरकेँ ई प्रश्न करथि । मुदा उत्तर ककरो लग नहि छल । एतेक बात भए गेल, मुदा सुधाकरक कतहु पता नहि चलल । पुलिस खानापुरी करैत रहल । सभ बुझैक जे परदेशीसभ कतेक दिन रहतौक? दस दिन -पन्द्रह दिन ,जहाँ छुट्टी खतम हेतैक अपने घसकि जेतौक । तेँ ओकरासभकेँ कहबा-सुनबासँ किछु फरक नहि पड़एबला छलैक ।

नागबाबाक समाधि देलाक बाद श्रद्धांजलि देबाक हेतु सभसँ पहिने शीला मंचपर अएलीह । अत्यंत भावपूर्ण माहौलमे ओ एलान करैत छथि-

"नागबाबाक प्रति सही श्रद्धांजलि इएह होएत जे हमसभ गाममे पाठशालाक स्थापनाक संकल्पकेँ शीघ्र साकार करी । एहि हेतु हम अपन समस्त पैतृक संपत्तिकेँ दान करैत छी । संगहि आजीवन एहि संस्थाक हेतु काज करबाक संकल्प लैत छी ।"

शीलाक बात सुनि चारूकातसँ लोकसभ करतल ध्वनि करए लगलाह । तकरबाद कालीकान्त मंचपर अएलाह । ओ घोषणा करैत छथि-

"हमर पूर्वज एही गामक छथि । ओ सभ जीविकाक हेतु बाहर भेलाह आ ओतहि बसि गेलाह । मुदा हमरो एहि माटि-पानिक प्रति किछु दायित्व अछि । हम एहिठाम पाठशाला नहि अपितु एकटा अत्यंत आधुनिक विश्वविद्यालयक स्थापनाक प्रस्ताव रखैत छी । ओहि हेतु समस्त आर्थिक सहयोग हम करब । संगे ईहो

प्रस्ताव करैत छी जे ओकर नाम नागबाबा विश्वविद्यालय राखल जाए ।”

सर्वसम्मतिसँ ई प्रस्ताव मानि लेल गेल । लोकसभ करतल ध्वनिसँ एकर स्वागत केलनि । सभक सहमति देखि कालीकान्त बहुत प्रसन्न रहथि । बातकेँ आगू करैत ओ कहैत छथि-

"ई विश्वविद्यालय सभ तरहेँ सुविधा संपन्न होएत । एहिमे ज्ञान-विज्ञानक आधुनिक जानकारी भेटत । "

चारूकात हर्षक माहौल छल। नागबाबाक आकस्मिक निधनसँ दुखीलोकसभक मोनमे आब संतोषक भाव छलनि । मुदा जयन्त अखनो ओहिना गंभीर छलाह । लोक हुनका अनशन तोड़बाक आग्रह कए रहल छल मुदा ओ किछु नहि बाजि रहल छलाह ।

३७

जहिआसँ मंदिरपरक काण्ड भेल, सुधाकर गाम घुरि नहि आएल । एमहर-ओमहर नुकाइत रहल । यद्यपि पुलिस आ प्रशासनमे ओकर जबरदस्त पहुँचि छलैक,तथापि नागबाबाक आकस्मिक निधनक बाद केओ ओकरा देखए नहि चाहए । “एहि तरहेँ चारूदिस बौआइत ओ कतेक दिन रहि सकत? किछु समाधान तँ ओकरा करैक हेतैक ।”- ई बात ओ मोने-मोन सोचैत छल । एहि चिंतामे कैक राति ओ जगले रहि जाइत छल । निन्न हेबो करैक तँ भोरुकबामे । ओहिराति एहिना बहुत मोसकिलसँ ओ सुतल छल कि सपनाए लागल । ओकरा लगलैक जेना ओकर आत्मा देहसँ निकलि कए कहि रहल छैक-

"आब हम तोरा संगे नहि रहि सकैत छी । अन्याय सहबोक एकटा सीमा होइत छैक । पहिने तूँ जयन्तक पाठशालक जगह हरपलह, फेर हुनकर जमीन-जथा लुटि लेलहुन, शीलाक पिताक बैदजीक अकाल मृत्युक कारण सेहो तूँही छलह । बात ओतबे पर नहि रुकल । नागबाबा सन उपकारी समाजसेवीकेँ तूँ झूठ-मूठक मोकदमामे फँसा कए जहल पठा देलहुन आ हालात तेहन भेल जे ओतहि हुनकर प्राण चलि गेल । एतेक अन्याय सहि कए हम तोहर देहमे नहि रहि सकैत छी । तोरा अपन कुकृत्यक दंड भेटबेक चाही।"

"कम सँ कम तूँ तँ हमर संग दएह । तूँ हमर आत्मा छह । भरि जिनगी नीक-बेजाएमे हमरा संगे रहलह आ आब जखन सभसँ मोसकिलमे फँसि गेल छी तँ तूँ हमर संग छोड़ि रहल छह ।"

"हम कोन उम्मीदसँ तोहर संगे रहू । तोरा केओ नीक बात कहतह से सुनबहक? नहि सुनबहक? दिन-राति लोकक क्षति करएमे लागल रहैत छह । एहनमे हम कोना रहि सकैत छी से तूँही कहह?"

"तूँ रुकि जाह । हमरा जे कहबह सएह करब ।"

"सही बजैत छह?"

"एकदम सही, जे तूँ कहबह सएह करब मुदा तूँ रुकि जाह।"

"तूँ तुरंत जयन्त लग जाह आ हुनकर जे जमीन-जायदाद लेने छहुन से वापस कए दहुन । पाठशालाक निर्माणमे सहयोग करहुन । तखने तोरा शांति भेटि सकैत छह ।"

अपन आत्माक संग भेल एहि वार्तालापसँ ओकर निन्न एकाएक टुटि गेलैक । ताबे फरीछ भए गेल छल। सुधाकर चोट्टे

गाम बिदा भेल । एकसुरे चलैत रहल आ उतरबारिटोलक मंदिरपर जयन्त लग पहुँचि हुनकर पैरपर खसि पड़ल । जे केओ ई दृश्य देखलक से आश्चर्यमे पड़ि गेल ।

"हमरासँ बहुत अपराध भेल । हम तकर पश्चाताप करए चाहैत छी । पाठशालाक जगह हम वापस करैत छी । अहाँक जे मरौसीक जमीन-जायदाद अछि सेहो वापस करैत छी । आगू अहाँ जे कहब सएह करब । मुदा हमरा मोनसँ माफ कए दिअ जाहिसँ हम शांतिसँ जीबि सकी ।"-सुधाकर बाजल । सुधाकरकेँ ओहिठाम देखि लोकक करमान लागि गेल छल । जयन्त सुधाकरक बात सुनितहुँ मौन छलाह ।

सभक ध्यान जयन्तपर केन्द्रित छल । ओ अड़ल रहथि। किछु बजबो नहि करथि। हुनकर स्वास्थ्य सेहो खराब भेल जा रहल छलनि। चारूकातसँ लोकसभ जयन्तपर आग्रहपर-आग्रह करैत रहलाह जे ओ आब अनशन तोड़ि देथि । ओ जे कहथिन सएह हेतैक । लोकसभ बहुत आग्रह केलकनि जे ओ किछु तँ कहथि जाहिसँ समाधानक रस्ता ताकल जाए । लोकक बढ़ैत आग्रह देखि जयन्त हाथसँ लिखि कए एकटा पत्र गोविंदक हाथमे देलखिन-
"हम अहाँसभक सहयोग आ संघर्षसँ अभिभूत छी । हमरा आब दृढ़ विश्वास अछि जे हमरा लोकनिक संकल्प अवश्य सफल होएत। गाममे विश्वविद्यालयक निर्माण हेबे करत । मुदा हम चाहैत छी जे एहिमे सभ गोटे सामिल होअए, तखने सही मानेमे ई जन आंदोलनक सफलता कहल जा सकैत अछि ।"

जयन्त एहि इच्छाक समर्थनमे ओहिठाम उपस्थित हजारों लोक एकस्वरसँ बाजि उठलाह-

"हमसभ अहाँक इच्छाक अनुकूल सर्वस्व त्याग करबाक हेतु तैयार छी ।"

तकरबाद सामनेमे राखल बड़का सतरंजीपर गहना,रुपैआ,एवम् अन्य मूल्यवान बस्तुसभक वर्षा होमए लागल। जकरा लगमे जएह छलैक से निकालि-निकालि कए देबए लागल । देखिते-देखिते करोड़ों टाका जमा भए गेल । कतेको गोटे अपन जमीन-जायदाद दान देबाक हेतु आगू आबि गेलाह । एहन जन समर्थन देखि जयन्त दंग रहि गेलाह ।

"हम अपन अनशन तोड़ि रहल छी ।"

आचार्यजीक हाथे नेबो आ चीनीक सरबत पीबि कए जयन्त अपन अनशन समाप्त केलाह । चारूकात लोकसभ प्रसन्न छल । गीत-नाद भए रहल छल । दुनूटोलक लोकसभ कालीकान्तक सहयोगसँ विश्वविद्यालयक स्थापनामे लागि गेलाह । देखिते-देखिते ओहिठामक दृश्य बदलि गेल । लगबे नहि करए जे ओ ओएह गाम अछि जतए जयन्त सन विद्वान लोककेँ ठाढ़ होएब मोसकिल छल ।

गाममे सबतरि एकहि अबाज प्रतिध्वनित भए रहल छल-

“जय मातृभूमि”! जय जयन्त !

३८

लखनपुरमे घटल ई घटनासभ सभकेँ उद्वेलित कए देलक। जतए जे केओ प्रबासमे छलाह,गाम-घर छोड़ि आन-आनठाम रहि जीविकोपार्जन करैत छलाह, सभ गामक रुखि

लेलाह । सुधाकर कोनो असगर उदाहरण नहि रहथि । गाम-गाम एहन लोकसभ भरल छथि। कतेको प्रवासी लोकनिक हुनकर अपने लोक घर-घराड़ी,जमीन-जायदादसभपर बकोद्दृष्टि रखने रहैत छथि । इच्छा इएह रहैत छनि जे जे गेला से गेला ,आब गाम घुरि कए नहि आबथि । भने बाहर छथि । एहि बातक कनिको मात्सर्य नहि जे ओहो एही माटि-पानिक छथि । मिथिलाक संस्कार ओ संस्कृतिसँ ओकरो संतानक जुड़ाव बनल रहैक,तकर कोनो चेष्टा नहि । जखन जड़िए खतम भए जएतैक,बाप-पितामहक ओकर संपत्तिमे हिस्सा हरपि जएबाक हेतु अपने लोक लागल रहतैक, तखन ओ कथी लए कए ठाढ़ रहत । गाममे ककरा लग जाएत,कतए रहत?

परिणाम भेल जे प्रवासी लोकनिक गाम आबाजाही क्रमशः समाप्त जकाँ भए गेल । धिआ-पुताकेँ तँ गाममे केओ चिन्हबो नहि करैत छैक । ककरा लग बैसत,ककरा संगे खेलाएत। सही मानेमे आब गाम ओकरासभक हेतु परदेश भए गेल छैक । गाम गेलाक बाद मोन उबिआए लगैत छैक,होइत छैक जे कखन भागी । आखिर एना भेलैक किएक ? किछु लोहोक दोष,किछु लोहारोक । जाबे लोक नौकरी करैत रहल,ताबे ओहीमे लागल रहल। मुदा समय तँ बैसल नहि रहत । समय चक्र आगू बढ़ल। मानवीय संबंध शिथिल होइत गेलैक । एहन परिस्थिति गाम-गाम पसरि गेल।

लखनपुरोक सएह हाल- चाल । मुदा ई घटनाक्रसँ सभक मोनमे जबरदस्त आघात भेलैक । प्रवासी सभ जतए जे रहए सभ अपन-अपन गाम आएल । पाठशालाक लड़ाइ जयन्तक व्यक्तिगत नहि रहि गेल । ई समाजक अस्मितासँ जुड़ि गेल।

सभसँ कमाल केलाह राजीव । हुनकर पूर्वज लखनपुर उतरबारिटोलक छथि । हुनकर बाबा नेनेमे गाममे गरीबीसँ तंग भए भागि गेलखिन । तकरबाद कतए गेलाह,की केलाह ककरो किछु पता नहि चललैक। तकरबाद हुनकर पिता दिल्लीमे भरि जिनगी काज केलखिन आ ओतहि घर बनाए बसि गेलखिन । ओतहि राजीव पढ़ि-लिखि कलक्टर भए गेलाह । गामक बारेमे सुनबे करथि, कहिओ गेल नहि रहथि,किछु देखने नहि रहथि । तथापि अपन माटि-पानिक सिनेह तँ रहबे करनि । संयोग एहन जे हुनकर पोस्टींग लखनपुरक जिला मुख्यालयमे भए गेलनि ।

राजीवकेँ सुधाकरक खिस्सा नीकसँ बूझल रहनि । अखन धरि ओ जेना-तेना बँचैत रहल छल । पुलिस आ सरकारी महकमामे अपने जोगार बैसा कए गामक लोकसभकेँ परेसान केने रहैत छल। मुदा कहबी छैक जे कर्मक फल भोगहि पड़ैत छैक । सएह भेलैक। राजीव एसपीसँ गप्प कए सुधाकरक फाइलकेँ निकलबओलथि। ओहिमे लिखल रहैक" सुधाकर नामक आदमी कहि नहि कतए चलि गेल अछि, बहुत प्रयासक बादो ओकरा नहि ताकल जा सकल। अस्तु,एहि मामलाकेँ फिलहाल बंद राखल जाए। जखन ओ भेटताह तँ आगूक कारवाइ कएल जाएत ।" राजीवकेँ एसपी से बात कहलखिन ।

"ओ तँ अखनो गामेमे अछि । पुलिसकेँ नहि भेटबाक सबाले नहि छैक । जरूर केओ ओकरा बँचा रहल अछि ।"

"अहाँक अनुमान सही अछि श्रीमान्! -एसपी साहेब बजलाह।

"के थिकाह ओ व्यक्ति जे एहन दुष्ट व्यक्तिकेँ बचा रहल छथि?"

"अपने इलाकाक मंत्रीसँ सुधाकरक बहुत घालमेल छैक । सुनैत छी ओएह एकर मामलामे पुलिसकेँ दबाब दैत छथि ।"

"आब अहाँसभ ककरो नहि सुनू । जे उचित छैक से हेबाक चाही ।"
"सही कहलिऐक श्रीमान! सएह हेतैक ।"

तकरबाद तँ एसपी साहेब ओहि मामिलाकेँ अपना हाथमे लए लेलथि । तीन मास नित्यप्रति ओहि मामिलाक सुनबाइ कोर्टमे भेलैक । जज साहेब सेहो छगुन्तामे रहथि जे आखिर एहन अपराध केलाक बादो पुलिस किएक एकरा बँचओने छल । मामिलामे फैसला दैत जज साहेब कहलाह-

" सुधाकरक अपराध बहुत पैघ अछि । ओ एकटा एकदम निर्दोष व्यक्तिकेँ सभतरहें तंग करैत रहलाह । हुनकर जान बँचनाइ मोसकिल भए गेल । अफसोचक बात अछि जे एहनो मामिलाकेँ पुलिस आ नेताक घालमेलसँ दबओल जा रहल छल । एहि मामिलामे सुधाकरक खिलाफ पर्याप्त सबूत अछि । न्यायक मांग अछि जे हुनका कठोर दंड देल जाए जाहिसँ काल्हि भेने फेर केओ एहन करबाक हेतु सोचबो नहि करए । अस्तु, सुधाकरकेँ दस सालक सश्रम कारावासक दंड देल जाइत अछि। संगहि ईहो आदेश देल जाइत अछि जे दोषी पुलिससभक खिलाफ विभगीय कारवाइ केल जाए ।"

ओहि दिन सौंसे लखनपुरमे एहि बातक चर्चा होइत रहल । सभ एतबे कहए जे सुधाकरकेँ अपन करनीक फल भेटलैक । साँझमे उतरबारिटोलक लोकसभ सबामोन लड्डु मंदिरमे प्रसाद चढ़ओलक । सौमसे गाम लड्डु बाँटल गेल । मुदा जयन्त दुखी रहथि। ओ तँ अपनाभरि सुधाकरकेँ माफ कए देने रहथि । मुदा कानून अपन काज केलक । गाममे एहि बातसँ लोक प्रसन्न छल ।

३९

जयन्तकेँ अपन गाममे नागबाबा विश्वविद्यालयक स्थापनाक बादो मोनमे चैन नहि रहनि । "जा धरि एहि इलाकाक एक-एक व्यक्ति सुशिक्षित आ सभ तरहें संपन्न नहि भए जाएत ताबे विश्राम करबाक कोन औचित्य अछि?"-ओ मोने-मोन सोचथि। सोचबे नहि करथि अपितु ताहि उद्देश्यक प्राप्ति हेतु ओ संपूर्ण शक्ति सँ लागि गेलाह। एहिबातक ओ पूरा प्रयास केलाह जे-जे कष्ट हुनका भेलनि से आन ककरो नहि होइक । लखनपुर आ लग-पासक कोनो नेनाकेँ आर्थिक/ पारिवारिक कारणसँ परेसानी नहि होइक ।

गाम-गामसँ प्रतिभाशाली विद्यार्थी सभकेँ विश्वविद्यालयक छात्रावासमे रहबाक निःशुल्क व्यवस्था कएल गेल। जकरामे जे गुण छलैक तकर विकास हेतु पर्याप्त ओरिआओन भेल। ।हुनकर ई प्रयासक चमत्कारिक परिणाम भेल । देखिते-देखिते इलाकाक लोकक भविष्य बदलि गेल । युवकसभ सुशिक्षित भए परिवारक नक्सा बदलि देलनि । ओ इलाका विद्या आ धनसँ परिपूर्ण भए गेल । लखनपुरे नहि लग-पासक इलाकाभरिमे जयन्तक जयगान होमए लागल । एक आदमी कोना हजारों लोकक भाग्य बदलि सकैत अछि तकर ओ उदाहरण बनि गेलाह ।

जयन्त एतबे पर नहि रुकलाह । प्रवासी लोकनिक समस्यापर हुनकर ध्यान बहुत दिनसँ रहनि। तकर निराकरण हेतु ओ सही समयक प्रतीक्षा कए रहल छलाह । आब ओ समय आबि गेल छल । संयोगसँ राजीव सन उच्च सरकारी अधिकारी सेहो एहि काजमे रुचि लए रहल छलाह । लग-पासक लोकसभ तँ लागले

रहए। एहि विषयपर ओ राजीवसँ चर्चा केलनि । राजीव स्वयं सेहो भुक्तभोगी छलाह। कैक पुस्तसँ हुनकर पूर्वजसभ बाहरे छलाह। परिणाम गामक घराड़ीओक नामो-निसान नहि रहि गेल छलनि । एहने खिस्सा बहुत रास प्रवासी लोकनिक छलनि ।

जयन्त सोचल करथि जे आखिर एहि समस्यासभक जड़ि कतए अछि । हुनका नीकसँ बुझा गेलनि जे जीविकाक प्रयासमे लोकसभकेँ अपन गाम-घर छोड़ि देलासँ ई समस्या बढ़ल । जयन्त आओर प्रावासी लोकनिक संग एहि समस्यापर विचार-विमर्श केलनि । ओसभ आपसमे बैसार कए गाम लौटि जएबाक निर्णय केलाह।

"लखनपुरक लग-पासक जे केओ गाम वापस आबए चाहथि सभकेँ स्वागत छनि । हुनकासभकेँ आवासीय जमीन उपलब्ध कराओल जाएत ।"- जयन्त आश्वासन देलखिन ।

असलमे विश्वविद्यालयक निर्माणक बाद बहुत रास चंदा फाजिल रहि गेल छल । ओहि टाकाक उपयोगसँ चालीस बिघा आबासीय जमीन कीनल गेल । तकरा नीकसँ विकसित कए सुबिधा संपन्न कएल गेल । एहि तरहें निर्मित छोट-छोट भूखंड प्रवासी लोकनिकेँ उपलब्ध कराओल गेल । किछुए दिनमे ओहिठाम पूर्व विकसित समस्त आधुनिक सुख -सुबिधा संपन्न टोल बसि गेल जकर नाम जयन्तपुर राखल गेल ।

लखनपुर दछिनबारिटोलक बहुत रास प्रवासी लोकनि एहि सुविधाक लाभ उठबैत गाम वापस आबि गेलाह । हुनकासभकेँ अपन-अपन घर बनि गेलनि । ओसभ फेरसँ अपन पूर्वजक गाममे बसि गेलथि । दियाद-बादसभ हुनकर जमीन-जायदाद वापस कए देलखिन। गाममे स्थापित विश्वविद्यालयमे इलाकाक हजारों

लोककेँ छोटसँ पैघ सभ स्तरक जीविका भेटलैक । बहुत दिनक बाद लगलैक जे गाममे पुरान समय लौटि गेल अछि ।

४०

गाममे संपूर्ण आधुनिक सुविधासँ संपन्न विश्वविद्यालयक स्थापना भए गेलाक बाद जयन्तक प्रसन्नताक अंते नहि छल । संगहि प्रबासी लोकनिक जयन्तपुर टोल सेहो बसि गेल छल । कैक पुस्तसँ गाम-घरसँ बाहर रहि रहल लोकसभ अपन माटि-पानिसँ फेरसँ जुड़ि गेल रहथि ।

सभकिछु जखन भइए गेल तँ चंद्रिकाक बिआहे किएक लटकल रहैत? कालीकान्त बहुत दिनसँ एहि समयक प्रतीक्षा कए रहल छलाह । ई सभ काज भए गेलाक बाद कालीकान्त आचार्यजीक ओतए पहुँचलाह आ चंद्रिकाक जयन्तक संग बिआहक दिन तकबाक आग्रह केलथि । वसंतपंचमी लगीचे छल। ओहीदिन दुनूगोटेक बिआह होएब तय भेल ।

देखिते-देखिते वसंतपंचमीक दिन आबि गेल । चारूकात रसनचौकी बाजि रहल छल। लोकक प्रसन्नताक संगहि प्रकृति सेहो झुमि रहल छल । जयन्तक बिआह चंद्रिकाक संग धूम-धामसँ संपन्न भेल। नवविवाहित दंपत्ति भगवतीकेँ गोर लगबाक हेतु उच्चैठ बिदा भेलाह। हुनकर समस्त परिवार संगे-संगे गीतनाद करैत पाछू-पाछू चलि रहल छलाह । एहि आनंदमय अवसरपर लखनपुरक लोकसभक प्रसन्नताक अंत नहि छल ।

****

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)
https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)
https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/197004.
समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.
मातृभूमि(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198699.
स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.
शंखनाद(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/200903.
इएह थिक जीवन(संस्मरण)
https://pothi.com/pothi/node/202488.
ढहैत देबाल(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/203720.
पाथेय
https://pothi.com/pothi/node/205009.
हम आबि रहल छी(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/206093.
प्रलयक परात(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/207234.
बीति गेल समय(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/208632.
बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/209281.
राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/210181.
संयोग(कथा संग्रह)
https://rb.gy/edit6k.
नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास)
https://bit.ly/3The07Y
दीप जरैत रहए(उपन्यास)
https://t.ly/nU_E.
The Lost House (Collection of short stories)
https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)
https://pothi.com/pothi/node/196385
न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198163.
www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।